राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत

RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

पूर्व नाम : युवा सुघोष, वेबसाइट : www.jayvijay.co.in, www.yuvasughosh.com

वर्ष-१, अंक-७ लखनऊ अप्रैल २०१५ विक्रमी सं. २०७२ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-२४ रु. १०

राष्ट्रपति ने महामना मालवीय जी को भारत रत्न से सम्मानित किया

नई दिल्ली। प्रख्यात शिक्षाविद और स्वतंत्रता सेनानी महामना मदन मोहन मालवीय को मरणोपरांत देश के शीर्ष नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में मालवीय के परिजनों को भारत रत्न प्रदान करने के साथ ही बीजेपी नेता लालकृष्ण आडवाणी सहित कई लोगों को पद्म पुरस्कारों से भी सम्मानित किया।

राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में पद्म और भारत रत्न पुरस्कार प्रदान किए जाने के लिए आयोजित पारंपरिक समारोह में राष्ट्रपति ने मालवीय के परिजनों को भारत रत्न प्रदान किए जाने के अलावा दूसरे उच्चस्थ नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से बीजेपी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी और पंजाब के मुख्यमंत्री और शिरोमणि अकाली दल के नेता प्रकाश सिंह बादल को नवाजा। इसके अलावा विख्यात वकील हरीश साल्वे तथा पत्रकार स्वप्न दासगुप्त एवं रजत शर्मा को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि विगत २७ मार्च को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को राष्ट्रपति ने उनके निवास पर जाकर उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया था। ९० वर्षीय वाजपेयी की उम्र संबंधी अस्वस्थता के चलते मुखर्जी ने प्रोटोकोल से हट कर पूर्व प्रधानमंत्री के कृष्ण मेनन मार्ग स्थित निवास पर जाकर उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया। वाजपेयी और मालवीय को भारत रत्न से सम्मानित करने की घोषणा पिछले साल २४ दिसंबर को की गई थी।

इस समारोह में उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री राजनाथ सिंह, वित्त मंत्री अरुण जेटली और मंत्रिमंडल के अन्य कई सदस्य उपस्थित थे। ■

राष्ट्रपति ने अटल बिहारी वाजपेयी के घर जाकर दिया भारत रत्न

नई दिल्ली। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उनकी पूरी कैबिनट और कई दिग्गज राजनेता इस ऐतिहासिक मौके के गवाह बने। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वाजपेयी जी का पूरा जीवन ही राष्ट्र को समर्पित रहा है. उन्होंने कहा, 'अटलजी मुझ जैसे अनेक भारतवासियों के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं.'

केंद्रीय वित्तमंत्री अरुण जेटली ने वाजपेयी को भारत रत्न दिए जाने के बाद कहा, 'यह देश के लिए खुशी और गर्व का दिन है. वाजपेयी जी एक प्रखर सांसद, राष्ट्रभक्त, कवि, जननेता, राजनेता रहे हैं, जिन्हें राष्ट्रपति जी ने सम्मानित किया है.'

राष्ट्रपति ने प्रोटोकोल तोड़कर सौंपा अटल जी को भारत रत्न

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा प्रोटोकोल तोड़कर बीमार चल रहे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को उनके घर जाकर उन्हें 'भारत रत्न' प्रदान करने के कदम का हर ओर स्वागत किया जा रहा है. वरिष्ठ भाजपा नेता मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि प्रोटोकॉल को दरकिनार कर राष्ट्रपति द्वारा वाजपेयी के कृष्ण मेनन मार्ग स्थित उनके घर जाकर उन्हें पदक देना उत्तम कदम है, क्योंकि पूर्व प्रधानमंत्री अस्वस्थ हैं. ■

दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बनी भाजपा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने हाल की में दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी होने का दर्जा प्राप्त किया है। पार्टी का दावा है कि पिछले पांच महीनों में चले मेगा सदस्यता अभियान में पार्टी कुल सदस्यों की संख्या ८.८० करोड़ पहुंच गयी है। इससे पहले कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चायना को ८.६० करोड़ सदस्यों के साथ सबसे बड़ी पार्टी होने का दर्जा प्राप्त था।

१० करोड़ का आंकड़ा पाने का भरोसा

भाजपा के सदस्यता अभियान से जुड़ने के लिए फोन से मिस कॉल करने का अहम रास्ता अख्तियार किया गया था। मिस कॉल के ही दम पर पार्टी सदस्यों के आंकड़े को १० करोड़ पहुंचाने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही है। इस पर उठायी जा रही शंकाओं पर पार्टी का कहना है कि सभी नवीन सदस्यों की सदस्यता का सत्यापन किया जाएगा।

भाजपा का सदस्यता अभियान ३१ मार्च को खत्म हो रहा है ऐसे में पार्टी का दावा है कि महाराष्ट्र, यूपी सहित कई राज्यों में पार्टी के सदस्यों में जबरदस्त इजाफा होगा। यूपी में भाजपा के १.५ करोड़ सदस्य है। यही नहीं पार्टी को यह भी उम्मीद है कि गुजरात और मध्य प्रदेश में पार्टी के मौजूदा सदस्य ८० लाख के पार पहुंच चुके हैं। ■

'जय विजय' बधाई, शुभकामनाएं गुरमैल भाई

अनेक महान कृत्तिकारों की श्रेष्ठ विविध विधाओं से संपोषित तथा एक महान व्यक्तित्व व कृत्तिकार गुरमेल सिंहभमरा पर पूरे पृष्ठ से सुसज्जित जय विजय का मार्च एक अनमोल विशेषांक लगा. वास्तव में जिस भी रचना में लेखक अपना दिल निकालकर रख देता है, वह फूल की तरह अपने आप महक जाती है, उसके लिए कोई कोशिश नहीं करनी पड़ती. गुरमैल भाई खुद को साहित्यकार तो क्या, लेखक भी नहीं मानते, पर हम तो यही जानते हैं, कि इनके लिखे हर कमेंट में भी इनकी महान् साहित्यिकता की झलक मिलती है.

हम इनको गुरमैल भाई कहते हैं. इसका कारण यह है, कि इनसे हमारा सबसे प्रथम सम्पर्क नभाटा में अपना ब्लॉग 'रसलीला' पर, हमारे १२ मार्च, २०१४ के एक ब्लॉग 'आज का श्रवणकुमार' से कामेंट के जरिए हुआ. इसमें इंग्लिश में इन्होंने अपने नाम की जो वर्तनी लिखी थी, उसके आधार पर हमने इनको जो प्रति उत्तर दिया, उसमें इनको 'गुरमैल भाई' कहकर संबोधित किया. देखते-ही-देखते एक ही दिन में ये हमारे सभी पाठकों और भाई विजय सिंघल सहित तमाम ब्लॉगरों के चहेते बन गए. उसी ब्लॉग में कमेंटों के जरिए इन्होंने हम पर अपने महान व्यक्तित्व की जो छाप छोड़ी, वह अद्भुत है. हमें वहीं पर इनके एक अच्छा व सच्चा इंसान होने के साथ-साथ इनके एक महान् साहित्यकार होने की झलक भी मिल गई थी.

नतीजतन १७ मार्च को ही उन पर हमारा ब्लॉग 'गुरमैल-गौरव-गाथा' आ गया. उसके बाद तो इन पर ब्लॉगों की पूरी श्रृंखला ही आ गई, जो बहुत लोकप्रिय हो गई. वह श्रृंखला इस प्रकार है-

१. गुरमैल-गौरव-गाथा -१७ मार्च २०१४.
२. सपना साकार हुआ-३१ मार्च २०१४.
३. जन्मदिन का उपहार-०८ अप्रैल २०१४.
४. कहानी कुलवंत कौर की-१४ अप्रैल २०१४.
५. यादों का दरीचा-२८ अप्रैल २०१४.
६. हम तुम्हारे लिए... -२० अगस्त २०१४.
७. मेरी पहली कविता-०१ सितंबर २०१४.
८. स्वच्छता अभियान से...-०३ नवंबर २०१४.
९. गुरमैल-गरिमा-गाथा-२४ नवंबर २०१४.
१०. जन्मदिन तुम्हारा... -२६ दिसंबर २०१४.
११. गिनेस वर्ल्ड रिकॉर्ड... -१६ जनवरी २०१५

अंतिम ब्लॉग 'गिनेस वर्ल्ड रिकॉर्ड से ऊंची, आपकी ऊंचाई : गुरमैल भाई' प्रकाशित होते ही, हमने यों ही गूगल पर 'गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' लिखकर सर्च किया, तो सबसे ऊपर यही रचना आ रही थी. हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा. हमने तुरंत गुरमैल भाई को मेल लिखी. गूगल पर यह देखकर उनके हर्ष का अंदाजा लगाना आपको भी मुश्किल नहीं होगा.

हर वर्ष वैसाखी के पावन पर्व १३ अप्रैल के दिन वे अपना जन्मदिन मनाते हैं. उसी दिन इनकी कुलवंत कौर जी के साथ विवाह-समारोह की सालगिरह भी है. हमारी यह कोशिश रहेगी कि इस परम पावन अवसर पर उन पर ई-पुस्तिका "गिनेस वर्ल्ड रिकॉर्ड से ऊंची, आपकी ऊंचाई : गुरमैल भाई" प्रकाशित हो सके.

'जय विजय' को इस सद्प्रयत्न के लिए बधाई व भमरा परिवार को जन्मदिन व विवाह की सालगिरह की कोटि-कोटि शुभकामनाएं.

-- लीला तिवानी

(पृष्ठ २४ का शेष)

संगोष्ठी

ह्रदय नारायण दीक्षित ने कहा कि भगत सिंह जैसा चमकता नाम दुनिया के किसी भी देश के इतिहास में ढूंढ़ने पर नहीं मिलता। युवाओं को इतिहास बोध की जरूरत है। हमें अपनी सभ्यता संस्कृति पर गर्व हो तो हमारा जीवन दर्शन बदल सकता है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता लखनऊ जनसंचार पत्रकारिता संस्थान के निदेशक अशोक सिन्हा ने कहा कि भगत सिंह हमारी विरासत हैं। उन्होंने कहा कि भगत सिंह का कहना था कि अपने विचार क्रान्तिकारी बनाओ, उन पर चर्चा करो और जीवन में उन्हें अपनाओ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डा. कैलाश विश्वकर्मा ने कहा कि देशभक्ति याने क्या? आजादी से पहले अंग्रेजों को नुकसान पहुँचाना देशभक्ति थी। आज उसका स्वरूप बदला है। उन्होंने कहा कि भगत सिंह कहते थे कि तुम जो भी काम करते हो यदि वह देशहित में है तो तुम देशभक्त हो। ■

कविता

हर जगह कतार है,
फोन भी बोलता है आप कतार में हैं
कब खतम होगी, ये कतार पता नहीं
लोग बढ़ते जा रहे हैं, हर तरफ मारामारी है
सबको जल्दी है, कतार से बहार आने की
पर क्या करे कतार इतनी लम्बी है
और बढती जा रही है, चाहे वो डाक्टर के यहाँ हो
या हो रेलवे में
अब तो नौकरी में भी कतार है
लोग इंतजार कर रहे है
अपना नंबर कब आएगा पता नहीं
कतार कब होगी खतम
कहना मुश्किल है

-- गरिमा पाण्डेय

भजन

उजली चादर मैली कर ली, कैसे प्रभु-घर जायेगा।
राम-नाम का सुमिरन कर ले, भव-सागर तर जायेगा।।
कभी न की संतों की सेवा, कभी न दुखियों के दुख बांटे।
अपने हित के लिए बिछाये, नित औरों के सम्मुख कांटे।
अब तो मूरख जाग,नहीं तो, जीते जी मर जायेगा।।
झूठी है ये जग की माया, झूठी तेरी सुन्दर काया।
झूठे हैं सब रिश्ते-नाते, तू इसमें क्योंकर भरमाया।
महल-अंटारी,माल-खजाना, यहीं पे सब धर जायेगा।।
तेरी ये कंचन सी काया,
पल-पल, छिन-छिन छीजे रे।
राम-नाम का ओढ़ दुशाला,
क्यों दुविधा में भीजे रे।
राम-कृपा से 'भान' तुम्हारा,
हर संकट टर जायेगा।।

-- उदयभान पाण्डेय 'भान'

सुभाषित

निर्धनं पुरुषं वेश्या, प्रजाभग्नं नृपं त्यजेत्।
खगा वीतफलं वृक्षं, भुक्त्वा चाऽभ्यागतो गृहम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- धनहीन पुरुष को वेश्या त्याग देती है, राज्यहीन होने पर राजा को प्रजा त्याग देती है, वृक्ष पर फल समाप्त हो जाने पर पक्षी वृक्ष को त्याग देता है और भोजन करके अतिथि घर को त्याग देता है।

पद्यार्थ- धनहीन भये गणिका न गहे, झट त्याग धनी नर के संग जाती।
बिन राज प्रजा न गिने नृप को, जनता पद के गुण ही बस गाती।
फल के बिन वृक्ष उदास लगे, खग पांति न कूंजन को फिर आती।
घर को तज आगत राह गये, जब पेट भरे मिल जाय चपाती।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

एक छवि का टूटना

अन्ना हजारे के आन्दोलन से निकले अरविन्द केजरीवाल को हमारी तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया गया था जैसे वे युगपुरुष हों और सत्य हरिश्चन्द्र के एकमात्र कलयुगी अवतार हों। अन्ना हजारे की ईमानदार छवि वाली पृष्ठभूमि ने इस कपटजाल के निर्माण में पूरा सहयोग दिया था। धुंआधार प्रचार और कुछ पढ़े लिखे आधुनिक नौजवानों के जुनून से ऐसा माहौल बन गया कि बस अब केजरीवाल और उनकी आम आदमी पार्टी के आने भर की देर है। इतना होते ही भ्रष्टाचार और कामचोरी सहित देश की सभी समस्यायें जड़ से गायब हो जायेंगी।

लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व दिल्ली विधानसभा के चुनावों में आ.आ.पा. पहली बार उतरी और अपनी पारदर्शिता के दावे के बल पर उसने भाजपा को न केवल जोरदार टक्कर दी बल्कि उसे पूर्ण बहुमत पाने से भी रोक दिया। निस्संदेह कांग्रेस की शीला दीक्षित सरकार की अकर्मण्यता ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, लेकिन मुख्य कारण आआपा द्वारा किये गये चुनावी वायदे रहे, जिनमें आधी कीमत पर बिजली और मुफ्त में पानी प्रमुख थे। भाजपा द्वारा असमर्थता व्यक्त करने पर केजरीवाल ने कांग्रेस के बिना शर्त समर्थन से सरकार बनायी, लेकिन उनको पहले दिन से ही यह स्पष्ट पता चल गया कि अपने वायदे पूरे करना उनके लिए कतई सम्भव नहीं है। इसलिए वे मामूली बहाना बनाकर ४६ दिन में जिम्मेदारी छोड़कर भाग खड़े हुए। इसका दंड उनको दिल्ली की जनता ने लोकसभा चुनावों में दिया, जब उनके सभी प्रत्याशी भारी वोटों से पराजित हो गये।

कुछ समय पूर्व दिल्ली में जो फिर से विधानसभा चुनाव हुए उसमें दिल्ली की जनता ने एक बार फिर आआपा और केजरीवाल पर विश्वास कर लिया और उनको अकेले प्रचंड बहुमत से दिल्ली की गद्‌दी सौंप दी। इस बात को अधिक दिन नहीं हुए हैं, लेकिन यह पूरी तरह स्पष्ट हो चुका है कि वे अपने वायदे कभी पूरे नहीं कर पायेंगे और अगर-मगर करते हुए दिल्ली की जनता को उल्लू बनाते रहेंगे।

अगर इतना ही होता, तो गनीमत थी, लेकिन पिछले दिनों आआपा में जो भीतरी उखाड़-पछाड़ हुई है और जिस तरह की बयानबाजी तथा जोड़तोड़ के सबूत सामने आये हैं, उससे केजरीवाल और उनकी पार्टी की छवि रसातल में पहुंच गयी है। केजरीवाल द्वारा अपने पूर्व वरिष्ठ सहयोगियों योगेन्द्र यादव, प्रशान्त भूषण आदि के प्रति घोर अपशब्दों का प्रयोग करने से सभी लोग हतप्रभ रह गये हैं। इतना ही नहीं उन्होंने भाजपा को बदनाम करने के लिए विधायकों की खरीद-फरोख्त के जाली फोन खुद ही करवाये, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि ये भी धूर्त राजनेताओं की जमात में एक नया नाम हैं, उससे अधिक कुछ नहीं। बेनामी कम्पनियों से चन्दा लेने के पुष्ट आरोपों के कारण उनकी ईमानदारी और पारदर्शिता की कलई पहले ही खुल चुकी है। इन सब से जिन लोगों ने केजरीवाल पर विश्वास किया था, वे सभी सकते में हैं।

-- बृजनन्दन यादव

बोध कथा

धीरे चलो

नदी के तट पर एक भिक्षु ने वहाँ बैठे एक वृद्ध से पूछा - 'यहाँ से नगर कितनी दूर है ? सुना है, सूरज ढलते ही नगर का द्वार बंद हो जाता है। अब तो शाम होने ही वाली है। क्या मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा ?'

वृद्ध ने कहा- 'धीरे चलो तो पहुँच भी सकते हो।' भिक्षु यह सुनकर हैरत में पड़ गया। वह सोचने लगा कि यह वृद्ध पागल तो नहीं! यह धीरे चलने को क्यों कह रहा है। लोग कहते हैं कि जल्दी से जाओ, पर यह तो उल्टी ही बात कह रहा है।

भिक्षु तेजी से भागा। लेकिन रास्ता ऊबड़-खाबड़ और पथरीला था। थोड़ी दूर जाते ही भिक्षु लड़खड़ाकर गिर पड़ा। किसी तरह वह उठ तो गया लेकिन दर्द से परेशान था। उसे चलने में काफी दिक्कत हो रही थी। वह किसी तरह आगे बढ़ा लेकिन तब तक अंधेरा हो गया। उस समय वह नगर से थोड़ी ही दूर पर था। उसने देखा कि दरवाजा बंद हो रहा है। उसके ठीक पास से एक व्यक्ति गुजर रहा था। उसने भिक्षु को देखा तो हँसने लगा। भिक्षु ने नाराज होकर कहा- 'तुम हँस क्यों रहे हो?'

उस व्यक्ति ने कहा- 'आज आपकी जो हालत हुई है वह कभी मेरी भी हुई थी। आप भी उस बाबाजी की बात नहीं समझ पाए जो नदी के किनारे रहते हैं।'

भिक्षु की उत्सुकता बढ़ गई। उसने पूछा- 'साफ-साफ बताओ भाई।'

उस व्यक्ति ने कहा- 'जब बाबाजी कहते हैं कि धीरे चलो तो लोगों को अटपटा लगता है। असल में वह बताना चाहते हैं कि रास्ता गड़बड़ है। अगर सम्भलकर चलोगे तो पहुँच सकते हो। अगर आज आप आराम से आए होते तो शायद पहुँच गए होते क्योंकि आपको बहुत देर नहीं हुई थी। शुरू में ही तेज चलने से लोग अक्सर गिर जाते हैं फिर उनकी गति धीमी पड़ जाती है। जिंदगी में सिर्फ तेज भागना ही काफी नहीं है। सोच-समझकर संभलकर चलना ज्यादा काम आता है।'

आपके पत्र

सर मैं आपका बहुत आभारी हूँ, हमे इतनी अच्छी रचनाएँ और जानकारियाँ प्रेषित करते है। **- उपेन्द्र मौर्य**

बहुत अच्छी पत्रिका है। होली की शुभकामनायें। **- हरीश वर्णवाल**

यह उत्कृष्ट पत्रिका भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। **- डा. एस.के.वर्मा**

राष्ट्रीयता से ओतप्रोत एक अच्छी, स्वस्थ पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई। **- डा. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'**

पत्रिका का कलेवर पसंद आया। शुभकामनाएं स्वीकार करें। **- चंद्र लता यादव**

पत्रिका का नया अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद! **- सुमंत विद्वांस**

'जय विजय' मार्च २०१५ का अंक बहुत अच्छा लगा ! कई पाठकों की बहुत सी रचनाएं बहुत सुंदर और ज्ञान बर्धक लगीं। डा. विवेक आर्य की प्रस्तुति अच्छी लगी। परंतु डा. सुनील कुमार परीट की प्रस्तुति जिसमें वे बेटियों को मुखाग्नि का अधिकार देने की बात लिखते हैं वह गलत लगा क्योंकि सनातन धर्म में बेटी को मुखाग्नि देने का अधिकार कई वैदिक कारणों से नहीं है। **- चंद्रशेखर पंत**

पत्रिका पहले से भी अच्छी लगी। उम्मीद है कि 'जय विजय' बहुत ऊंची बुलंदिओं को छू लेगी। **- गुरमेल सिंह भमरा**

'जय विजय' मार्च २०१५ अंक बहुत ही सुन्दर है। आपके अथक प्रयास और अमूल्य श्रम को नमन। यदि बच्चों की रचनाओं के साथ रचना से सम्बंधित चित्र भी प्रकाशित करें तो पत्रिका और भी आकर्षक हो जाएगी। **- देश बंधु शाहजहाँपुरी**

आत्मकथा, बाल जगत, साहित्य, स्वास्थ्य व राजनीति युक्त एक शानदार-जानदार अंक सभी विधाओं को समेटे हुए। एक महान व्यक्तित्व गुरमेल भमरा पर पूरे पृष्ठ से सुसज्जित एक अनमोल के लिए हार्दिक बधाई। **- लीला तिवानी**

यह अंक भी हमेशा की तरह सुंदर बन पड़ा है। इसके लिए आपको बधाई। **- अरविंद कुमार साहू**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

अल्पसंख्यक के नाम पर आतंकवाद

डा. विवेक आर्य

विगत दिनों हमारे देश में कुछ घटनाएँ हुई हैं जिनमें यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा हैं कि भारत देश में ईसाई समाज आतंकित है, उसे प्रताड़ित किया जा रहा है, मोदी सरकार के सत्ता में आने के पश्चात ही ईसाईयों पर अत्याचार आरम्भ हुआ है। हम इन घटनाओं की समीक्षा कर यह जानने का प्रयास करेंगे कि सत्य क्या है।

१. दिल्ली के कुछ चर्चों में हुई चोरी एवं तोड़फोड़

दिल्ली के कुछ चर्चों में सर्दी की धुंध में तोड़फोड़ एवं चोरी की घटनाएँ हुई जिसके विरोध ने ईसाई समाज सड़कों पर उतर कर धरना प्रदर्शन किया एवं केंद्र सरकार को उसके लिए जिम्मेदार बताया। इस तथ्य को छुपाया गया कि इसी काल में दिल्ली के मंदिरों में २०६ और गुरुद्वारों में ३० चोरी की घटनाएँ हुई। एक मामले में दो युवकों की गिरफ्तारी हुई जिन्होंने शराब के नशे में शर्त लगाकर चर्च में तोड़फोड़ की थी। जबकि बाकी मामले अनसुलझे हैं। प्रश्न यह है कि मामूली चोरी की घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के रूप में क्यों दर्शाया जा रहा है और अगर चोरी ही प्रताड़ना करने की कसौटी है, तो हिन्दू मंदिरों में चोरी की कहीं अधिक घटनाएँ हुई हैं। इससे तो यह अर्थ निकलता है कि हिन्दुओं को ज्यादा प्रताड़ित किया गया हैं। स्पष्ट है कि यह केवल जनता की संवेदना को भुनाने की कवायद हैं जिससे समाज की यह धारणा बन जाये कि बहुसंख्यक हिन्दू समाज अल्पसंख्यक ईसाई समाज पर अत्याचार करता है।

२. संघ प्रमुख भागवत द्वारा टेरेसा पर प्रश्न करना

संघ प्रमुख मोहन भागवत का टेरेसा पर दिया गया बयान कि मदर टेरेसा द्वारा सेवा की आड़ में धर्मान्तरण करना सेवा के मूल उद्देश्य से भटकना है पर ईसाई समाज द्वारा प्रतिक्रिया तो स्वाभाविक रूप से होनी ही थी मगर तथाकथित सेक्युलर सोच वाले लोग भी संघ प्रमुख के बयान पर माफी मांगने की वकालत कर रहे हैं एवं इस बयान को मदर टेरेसा का अपमान बता रहे हैं। यह विरोध चोरी तो चोरी सीनाजोरी भी है। मानवता की सच्ची सेवा में प्रलोभन, लोभ, लालच, भय, दबाव से लेकर धर्मान्तरण का कोई स्थान नहीं है। विरोध से तो यही सिद्ध हुआ कि जो भी सेवा कार्य मिशनरियों द्वारा किये जा रहे हैं उनका मूल उद्देश्य ईसा मसीह की भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। ईसाई मिशनरीयों का पक्षपात इसी से समझ में आता है कि वे केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहते हैं जो ईसाई मत को ग्रहण कर लें। विडंबना यह है कि मीडिया ईसाइयों को पक्षपात रहित होकर सेवा करने का सन्देश देने के स्थान पर संघ प्रमुख की आलोचना अधिक कर रहा है। इस दोगले व्यवहार से समाज में यह भ्रान्ति पैदा होती हैं कि ईसाई समाज सेवा करता है और हिन्दू समाज उसकी आलोचना कर रहा है। अनेक हिंदुत्ववादी संगठन जैसे वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, दयानंद सेवा आश्रम, रामेष्ण मिशन आदि निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं फिर केवल ईसाई समाज का समर्थन सेवा कार्य के नाम पर करना बुद्धिजीवी वर्ग की निष्पक्षता पर प्रश्नचिन्ह लगाता है।

३. हिसार के गांव में निर्माणाधीन इमारत में तोड़फोड़

हिसार में कैमरी गांव में एक निर्माणाधीन ईमारत के निर्माण का जब ग्रामीणों ने विरोध किया तो गांव के लोगों पर उसे तोड़ने का आरोप लगाकर उनके खिलाफ पुलिस में अपराधिक मामला दर्ज करवा दिया गया जबकि स्थानीय पंचायत जो चुनी गई संवैधानिक संस्था है, द्वारा दिए गए प्रस्तावों को दरकिनार कर इस मामले को भी राजनैतिक रूप से तूल दिया जा रहा है। पंचायत का कहना है कि गांव के नौजवानों का नाम पुलिस थाने में दर्ज करवाकर उन्हें आतंकित किया जा रहा है। जिस दिन यह घटना हुई उस दिन पादरी सुभाष उस गांव में उपस्थित ही नहीं था फिर उसे कैसे मालूम की घटना में कौन शामिल था। न तो उस पूरे क्षेत्र में कोई ईसाई रहता हैं, न ही चर्च द्वारा खरीदी गई भूमि पर निर्माण आदि कार्य के लिए कोई पंचायत अथवा जिलाधिकारी से कोई स्वीकृति ली गई जो सरासर कानून का उल्लघंन है।

४. बंगाल में डकैतों द्वारा बुजुर्ग नन से बलात्कार

बंगाल में डकैतों द्वारा एक ईसाई संस्था में डाका डालते समय बुजुर्ग नन से बलात्कार की घटना को चोरी, डकैती एवं बलात्कार की घटना के रूप में मानने के स्थान पर उसे धार्मिक रंग देकर राजनैतिक लाभ लेने की कोशिश की जा रही है। इस मामले पर वैटिकन द्वारा बयान जारी किया जाना, संसद में विभिन्न पार्टियों के २५ के करीब ईसाई सांसदों का केंद्र सरकार पर दवाब बनाना, बिना अपराधी को पकड़े समस्त हिन्दू समाज को कोसना कहाँ तक उचित है। अपराध को अपराध ही कहे और दोषी को पकड़ कर दण्डित करे।

कुल मिलाकर यह सब एक सोची समझी साजिश हैं जिसका मुख्य उद्देश्य अल्पसंख्यक के नाम पर हिन्दू समाज को आतंकित करना हैं, ताकि ईसाई समाज अपनी मनमर्जी कर सम्पूर्ण भारत को ईसाई बनाने की अपनी रणनीति को पूरा कर सके। विडंबना यह है कि हिन्दू समाज ईसाईयों के इस कुचक्र से न केवल अनभिज्ञ हैं अपितु इस विषैले प्रचार से अपने मन में गलत धारणा बना लेता है। भ्रमित हिन्दू अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हुए ईसाईयों की सहायता करने लगता है। इस सुनियोजित षड़यंत्र को बौद्धिक आतंकवाद कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। ■

उन्नति का मार्ग

कृष्ण कान्त वैदिक

समस्त जीवधारियों में मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि हे पुरुष, यह जीवन उन्नति करने के लिए है, अवनति करने के लिए नहीं। परमेश्वर ने मनुष्य को दक्षता और कार्यकुशलता से परिपूर्ण किया है। ईश्वर यहां हमें पुरुष शब्द से संबोधित कर रहे हैं जिसका अर्थ है जो कार्य पूर्ण करके रहे वह 'पुरुष' कहलाता है। इस प्रकार मनुष्य का जीवन अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने की क्षमता रखने वाला है और उसके जीवन की सफलता उद्देश्यों की पूर्ति पर निर्भर करती है।

मानव जीवन का उद्देश्य धर्मपूर्वक कर्म करते हुए अर्थ या धन-सम्पत्ति कमाना और धर्मपूर्वक कामनाएं रखते हुए उनकी पूर्ति करना है। साथ ही धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए आत्मिक उन्नति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करना है। इसके लिए ईश्वर ने उसे बुद्धि, विवेक और दक्षता प्रदान करते हुए विशेष शारीरिक रूप प्रदान किया है। उसके शरीर में आठ चक्र और नव द्वारों की स्थिति तथा सबसे ऊपर मस्तिष्क रूपी राजा का नियंत्रण होने से वह समस्त कार्यों को तरीके से संचालित करता है।

पशुओं आदि अन्य प्राणियों में मस्तिष्क व चक्रों की स्थिति पृथ्वी के समान्तर होने से उनकी अधोगति रहती है। मनुष्य इसके विपरीत ऊर्ध्वगामी होता है। इससे विचारों की परिपक्वता और ज्ञान की उत्कृष्टता आसानी से प्राप्त कर प्रगति की ओर बढ़ता है।

मनुष्य योनि कर्म के साथ योग योनि है जबकि अन्य जीवों की केवल भोग योनि है, इनमें मस्तिष्क में कोई दक्षता न होने से भी उन्नति की कोई गुंजाइस नहीं रहती है। परमेश्वर ने मनुष्य को केवल उन्नति के लिए ही बनाया है और यदि हम इस अवसर का उचित लाभ न उठाकर फिर से अधोगति प्राप्त कर अन्य योनियों में जन्म लेते हैं तो उसके लिए हम स्वयं ही दोषी माने जायेंगे।

इसलिए हमें व्यक्तिगत रूप से शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति करनी चाहिए। सामाजिक रूप से सदाचार करते हुए सांस्कृतिक उन्नति करनी चाहिए। ईश्वर की यह अनुकम्पा है कि उसने हमें मनुष्य शरीर दिया है जिसमें हम बुद्धि, विवेक, दक्षता और भक्ति से न केवल भौतिक उन्नति कर सकते हैं, अपितु आध्यात्मिक रूप से भी उन्नति कर मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। ■

सत्यार्थ प्रकाश संसार का सर्वोत्तम व सर्वहितकारी ग्रन्थ

मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने विश्व का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा है। हमने इस तथा अन्य मतों के ग्रन्थों का भी अध्ययन किया है। हमारा अनुभव है कि सभी ग्रन्थों में पूर्ण या अधिकतम सृष्टि व मनुष्य जीवन विषयक सत्य व उसके अर्थ केवल वेद और सत्यार्थ प्रकाश में ही पाये जाते हैं। यद्यपि न्यूनाधिक सत्य सभी मतों के ग्रन्थों में है, परन्तु अन्य मतों की पुस्तकों में सत्य के साथ-साथ कुछ ऐसी बातें भी हैं जो विज्ञान के विरूद्ध, अज्ञान पर आधारित, अंधविश्वास व पक्षपातपूर्ण, सामाजिक असमानता से पूर्ण हैं। ईश्वर व जीवात्मा आदि के सत्य स्वरूप, सत्यज्ञान युक्त आचरण से जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक उपासना व जीवन के उद्देश्य का सही वर्णन वेद व सत्यार्थ प्रकाश से इतर ग्रन्थों में या तो अपूर्ण है या प्रायः नहीं है। वैदिक शास्त्रों का यह भी निष्कर्ष है कि मनुष्य का जन्म परमात्मा के द्वारा भोग व अपवर्ग के लिए हुआ है। भोग का अर्थ है कि हमने अपने पूर्व जन्मों में जो शुभ व अशुभ कर्म किये थे जिनका कि अभी भोग व फल मिलना शेष है, उनके भोग, नये शुभ कर्मों को करने तथा जन्म-मरण के दुःखों से मुक्ति के लिए जिसे अपवर्ग या मोक्ष कहते हैं, हमें यह मनुष्य जन्म ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश को लिखने का प्रयोजन स्वयं ही बताते हैं कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखी है जो सारे संसार का साहित्य पढ़ने पर भी उपलब्ध होना सम्भव नहीं है। वे लिखते हैं- 'मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) में ऐसी बात नहीं रक्खी है। और न किसी का मन दुखाना या किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, मनुष्य सत्यासत्य को जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।' महर्षि दयानन्द के इन विचारों से किसी को भी असहमति नहीं हो सकती।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को लोग प्रायः अपनी अज्ञान और स्वार्थ बुद्धि से देखते हैं और इसकी गहराई में गये बिना कह बैठते हैं कि इसमें दूसरे मतों का खण्डन किया गया है। यह आरोप पूर्णतया असत्य एवं स्वार्थपूर्ण है। महर्षि दयानन्द स्वयं लिखते हैं कि इस ग्रन्थ को बनाने में यह अभिप्राय रखा गया है कि जो-जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे-वे सब में अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो-जो मतमतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है। यहां वह कह रहे हैं कि सब मतों की सत्य बातें उन्हें स्वीकार्य हैं तथा मत-मतान्तरों की मिथ्या बातों का उन्होंने खण्डन किया है। हम सभी बन्धुओं से पूछना चाहते हैं कि क्या मिथ्या बातों का खण्डन नहीं होना चाहिये? यदि हां, तो फिर सत्यार्थ प्रकाश में अनुचित कुछ भी नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का विरोध करता है वह मिथ्याचारी अर्थात् मिथ्या बातों का समर्थक और सत्य बातों का विरोधी है। महर्षि आगे लिखते हैं कि सब मत-मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान, अविद्वान व सब साधारण मनुष्यों के सामने रक्खा है जिससे सब बातों को जानकर व उन सब का विचार होकर परस्पर प्रेमी व मित्र हो के एक सत्य मत में स्थित होवें।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश को १४ समुल्लासों में पूर्ण किया है। पहले १० समुल्लास सत्य व वैदिक मत की मान्यताओं पर प्रकाश डालते हुए उनका पोषण करते हैं जो कि प्रायः सभी अध्येताओं के लिए निर्विवाद रूप से स्वीकार्य हैं। अन्त के चार समुल्लासों में भारतीय व अन्यदेशीय मतों की मिथ्या व अज्ञानपूर्ण मान्यताओं की समालोचना, आलोचना या खण्डन किया गया है जिसका उद्देश्य लोगों को सत्यासत्य के बोध में सहायता करना है। अपने ग्रन्थ की भूमिका का समापन करते हुए वह लिखते हैं कि इन मतों के थोड़े-थोड़े ही दोष प्रकाशित किए हैं जिनको देखकर मनुष्य लोग सत्याऽसत्य मत का निर्णय कर सकें और सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने कराने में समर्थ होवें, क्योंकि एक मनुष्य जाति में बहका कर, विरूद्ध बुद्धि कराके, एक दूसरे को शत्रु बना, लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बहिः (विरुद्ध) है। इस वाक्य में 'एक मनुष्य जाति' का प्रयोग कर उन्होंने सारे विश्व के मनुष्यों को एक जाति का स्वीकार कर अपनी महानता का परिचय दिया है जबकि अन्य मतस्थ लोग संसार के लोगों को नाना प्रकार के धर्म व मत-मतान्तरों में विभाजित कर देखते हैं तथा अपने गुप्त प्रयोजनों के लिए लोभ, भय, प्रलोभन व रक्तपात तक किया करते हैं। महर्षि ने इसी क्रम में कहा है कि यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारेंगे, तथापि बुद्धिमान लोग यथायोग्य इस का अभिप्राय समझेंगे, इसलिये मैं अपने परिश्रम को सफल समझता और अपना अभिप्रायः सब सज्जनों के सामने धरता हूं। वह सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के पाठकों से निवेदनपूर्ण शब्दों में कहते हैं कि इस ग्रन्थ को देख-दिखला व पढ़कर मेरे श्रम को सफल करें। और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मुझ वा अन्य सभी महाशयों का मुख्य कर्तव्य काम है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखकर मानवता की सबसे अधिक व अपूर्व सेवा की है। आर्य समाज का एक नियम ही उन्होंने यह बनाया है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। एक अन्य नियम में वह कहते हैं कि सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये। हमारा मत है कि संसार के प्रत्येक मनुष्य को सत्यार्थ प्रकाश की सार्वभौमिक सत्य शिक्षाओं व मान्यताओं का अध्ययन कर अपनाना चाहिये जिससे भेदभाव की दीवारें गिरकर श्रेष्ठ विश्व का निर्माण हो सके। सत्यार्थ प्रकाश एक दीपक है जिसने मत-मतान्तरों के अविद्या व मिथ्या विश्वासों के अन्धकार को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ■

सामान्य ज्ञान

१. किस प्रधानमंत्री के कार्यकाल में भारत ने पोखरण में दूसरा परमाणु विस्फोट किया था?
२. हिंदी फिल्मों के कपूर घराने का प्रारम्भ किस व्यक्ति से माना जाता है?
३. तैरने की किस स्टाइल का नाम एक कीड़े पर है?
४. शरीर के जोड़ों को प्रभावित करने वाली बीमारी का क्या नाम है?
५. टोकियो के अलावा कौन सा अकेला एशियायी शहर है, जिसमें ओलिम्पिक और एशियाई दोनों प्रकार के खेल आयोजित किये जा चुके हैं?
६. महाभारत में शांतनु की दूसरी पत्नी का क्या नाम था, जो मछुआरे की कन्या थी?
७. किस राज्य में सबसे पहले पति और पत्नी मुख्यमंत्री बने हैं?
८. रामायण के अनुसार सीता को छुड़ाने के लिए रावण से भिड़ने वाले पक्षी का क्या नाम था?
९. क्रिकेट पिच की लम्बाई कितनी होती है?
१०. 'जन गण मन' मूलतः किस भाषा में लिखा गया था?

उत्तर

१. अटल बिहारी वाजपेयी; २. पृथ्वीराज कपूर; ३. बटरफ्लाई; ४. गठिया; ५. सियोल; ६. सत्यवती; ७. तमिलनाडु; ८. जटायु; ९. २२ गज; १०. बंगाली।

आज तुम्हारे जाने के बाद/अब ये घर
घर नहीं मकान सा लग रहा है/सिर्फ मकान सा
एक खालीपन/जो तुम भर कर चले गये हो खुद में
मुझे समेटे लिये जा रहा है/इस तन्हाई में
मैं तुम्हारे कितनी करीब हूँ
जितनी तुम्हारे पास होते हुए कभी नहीं थी
तुम सामने होते हो पास में/साथ में
तो बहुत से लोग तुम्हें/तुम्हारे वक्त को
तुम्हारे साथ को बाँट लेते हैं
पर तुम्हारी याद इस तन्हाई में
बाँटी नहीं जा सकती
बँट नहीं सकती
वह मेरी है. सिर्फ मेरी
और यही बात इस मकान को
घर जैसी ऊष्मा दे रही है...

-- अनिता अग्रवाल

(कविता संग्रह **'अन्तर्मन के स्पन्दन'** से साभार)

मन हैरान है/परेशान है/जीवन का अनवरत सफर
जीवन के झंझावात/अब मेरा बलिदान माँगते हैं
मन न आह कहता है/न वाह कहता है
कहीं कुछ है/जो मन में घुटता है
पल-पल मन में टूटता है/मन को क्रूरता से चीरता है !
ठहरने की बेताबी/कहने की बेकरारी
अपनाए न जाने की लाचारी/एक-एक कर
रास्ता बदलते हैं/हाथ की लकीर और माथे की लकीर
अपनी नाकामी पर/गलबहिया डाले सिसकते हैं !
आकाश और धरती/अब भावविहीन हैं
सागर और पर्वत चेतनाशून्य हैं
हम सब हारे हुए मुसाफिर/न एक दूसरे को ढाढ़स देते हैं
न किसी की राह के काँटे बीनते हैं
सब के पाँव के छाले
आपस में मूक संवाद करते हैं !
लम्हों के सफर पर निकले हम
वक्त को हाजिर नाजिर मानकर
अपने हर लम्हे को यहाँ दफन करते हैं
चलो अब अपना सफर शुरू करते हैं!

-- डा. जेन्नी शबनम

नित्य नई मैं विषय बनूंगी/लिखो काव्य मैं वेदना हूँ
सात सुरो में राग जिन्दगी/छेडो तान मैं वन्दना हूँ
सरल सुन्दर जीवन पथ पर/बढे चलो मैं प्रेरणा हूँ
तुमसे मैं हूँ मुझसे तुम हो/पूर्ण हो तुम मैं अन्नपूर्णा हूँ
चाह यही उर में बस जाऊँ/करो प्रेम मैं प्रेम लता हूँ
करो तपस्या शांति स्थापना/करूंगी मैं तेरी साधना हूँ
नील गगन में चलो उड़ चलें
डरो नहीं मैं हौसला हूँ
रंग हीन जो चित्र दिखेंगे
भरो रंग मैं चित्रकला हूँ
सृष्टि का हम सर्जन कर दें
तुम पुरुष मैं प्रकृति धरा हूँ

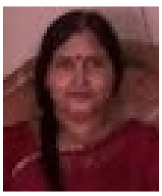

-- किरण सिंह

बेटियां जीवन में लाती हैं रंग
घर के प्रत्येक कोने में फैलाती हैं सुगंध
मत बांधो इन्हें बेड़ियां
खिलने दो ये हैं कलियां
फैल जाने दो इन्हें ऐसे
अंधेरे को दूर करती हैं जैसे
दीपावली की फुलझड़ियां!

-- संगीता कुमारी

(कविता संग्रह **'हृदय के झरोखे'** से साभार)

हर आना समेटे है/लौटकर चले जाना
मुझ तक आया लौट गया/तुम तक आकर भी लौट जाएगा
दूर हवा हवा में बहती/पानी पानी नदी में बहता
कुछ तुम बहे/कुछ मैं बहता रहा साथ-साथ
जो बहकर निकला रास्ते से/किसी भी मोड़ मुड़ सकता है
मुड़ा हुआ ना जाने फिर/किस रास्ते से गुजरेगा
इस बार जब आओ/किसी दरवाजों से होकर मत आना
आना तुम कि तुम कभी मत आना
दरवाजों पर चढ़ आए/ताले सालों इन्तजार के
चाबियों का गुच्छा लील गयी/जमीन सूखे जीवन की
खिडकियों पर लगी जंग/आँखों में उतर रही अब
इसबार बरसात में कितना कुछ बहेगा
कुछ दरवाजे, कुछ खिडकियां, कुछ आँखें
कुछ दीवार की रंगत/नाव एक पन्ना कविता
बहकर जाता ना जाने किस रास्ते गुजरेगा
गर पहुंचे तुम्हारे आंगन से
हाथ डुबो धकेल देना पानी पीछे को
बहते हुए को बहा देना अगली दिशा
मुझ तक आया लौटा दिया
तुम तक आये तो लौटा देना
लौटना भर है आना भर किसी का !

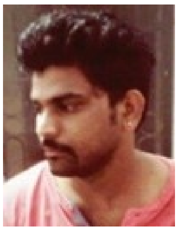

-- रुचिर अक्षर

जब देखती हूँ आज शिखर पर पहुँच कर
अपना गुजरा हुआ जमाना/तो मन आज भी
खोल कर रख देता है/एक एक रिसता हुआ घाव
जिसकी टीस अब भी दर्द का/अनुभव करा जाती है
लेकिन आज हमारी कौम की मेहनत रंग लाई है
आज वो दूसरे की तारीफ की मोहताज नहीं
उसे अपने आप को सराहना आ चुका है
आज नारी सपने भी खुद देखती है
और रंगों का चयन भी अपने मुताबिक करती है
अब उसे विश्वास है अपने पर कि
उसकी रणनीति ध्वस्त नहीं होगी
कर्मठता ने अपने जूते/उम्मीदों ने अपना ताज
जो पहना दिया है/उसके सशक्त मस्तक पर
जो बिकाऊ नहीं है क्योंकि
उसने समझ ली है,
अपने विश्वास से
भरे मस्तक की कीमत
और कर लिया है
विश्वास खुद पर सदा के लिए

-- कल्पना मिश्रा बाजपेई

श्रद्धा और ईमान/पास पास बैठे सोच रहे हैं
क्या दिया है- समय ने मां को?
वही सीलन भरा कमरा/टूटी खिड़कियां/उखड़ती सांसें
श्रद्धा, सत्य और ईमान को पालती मां ने
लगा लिये हैं अनेक पैबंद उस पर्दे में
जिससे पूरा करना चाह रही थी वह कमी दरवाजों की
सुख रंगों का इंतजार करते करते
थककर गिर गये हैं कुछ और प्लास्टर दीवारों से
अब तक नहीं बन पायी है
दादी के टूटे चश्मे की कमानी
साथ ही सत्या हो गयी है कुछ और सयानी!
कुछ भी तो नहीं बदला है
वर्षों पहले की तरह ही
कमरे में बेतरतीब पड़ी हैं
वही तीन कुर्सियां
केवल बढ गयी हैं
मां के चेहरे पर पड़ी झुर्रियां

-- डा. रचना शर्मा

(कविता संग्रह **'अन्तर-पथ'** से साभार)

आज भी याद है उसकी हसीं मुस्कुराहट
अधरों से निकले वो लब्ज जब हृदयंगम होते हैं,
तो मैं खो जाता हूँ उसकी यादों में,
टटोलने लगता हूँ बिताये हुए वो सारे पल-वो स्पर्श,
कभी कभी नाराजगी दिखाना
मुझसे दूर जाकर बैठ जाना,
फिर थोड़ी देर बाद वापस आना,
अपनी गलती को स्वीकार करना
फिर मुस्कुराते हुए शरमाना।
होने लगती हैं सब बातें।
अन्त में हाथ लगती है उसके हमारे बीच का कार्यानुभव,
जिसमें यादों के रास्ते, करते हैं विचरण !

-- रमेश कुमार सिंह

बार बार सोच के दिल घबराता है
और रह रह कर रोना आता है
क्या हुआ ऐसा कि वो बदले बदले से लगते हैं
जो हर लम्हा मुझे मेरे साथ लगते थे
अब उनका साथ मुश्किल से मिल पाता है
खुद से ज्यादा वो हमारा ख्याल रखते हैं
बिन बोले वो दिल की हर बात समझते हैं
फिर क्यों जो रहते थे साथ हर लम्हा
उन्हें अब हमारे लिए मुश्किल से समय मिल पाता है
यही सोच के मेरा दिल घबराता है
चाहता हूँ भूल जाऊं उनको
पर क्या करूँ
दिमाग तो सो जाता है मगर दिल
रह रह कर वहीं पहुँच जाता है
और बार बार सोच के
यह दिल घबराता है

-- महेश कुमार माटा

लम्बी कहानी (दूसरी और अंतिम किस्त)

उड़ीक (इंतजार)

उपासना सियाग

बड़े भाई को पता चला, तो वह भी जायदाद पर दावा करने पहुँच गया। उसे लगा, बापू खुद के हिस्से की जमीन भी कहीं छोटे के नाम ना कर दे। उसने कहा कि जमीन चाहे बापू के मरने के बाद मिले, नाम अभी लगा दे। क्या मालूम छोटा कब्जा कर ले, दे ही ना। छोटा कहाँ चुप रहने वाला था। वह भी बोला कि सेवा तो वह करता है। इनके मरने के बाद खर्चा भी उसे ही उठाना है। जमीन भी वही रखेगा।

सुन कर दिल कट कर रह गया। लालच और स्वार्थ कितना गिरा देता है इंसान को।

माँ मुहं ढांप के रो पड़ी।"अरे कसाइयो! क्या तुमको इस दिन के लिए जन्मा था। कुछ तो शर्म करो, लिहाज करो हमारी उम्र का। इस उम्र में हमें प्यार के दो बोल चाहिए। इज्जत-मान चाहिए। दौलत-जायदाद यहीं धरी जाएगी। साथ नहीं जाएगी। मुहं से बद्दुआ नहीं दे सकती! माँ हूँ! लेकिन तड़पता दिल दुआ तो नहीं दे सकता !"

सुखवंत और जसवंत दोनों बहनें अपने-अपने घर चली गईं, भारी मन से। मायके का दुःख ससुराल में कैसे कहतीं? मायके की इज्जत का सवाल भी तो था। अंदर ही अंदर रो लेतीं, बाहर मुस्कुरा लेतीं। बस वही आखिरी मुलाकात थी, माँ-बापू से। रिश्तेदारी में जा रहे थे। बस दुर्घटना ने दोनों को छीन लिया। कहर टूट पड़ा जैसे।

कुछ दिन मायके रह वापस आ गई। भाभियाँ मन ही नहीं जोड़ती थी ननदों से। असल में मायका तो भाई-भतीजों से ही तो होता है। माँ-बाप हमेशा तो नहीं रहते! भाई-भाभियों की बेरुखी से बहनों ने समझ लिया था कि उनका मायका, मायका नहीं रहा। एक कसक भरी याद बन गया है। अपने-अपने घरों में खुश थीं।

जीवन तो चलता ही है, चल पड़ा। सुखवंत के बेटे की शादी की तारीख नजदीक आ रही थी। शादी की तैयारी में व्यस्त सुखवंत अपना दुःख कुछ भूलने लगी थी। बीच-बीच में यह भी बात उठती कि ननिहाल से भी तो कुछ आएगा ही। दो मामा हैं। अपना फर्ज अच्छा ही निभाएंगे। सुखवंत के पति को सब पता था। वह कह देता कि क्यों मेरे पास क्या कमी है, जो ससुराल से आस रखूं। सुखवंत क्या बोलती।

शादी का निमंत्रण देने बेटे साथ मायके गई। कुछ नहीं बदला था। वही आँगन, दीवारें! भाई-भाभियों की बेरुखी भी वही। आँगन में बैठी माँ-बापू खोज रही थी। कि इधर से माँ भागी आती थी उसे गले लगाने। बापू भी तो सुन कर दौड़े आते थे। कितना प्यार-दुलार कि वह खुद को बच्ची ही समझ बैठती। हृदय में हूक उठी। काश आज माँ सामने होती, एक बार गले लग कर रो लेती। लेकिन माँ नहीं थी।

और अब ! दोनों भाभियाँ !! हां , हैरानी तो उसे भी थी। पहले तो इतनी एकता नहीं थी उनमें। माँ-बापू के मरते ही भाई एक हो गए। जायदाद बाँट ली। यानी कि माँ-बापू का खून ही मीठा था जो ये जोंक की तरह पीते रहे। मन वितृष्णा से भर गया उसका। भाभियों ने मन तो न मिलाया। पकवान बहुत बनाये। जब मन ही मर गया हो तो मन मार के ही खाना गले से उतरा। निमंत्रण देकर भरे मन से लौट आई सुखवंत।

शादी की धूमधाम थी घर में। मेहमानों से घर भर गया। भाइयों की उड़ीक (इंतजार) थी। भाई सपरिवार तो आये पर महज औपचारिकता सी निभाने। सास भड़क गई- "ऐ की सुखवंत!! तेरे भाई यूँ ही आ गए हाथ हिलाते। तेरे बापू के बाद यही तो पहला काम था। शर्म तो नहीं आयी। खुद के साथ हमारी भी नाक कटवा दी।"

करतार सिंह ने बात संभाली,"जान दे बेबे! क्या कमी है मेरे पास। "

सास का मुंह फूला ही रहा। सुखवंत के पास कहने को कुछ नहीं था। दिल रो रहा था। मुस्करा कर रस्में निभाए जा रही थी। बेटा दूल्हा बना बहुत प्यारा लग रहा था। हर माँ का अरमान बेटे को दूल्हा बने देखने का, उसके संसार को बसते देखने का होता है। ढेर सारी दुआएं दे डाली। सहसा माँ याद आ गई। अगर माँ होती तो कितना खुश होती।

शाम को 'दुल्हन आ गयी' की गूंज से घर गुंजायमान हो गया। द्वार पर मंगलाचार करते हुए सुखवंत की आँखों के आगे जैसे अँधेरा छा गया और बेहोश गई। दिल ही तो था। इतना सारा गम भरा था, खुशी झेल नहीं पाया। हृदयघात बताया डाक्टर ने। होश आया तो अस्पताल में थी। कुछ दिन आईसीयू में रखने के बाद पिछली रात ही कमरे में लाया गया था। छत को निर्विकार देखती सुखवंत माँ को याद किये जा रही थी। उसे लगा जैसे माँ सर सहला रही है। आँखे मुंद गईं।

"सुखवंत! सो रही है?" करतार सिंह की आवाज सुन कर सुखवंत ने आँख खोली। करतार का हाथ ही उसके सर पर था। सर घुमाया तो बेटा बहू और परिवार के सभी सदस्य थे चिंता और खुशी के भाव लिए। सहसा उसकी नजर कमरे के दरवाजे पर जा कर रुक गई।

"सुखवंते, तैन्नू हुण वी किस्से दी उडीक है?" करतार ने उसका हाथ अपने हाथों में लेते हुए पूछा।

"नहीं सरदार जी, हुण मैन्नू किस्से दी वी उड़ीक नहीं है। पैके हुंदे माँवा नाल!" कहकर आँखे मूंद ली सुखवंत ने, दो आँसू ढलक पड़े आँखों से। (समाप्त)

काश

मनीष मिश्रा 'मणि'

मनोज ने जब वृद्ध आश्रम की पहली सीढ़ी पर कदम रखा उसे बाबू जी की याद आ गयी। अपनी पत्नी के कहे में आकर वह उन्हें यहीं पर छोड़ गया था। उसे अब याद आ रहा था कि घर में उसे भी बाबू जी की उपस्थिति परेशान करने लगी थी। उम्र होने की वजह से बाबू जी के काम में कुछ कमी रह जाती थी, जो उनकी बहु और मनोज की पत्नी को सहन नहीं होती थी इस कारण कुछ न कुछ बहस होती रहती थी घर में। मनोज ने इस स्थिति से उबरने का यही हल ढूंढा कि बाबू जी को वृद्ध आश्रम छोड़ दिया जाये। उसे पता नहीं था कि रवि इन सब घटनाओं को ध्यान से देखा करता था। मनोज और रश्मि का प्यारा बेटा। मम्मी या पापा से पूछने पर वह उसे बहला देते कि दादा जी अब बेकार हो गए हैं। कोई काम उनसे नहीं होता।

आज उसी बच्चे रवि ने उसे इसी वृद्ध आश्रम के सामने ला खड़ा किया। पत्नी का साथ भी नहीं रहा अब। उसने जिस दर्द की कल्पना भी नहीं की थी आज उसे महसूस करने की मजबूरी से निकल भी नहीं पा रहा था मनोज। वृद्ध आश्रम के एक कोने में पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। सर ऊपर आसमान की तरफ करके कुर्सी पर ही टिका लिया।

जिसे पाला पोसा बड़ा किया और बस इतनी सी उम्मीद रखी कि आगे वह उसका ध्यान रखेगा। सब कुछ सोचते सोचते उसकी आँख का कोना इतना गीला हो गया था कि आंसू की बूँद बनकर गिरने ही वाला था। रोक भी नहीं पाया मनोज आंसू गिरने से ।

अचानक उसने अपने सर पर प्यार भरा स्पर्श महसूस किया। उसे लगा कि जिस दर्द ने उसे मजबूर बनाकर दुखी किया था वह भी रुकने के लिए असमर्थ सा हो रहा है।

हाँ बाबू जी ही तो थे। मनोज के सामने आकर बैठे ही थे कि पूरी तरह फूट पड़ा वह। वक्त लगा सँभालने में, लेकिन सिसकना अभी भी बरकरार था। बाबू जी ने पूछा तो मनोज ने बताया कि रवि ने उसे भी घर से निकाल दिया है। बाबू जी को बड़ा आश्चर्य हुआ तो पूछ ही लिया कि तू इतना तो बूढ़ा नहीं हुआ अभी कि बेकार समझ कर घर से निकाल दे। उसने बताया कि रवि कि शादी हो गयी है और परिस्थिति खुद को दोहरा रही है लेकिन इस बार बाबू जी कि जगह मनोज है बस।

'फिर भी चिंता मत कर मैं हु तेरे साथ।' बाबू जी के यह शब्द कितने अच्छे लग रहे थे मनोज को। बाबू जी का होना ही उसको हर दर्द से निजात दिलाने में सक्षम था। बाबू जी अभी भी बेकार नहीं हुए यह उसे आज पता चला। काश वह इस बात को तब समझ पाता। ■

सामने वह जो बेनकाब आया
यूं लगा जैसे माहताब आया
मैंने भेजा था प्यार का नामा
दिल शिकन ही मगर जबाब आया
उम्र भर खार ही मिले मुझको
मेरी किस्मत में कब गुलाब आया
रूबरू आईना जो आज आया
खुद पे रोना तो बेहिसाब आया
उसका दीदार क्या हुआ 'नासिर'
लौटकर फिर मेरा शबाब आया

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल गुलज़ार' से साभार)

हम खड़े साहिल पे लेकिन वो समंदर पार हैं
मिल सकें क्यों कर कि वो मजबूर हम लाचार हैं
अपनी बरबादी का रोना भी कहां तक रोइये
फूल ही थे फूल दामन में कभी अब खार हैं
स्वर्णमृग धोखा है भ्रम है कुछ नहीं इसके सिवा
कौन समझाये उन्हें जो राम के अवतार हैं
इक जगह मिलते तो आसां हो गयी होती परख
सोने और चांदी के
सिक्कों के अलग बाजार हैं
'शान्त' ढह न जायें रिश्तों
के खण्डहर रखना नजर
अब तक टिकते नहीं
सब रेत की दीवार हैं

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

(हिन्दी ग़ज़ल संग्रह 'तलाश' से साभार)

हर सुबह रंगीन अपनी, शाम हर मदहोश है
वक्त की रंगीनियों का चल रहा है सिलसिला
चार पल की जिंदगी में, मिल गयी सदियों की दौलत
जब मिल गयी नजरें हमारी, दिल से दिल अपना मिला
नाज अपनी जिंदगी पर, क्यों न हो हमको भला
कई मुद्दतों के बाद फिर अरमानों का पत्ता हिला
इश्क क्या है, आज इसकी लग गयी हमको खबर
रफ्ता रफ्ता ढह गया, तन्हाई का अपना किला
वक्त भी कुछ इस तरह से आज अपने साथ है
चाँद सूरज फूल में बस
यार का चेहरा मिला
दर्द मिलने पर शिकायत,
क्यों भला करते 'मदन'
दर्द को देखा तो दिल
में मुस्कराता ही मिला

-- मदन मोहन सक्सेना

मेरे जज्बों को हासिल है तुम्हारी सांस काफी है
महज अश्कों से बुझती है यकीनन प्यास काफी है
जमाने भर की खुशियों से सुकूं हासिल नहीं होता
तुम्हारा मेरे होने का, महज एहसास काफी है
न होना तुम मेरी जाना, मगर कहना नहीं मुझसे
कभी तुम पास आओगी, महज ये आस काफी है
भरी महफिल में आँखें ढूंढती हैं क्यों तेरे सा कुछ
समझतीं है अभी तक ये
तुम्हें कुछ खास काफी है
चले जाना, जरा ठहरो,
सुनो तो दिल की मेरे भी
तुम्हारा हो ना पाया पर
ये तुम्हारे पास काफी है

-- अभिवृत अक्षांश

मिले थे दिल जहाँ दिल से वहीं इक बार आ जाना
मुहब्बत कितनी है हम से कसम तुमको, बता जाना
रही मजबूरियां होंगी वफा हम कर नहीं पाए
निभाया हमने हर रिश्ता सदा ही बा वफा जाना
तुम्हारे हाथ की छूअन अभी तक हाथ में जिन्दा
फिर इन हाथों में मेरे तू अपना हाथ पा जाना
तुम्हारी बेरुखी अब तो हुई बर्दाश्त के बाहर
हमसे हो गई है क्या खता इतना बता जाना
तुम्हारी हर अदा मेरी गजल का एक मिसरा है
मुकम्मल हो गजल मेरी
कमर थोड़ी हिला जाना
करो तुम जो भी जी चाहे
तुम्हारा मुआमला अपना
नहीं 'आलोक' फितरत से
कभी भी बेवफा जाना

-- आलोक अनंत

रंग न होते हिन्दू-मुस्लिम रंगों की ना जात सखे
रंगों की भाषा ना बोली पर कह देते बात सखे
लाख छिपाओ भाव हृदय के किंतु मुखरित हो जाते
सुख-दुख-क्रोध-त्याग-ममता के रंग सभी जज्बात सखे
गाँव-देश की सीमाओं में इनको ना कोई बाँध सके
धरती से अंबर तक बिखरी रंगों की सौगात सखे
चलों बिसारें काली रजनी रुदन-राग और क्लेश यहाँ
सतरंगी रथ पर सज आया दिनकर संग प्रभात सखे
पल-पल करती सदियाँ बीतीं नित नव युग ने चरण धरे
मगर प्रीत के रंगों ने ना
छोड़ा जग का हाथ सखे
आग लगी हो जब नफरत की
आओ प्यार के रंग भरें
एक 'शरद' से ना ये होगा
तुम भी तो दो साथ सखे

-- शरद सुनेरी

कातिलों को वफा में रक्खा है
क्यों दिये को हवा में रक्खा है
जिनके हाथों में प्यासा खंजर है
हमने उसको दुआ में रक्खा है
तेरे आमद से आंखें चमकी हैं
नाम तेरा जिया में रक्खा है
जिस घड़ी मुस्करा के देखा था
पल वही इब्तदा में रक्खा है
जिसके सौ जुर्म माफ हैं 'रेणू'
उसने हमको सजा में रक्खा है

-- रिंकू रेणू वर्मा

चाँद को शायद चुप करने की ठानी है
इसीलिये ये बादल पानी पानी है
फर्क नहीं खेतों की गेंहू बिछ जाये
बारिश की ये जिद, कैसी मनमानी है
टपक रहीं बूंदें, सोने को जगह नहीं
कब इसने मजबूर की मुश्किल जानी है
जब जरुरत हो तब न आये बुलाने से
खाक कहाँ सूखे की इसने छानी है
बूंदें बेशक मोती हैं पर क्या करना
ग्राम देवता के घर, जो वीरानी है
जब अम्बर से बर्फ के टुकड़े बरसेंगे
फसलें तो हर हाल
में फिर मुरझानी है
'देव' न भाये
बारिश बेमौसम की
बतला बादल कैसी
ये नादानी है

-- चेतन रामकिशन 'देव'

तुम मेरे बेताब मन का अहम हिस्सा बन गये हो
जिसे सुनता रहूँ प्रेम का वही किस्सा बन गये हो
हर तरफ तेरे सिवाय मुझे अब कुछ नजर आता नहीं
दो जिस्म पर एक जान सा अटूट रिश्ता बन गये हो
माह ओ अंजुम से घिर कर भी खुद को भूला न था
तेरे सिवा कुछ याद नहीं ऐसा करिश्मा बन गये हो
रेत कणों सा चूर चूर होकर तन्हा सहरा बन गया हूँ
तेरी बाट जोहती मेरी आँखों की प्रतीक्षा बन गये हो
जिसके प्यार में मैं अब जीना और मरना चाहता हूँ
होम होने के लिए तुम मेरी निष्ठा बन गये हो
इब्तिदा से अंजाम तक तुमसे भेंट अब होगी नहीं
मेरी रूह के लिए तुम
आदिम मृगतृष्णा बन गये हो
दांव पर लगा दिया मैंने
अपने वजूद को तेरी खातिर
अब मैं हारूँ या जीतूं तुम
मेरी प्रतिष्ठा बन गये हो

-- किशोर कुमार खोरेन्द्र

वो मिरे सीने से आखिर आ लगा; मर न जाऊं मैं कहीं ऐसा लगा
रेत माजी का मेरी आँखों में था; सब्ज जंगल भी मुझे सहरा लगा
खो रहे हैं रंग तेरे होंठ अब; हमनशीं! इनपे मिरा बोसा लगा
लहर इक निकली मेरे पहचान की; डूबते के हाथ में तिनका लगा
कर रहा था वो मुझे गुमराह क्या? हर कदम पे रास्ता मुड़ता लगा
कुछ नहीं..छोड़ो..नहीं कुछ भी नहीं
ये नए अंदाज का शिकवा लगा
गेंद बल्ले पर कभी बैठी नहीं
हर दफा मुझसे फकत कोना लगा
दूर जाते वक्त बस इतना कहा
साथ 'कान्हा' आपका अच्छा लगा

-- प्रखर मालवीय 'कान्हा'

लम्बी कहानी (दूसरी और अंतिम किस्त)

रधिया - एक देवदासी

केशव

रधिया ने मिठाई और पकवानो की थाली ली और जमीन पर बैठ गई खाने के लिए। अभी पहला निवाला मुंह तक लाया ही था कि न जाने क्या हुआ कि वह फफक फफक के रोने लगी। उसकी रोआई सुन के सीमा उसके पास आई और प्यार से सर पर हाथ फेरते हुए बोली- 'क्या हुआ रधिया?'

'मुझे घर की याद आ रही है, मुझे घर जाना है, मुझे नहीं रहना यहां।' रधिया ने रोते हुए कहा।

इस पर सीमा ने बड़े प्यार से उसे समझाते हुए कहा- 'देख रधिया तेरा यहां से अब जाना संभव नहीं है। और फिर तू वापस जा के करेगी भी क्या, तेरे बप्पा बहुत गरीब हैं, खाने तक को नहीं है उनके पास। सोच, अगर तू यहां रहेगी तो चार पैसे भेज सकेगी उनको, गितवा भी अच्छा खाना खाएगी, अच्छे कपड़े पहनेगी। कितना खुश होंगे दोनों। और तू ठहरी छोटी जात की, यह तो तेरा सौभाग्य है कि महाराज ने तुझ मंदिर में घुसने दिया और देवता से गाँठ बांधी।'

सीमा के इस प्रकार समझाने से रधिया का मन थोडा हल्का हुआ, वह खाना खाकर सोने चली गई। पर अब भी उसके दिमाग में अपना गाँव, घर बहन पिता ही घूम रहे थे। फिर न जाने कब यूँ ही नींद आ गई।

इस तरह से ८-१० दिन बीत गए, रधिया रोज सुबह उठ के मंदिर की साफ सफाई आदि कामो में हाथ बंटाती, शाम को थक के खाना खा के सो जाती। कई बार ऐसा भी होता था जब रधिया मंदिर के गर्भ गृह में जाती सफाई के लिए तो वंहा पहले से मौजूद ' महाराज' जी रधिया को अपने पास बुलाते आशीर्वाद देने के लिए,और उस दौरान उसके शरीर के अंगो को कई कई बार अपने हाथ से सहलते।

रधिया को यह सब बड़ा अजीब लगता, उसका गर्भ गृह में जाके सफाई करने का मन नहीं करता पर महाराज के चेलो के आगे उसकी एक न चलती। वे जबरन भी उसे सफाई के लिए भेज देते।

इधर संपत बीच बीच में रधिया के कमरे में आ जाता और उससे मजाक करता, कभी कभी तो वह सीमा के सामने ही रधिया का हाथ पकड़ लेता और गालो और कमर पर हाथ फेरने लगता। रधिया इन सबका विरोध करती तो संपत और ठिठाई से हँसने लग जाता, रधिया सीमा से सारी बात कहती तो वह भी असमर्थता जता देती। रधिया ने कई बार सोचा कि वहां से भाग जाए पर चारों ओर ऊँची ऊँची दीवारें थीं और मुख्य दरवाजे पर दो सुरक्षाकर्मी हमेशा तैनात रहते।

एक रात रधिया अपने कमरे में सोई थी, कोई आधी रात से थोडा अधिक समय रहा होगा। अचानक रधिया की नींद खुल गई और वह चौंक के उठ गई, उसे लगा कि कोई बिस्तर पर है। आँखे खोलने पर उसने देखा की महाराज जी उसके बिस्तर पर बैठे हैं और उसके शरीर पर हाथ फेर रहे हैं। उनकी आँखें अंगारे की तरह सुर्ख लाल थीं, जैसे कोई नशा किया हुआ है। रधिया ने डर और आश्चर्य मिश्रित आवाज में कहा- 'महाराज जी आप?'

'हाँ रधिया, मैं हूँ। तेरा विवाह हुए इतने दिन बीत गए और अभी तक तेरी सुहागरात भी नहीं मनी, देवता कितने नाराज हैं तुझे पता है?' - महाराज ने अपने कपड़े उतारते हुए कहा।

रधिया मारे डर के कांपने लगी। उसने आस पास सीमा को देखा पर सीमा नहीं थी, कमरा अन्दर से बंद था। रधिया कुछ बोल पाती कक इतने में महाराज ने उसे दबोच लिया। कुछ ही क्षण में रधिया निर्वस्त्र थी, वह चीख रही थी, पर उसकी आवाज सुनने वाला उस समय कोई नहीं था। थोड़ी देर में सुबह होने वाली थी, इस बीच रधिया को महाराज ने कितनी बार रौंदा यह उसे भी याद नहीं। अब महाराज कमरे से बहार जा चुका था रधिया को अर्धमूर्छित अवस्था में छोड़कर। उसके शरीर के अंदरूनी अंगों और कई जगह खरोच और घाव के निशान सारी रात उसके साथ हुई बर्बरता की कहानी कह रहे थे।

कुछ देर बाद सीमा कमरे में आई और रधिया को होश में लाने के बाद उसके घावों पर मरहम लगाया। तेज दर्द के मारे रधिया का बुरा हाल था उसने सीमा को रोते हुए सारी बात बताइए। सीमा ने ठंडी आवाज में कहा- 'मुझे सब पता है रधिया, तुझे बताने की जरुरत नहीं. बस तू इतना समझ ले कि रोने से कुछ नहीं होने वाला धीरे-धीरे सब आदत पड़ जाएगी। मैं तेरे लिए गर्म दूध लाती हूँ।' इतना कहकर सीमा दूध लेने चली गई, रधिया दर्द से रोये जा रही थी।

दो दिन बीत गए। अभी रधिया अपने साथ हुए बलात्कार के सदमे से उबर नहीं पाई थी कि एक रात संपत उसके कमरे में आ धमका। एक बार फिर रधिया के साथ हैवानियत का खेल खेला जाने लगा पर उसकी चीखें सन्नाटे और संपत की हवस में दब के रह गई।

इस तरह से अब रधिया के साथ लगभग हर दूसरे तीसरे दिन कोई न कोई आकर उसके शरीर के साथ खेल के चला जाता, अब तो अनजान लोग भी आने लगे थे। रधिया रोती, चीखती पर सब बेकार जाता।

तीन महीने बाद सीमा को रधिया का पेट कुछ उभरा सा लगा उसने जब रधिया से पूछा तो उसने इसके बारे में अनभिज्ञता जाहिर की। सीमा समझ गई कि रधिया गर्भवती हो चुकी है। उसने यह बात तुरंत महाराज को बताई, महाराज ने सीमा से कहा कि यह बात किसी को पता नहीं चलना चाहिए और तुरंत संपत को बुलावा भेज दिया। लगभग एक घंटे बाद संपत एक डाक्टर के साथ रधिया के कमरे में था, सीमा पहले से ही वंहा मौजूद थी। डाक्टर अच्छी प्रकार रधिया का निरीक्षण करने के बाद कमरे से बाहर आ गया साथ में संपत और सीमा भी बाहर आ गए। डाक्टर ने संपत से कहा कि अब बहुत देर हो गई है, लड़की का गर्भपात नहीं करवाया जा सकता और फिर इसकी उम्र कम है यदि गर्भपात करवाया भी, तो जान का खतरा है इस लड़की के लिए।

डाक्टर की बात सुनकर दोनों सन्न रह गए, डाक्टर के जाने के बाद संपत ने सीमा से कहा की तुम इसका ध्यान रखना यह बाहर न जाने पाए, महाराज जी अभी जजमानी में गए हैं शाम को आयेंगे तो उन्हें सारी समस्या बताएँगे, देखते हैं क्या कहते हैं वे।

रात के तकरीबन ११ बजे होंगे, रधिया बिस्तर पर लेटी हुई थी पर देखने में ऐसा लग रहा था कि सो गई है, सीमा जगी हुई थी। महाराज संपत के साथ कमरे में आया और धीरे से सीमा से पूछा कि रधिया सो गई क्या? सीमा ने रधिया की तरफ देखते हुए कहा 'सो गई है।' महाराज ने गुस्से में सीमा से कहा कि 'रधिया गर्भवती भी हो गई और तुझे पता भी न चला?'

सीमा ने डरते हुए कहा- 'महाराज मैं इस तरफ ध्यान नहीं दे पाई मुझे क्षमा करें।' रधिया चुप चाप उनकी बातें सुने जा रही थी।

'अब इसका हल क्या होगा? यदि लोगों को पता चल जायेगा तो बहुत बदनामी होगी, पुलिस केस भी हो सकता है।' महाराज ने गंभीर मुद्रा में कहा।

संपत ने कहा- 'महाराज आप फिक्र न करें इसका इलाज भी करते हैं, अपनी पुरानी चेली कमला कब काम आएगी? उसी के यहां छोड़ आते हैं इसे वह इसका गर्भपात करवा देगी। अगर यह मर जाएगी तब भी किसी को पता नहीं चलेगा और जिन्दा रही तो उसके काम आएगी, वह भी खुश हो जाएगी।'

कमला का नाम सुनते ही महाराज के चेहरे पर कुटिल मुस्कान आ गई। उसने खुश होते हुए कहा- 'वाह! संपत तूने बहुत बढ़िया उपाय बताया। जिन्दा रही तो कमला के ग्राहकों को खुश रखेगी और मर गई तो हमारे पर कोई आंच नहीं आएगी। बहुत अच्छा कल रात मे ही तुम कमला के पास निकल लेना। सुबह तक वापस भी आ जाओगे और अपने साथ सीमा को भी ले जाना ताकि कहीं भागे न यह लड़की।' इतना कह के संपत और महाराज दोनों कमरे से बाहर निकल गए।

रधिया ने सबकुछ सुन लिया था उसकी आँखों से आँसू निकल रहे थे पर वह खामोश सोने का नाटक करती रही। कमला का कोठा शहर में था तकरीबन दो घंटे के समय की दूरी पर।

अगले दिन रधिया खामोश थी, उसने किसी से

(शेष पृष्ठ १५ पर)

कवि तुम बन जाना हमदम, मैं कविता बन जाऊँगी
सागर तुम बन जाना हमदम, मैं सरिता बन जाऊँगी
दीपक तुम बन जाना हमदम, मैं बाती बन जाऊँगी
स्पर्श जब करोगे तुम, मैं रोशन हो जाऊँगी
पवन तुम बन जाना हमदम, मैं खुशबू बन जाऊँगी
पाकर साथ, तुम्हारा हमदम, चँहु और बिखर मैं जाऊँगी
राग तुम बन जाना हमदम, मैं रागिनी बन जाऊँगी
मैं आशा उम्मीद हूँ सबकी, खुद को कैसे बचाऊँगी
शब्द तुम्हारे बनकर हमदम, मैं अधरों पे बिखर जाऊँगी
गढ़ लेना तुम खुद में मुझको
मैं कविता बन जाऊँगी
ढ़लकर तुम्हारे सुरों में हमदम,
मैं और निखर जाऊँगी
नहीं रहेगा डर किसी का,
मैं तुम में ही बस जाऊँगी

-- राधा श्रोत्रिय 'आशा'

न मैं राधा हूँ न मैं मीरा/न मैं सीता हूँ न मैं गांधारी
न मैं लैला हूँ न मैं सोहनी/न मैं देवी हूँ न मैं दासी
मैं तो सिर्फ ईश्वर की रचना
त्याग, प्रेम, ममता, वात्सल्य से परिपूर्ण नारी हूँ ...
जिसे कई नामों से/जाना, माना, पहचाना गया
पर अंतर मन की/जान सको तो जानो
सिर्फ प्यार, मान, सम्मान/की उपेक्षक नारी हूँ मैं
नहीं साहस मेरा मीरा बन/विरह का विष पी जाऊं
या बन राधा बंसी की धुन पर/सर्वस्व लुटा दूँ
या सीता बन सदा दूँ अग्नि परीक्षा
या बन गांधारी चलूँ आँखें मूँद
या बन सोहनी प्रेम की लहरों में डूब जाऊं
है इच्छा तो बस इतनी
नारी ही समझी जाऊं
माँ, बेटी, बहन, बहू
हर रिश्ते को मैं जीती हूँ
बस मिले प्यार के बदले प्यार
यही सदा में चाहूं!

-- मीनाक्षी सुकुमारन

साजन तेरी यादें सावन बन बरसी
तोड़ दिए सब वादे, नभ भी रो पड़ता है
दु:ख के बोझ तले, बारिश बन बहता है
तरसत मोरे नैना यादों में मोहन, खोया दिल का चैना ।
घर-आँगन महकाती,
प्यारी बिटिया तितली बन लहराती
फूल पलाश खिल रहे! आन मिलो तुम प्रिय
अब विरह मन जल रहे, हट तू ऐसे न सता
छोड़ कलाई दे/बस भी कर, न कर खता ।
रुक तो मेरे हमदम
मन है आवारा तरसाता है मौसम
पल पल याद सताती
तुम रूठ न जाना
याद बहुत तरसाती ।

-- गुंजन अग्रवाल

कल रात गीली हो गयीं थीं, तुम्हारी यादें
आँख से गिरते पानी से,
सुबह अलगनी पर सुखाने डालीं थी,
भाप बनके उड़ने लगीं/तुम्हारी यादों की गंध
मेरे आईने को धुंधलाती,
आईने के अक्स पर
मौजूद है तुम्हारी पहचान,
जो उग आती हैं माथे पर,
मेरी बिंदी की तरह
जैसे अमावस को छोटा नन्हा चाँद

-- प्रीति दक्ष

मुर्दों की याद में दिए जलाएंगे/सड़क पे सोये भूखों की
कविता गजल बनायेंगे/माफ करना ये लेखक हैं
लूली लंगड़ी आरजुओं के दहाड़े मार रोयेंगे
वीरान सही ये रास्ता पर मेरी निगाह है
झिलमिलाते तारों पर/दूर पूरब की उम्मीद पर
बेखौफ और लापरवाह हूँ मैं/इस रास्ते से
और इस रात के अँधेरे से/जिस्म नाजुक ही सही
जुर्रत नही और ये जुर्रत ही तो हैं/जो नदियों में तैरती
रेगिस्तान में चलती
जंगलो से गुजरती
और पर्वतों को पार करती हैं...
कोई यूं ही नहीं सोहनी बनती
मैं उनके कदम चिन्हों पैर रखती हूँ
और चलती हूँ...!

-- रितु शर्मा

ले नदी सी गहराई
अच्छा या बुरा जो मिले
सब आजीवन ढ़ोती
बनकर जीवन दायिनी
हर रिश्ते को सींचती
खुद को पूर्णतरू भुलाकर
सबके हितार्थ सोचती

-- प्रवीन मलिक

एक मौन, जो समाया है मेरे अंतर्मन में
यूं ही कभी चीत्कारता है और
तुम्हारे आसपास होने की साजिश करता है
तुमसे बातें करने के बहाने ढूँढता है
तुम्हारी यादों को खुद में समाने की ,
पुरजोर कोशिश करता है/पर दुर्भाग्य का खेल देखो-
तुम्हारे आसपास जो अनगिनत जाल से बने हैं
मुझे रोक लेते हैं तुम्हारे पास होने से
साथ ही तुम्हारी यादों में जमाय बैठे हैं खुद का डेरा
अब तुम्हीं बताओ कितना मुश्किल है यूं तुमसे मिलना,
बातें करना और तुम्हें
अपनी यादों में बसाना
पर, अडिग है मेरा प्यार जो न कभी
सहमा है, न रूका है, न ही थका है
हाँ, एक सत्य जरूर है तुम्हारी
रूसवाइयों से थोड़ा डरता है

-- संगीता सिंह 'भावना

मैं हूँ पीड़ा उस स्त्री की/जो लहूलुहान हो पड़ी सहती है
दर्द गर्भ में मार देने वाले/अजन्में बच्चे का
अब मैं हो जाऊंगी चुप/बोल रही हूँ कितने युगों से
असर होता है कहाँ/फट जायेगा एक दिन कंठ मेरा
बड़ा भरोसा था अपनी आवाज पर
कर दूंगी अपनी चीख पुकार से सारा शहर इकट्ठा
जगाए कितने अलख/कि कोई तो होता
पीड़ा की पीड़ा समझने वाला
जाने किस किस घर से निकली/कहाँ कहाँ गूंजी
पर हर बार फेक दी गयी
किसी नाले में
किसी कचरे के डिब्बे में
जमाना भले ही जाएं मंगल पर
मैं तो हूँ पीड़ा नहीं थमेगी तब तक
जब तक न समझे कोई मेरी पीड़ा

-- सरिता दास

लिए चोंच में तिनका चिड़िया/देखती इधर उधर
खोजती घने छांव वाला एक शजर/पेट में दाना नहीं
भूख से व्याकुल चिड़िया/ढुंढ़ती आंगन वाला घर
कड़ी धुप में भरती ऊंची लम्बी उड़ान
प्यासी चिड़िया तलाशती/जल से भरा एक पोखर
उदास चिड़िया सोचती
क्यों अपना रहा इंसा
आराकाशी का हूनर
उजड़ते चमन को देख
हैरां परेशान हो चिड़िया
नोचती अपने ही पर !!

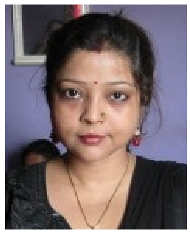

-- डा. भावना सिन्हा

जाने कैसा दीवाना मौसम हुआ है आज
नहीं रहा है मेरा मेरे दिल पर अब राज
उड़ना चाहता है यह उन्मुक्त आसमान में
देना चाहता है अपने पंखों को परवाज
थामना चाहता है आज यह हाथ सूरज का
करना चाहता है अब
यह चाँद तारों से बात
सुनना चाहता है इक
अलग सी धुन कोई
छेड़ना चाहता है कोई
इक नया ही साज

-- प्रिया वच्छानी

उनका भी दिल धड़कता है, क्या मेरे लिए तड़पता है?
मन होता है उनका बेचैन, भींगते हैं आँसुओं से नयन
वो भी रोती, कभी हंसती हैं, बेवजह मुस्कुराती हैं
क्या खुद को वो भी भरमाती हैं, दर्द को दिल में दबाती हैं
रात पहर वो भी जागती हैं, उन्हें मेरी याद सताती है
अरे ! वो तो मेरी जान हैं
बिन उनके यह जिस्म बेजान है
लम्बे इंतजार का हैं किनारा
मेरे जीने का सहारा ।
उन्हें बताऊँ तो कैसे ?.

-- मुकेश सिन्हा

चोरी एक पाप

रामू चोर को कौन नहीं जानता! बच्चा बच्चा गाँव का उसे जानता था। पता नहीं जिंदगी में कितनी चोरिआं उसने की थीं लेकिन उसके घर की गरीबी उसी तरह बरकरार थी। कभी चोरी से उसको बहुत धन प्राप्त हो जाता, कभी पकड़ा जाता और छः महीने जेल में रहता। उसके बीवी बच्चे थे, लेकिन वोह बिचारे क्या करते, क्योंकि रामू सख्त स्वभाव का था। अक्सर वह रात को बाहर निकल जाता, दूर-दूर के गाँवों में घूमता रहता और जहाँ भी उसे दांव लगता, चोरी कर लेता। बहुत दफा वह सोचता कि यह धंधा छोड़ दे लेकिन मन था कि कोई और धंधा करने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाता था।

एक दिन वह चोरी करने के इरादे से बाहर निकला। जब वह गुरद्वारे के नजदीक पुहंचा, तो उसके कानों में ज्ञानी जी की आवाज सुनाई दी। ज्ञानी जी संगत को मुखातिब करके बोल रहे थे कि चोर के घर कभी दिया नहीं जलता। रामू ने यह बातें पहले भी कई दफा सुनी हुई थीं, लेकिन आज यह बातें जैसे उसके सीने में छेद कर गई हों। उसका मन उदास हो गया। सारी रात वह इधर-उधर घूमता रहा, लेकिन चोरी को उसका मन नहीं कर रहा था। वह दरिया के किनारे चलने लगा। दरिया में पानी नहीं था। दरिया की सूखी रेत चाँद की रौशनी में चिटी चादर की तरह दिखाई दे रही थी। दूर दरिया के पुल पर कभी-कभी किसी बस या ट्रक की लाईट दिखाई देती। रामू सोच रहा था कि उसे कहीं से बहुत सा धन मिल जाए और वह कोई अच्छा सा काम कर ले। आखिर क्या रखा था इस काम में! ज्ञानी जी ठीक ही तो कहते थे कि चोर के घर कभी दिया नहीं जलता।

वह सोच ही रहा था कि एक बस पुल की रेलिंग से टकरा कर नीचे दरिया में गिर गई। चीखें सुन कर रामू पुल की तरफ भागा और वहां पहुंचते ही उसे बहुत सी लाशें दिखाई दीं. वह हैरान हुआ सोच ही रहा था कि उसे एक औरत की कलाई पर चमकती हुई सोने की चूडियाँ दिखाई दीं। रामू के भीतर का चोर फिर जाग उठा और उस ने कलाई से सभी चूड़ियाँ उतार लीं। और फिर जैसे वह पागल हो गया हो, किसी की घड़ी, किसी का पर्स और किसी की अंगूठी उतारकर वहां से भागा और खेतों में गुम हो गया। वह चलता रहा, दिन चढ़ आया और खेतों से बाहर निकलकर वह सड़क पर आ गया।

उस को भूख लगी हुई थी। कुछ दूर जा कर एक बस अड्डा था। वहां पौहंच कर रामू ने छोले-भठूरे लिए और एक दरख्त के नीचे बैठ कर निश्चिंत हो कर खाने लगा। अभी कुछ मिनट ही हुए थे कि सड़क पर आता हुआ एक ट्रक सड़क पर जाती हुई एक गाय को बचाता हुआ बेकाबू हो गया और उसी दरख्त से जा टकराया यहाँ रामू खाना खा रहा था। ट्रक इतनी जोर से टकराया कि उसके साथ ही रामू के चीथड़े उड़ गए। लोग रामू की लाश और बिखरे हुए सोने के गहनों को देखकर तरह-तरह की बातें कर रहे थे ।

-- गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

पाप

'अरे इतने बडे़ समाज मे क्या एक लड़की नहीं मिल रही मेरे सुरेश के लिए?' सुजाता को बहुत गुस्सा आ रहा था। सुरेश ४० साल का होने को आया था और उसकी शादी नही हो पा रही थी। तभी सुरेश के पापा को उनके दोस्त का फोन आया। बोले, 'एक लड़की है, गांव में पली बढ़ी है और कम पढ़ी लिखी है।'

उसके पिता ने कहा, 'चलेगी।'

'परंतु... वे लोग २० लाख रुपये मांग रहे हैं।'

'२० लाख! यार, क्या ज्यादा नही है और फिर ब्रोकर भी तो अपना कमीशन लेगा।'

'हाँ वह तो है, पर कम में वे मान नहीं रहे।'

काफी बहस करने पर भी जब बात नहीं बनी, तो सुरेश के पिता ने फोन रख दिया।

इधर २० लाख सुनते ही सुजाता की तो आंखें फटी ही रह गईं। आधी से ज्यादा कमाई तो उनके दूसरे बेटे को अमेरिका पढ़ाने में लग गई थी। और वह भी वहां किसी अमेरिकन लड्की से शादी करके बस गया था। आज १० साल हो चुके थे वो वापस ही नही आया। हां कभी कभार उसका फोन जरूर आ जाता था हाल चाल पूछने को।

और इधर इनका ये बेटा गलत राह पकड़ चुका था। दिनोंदिन उसकी हालत गंभीर होती जा रही थी। डाक्टरों ने उसे एड्स रोगी घोषित कर दिया था। उसके इलाज का खर्चा भी भारी पड़ रहा था। दिन रात परेशानियों में ही गुजर रहे थे।

वे २० लाख एवं सुरेश की बीमारी उसके पिता को ज्यादा चिंतित कर गई और उन्हें कुछ ही दिनों में तीसरा अटैक आया और वे चल बसे। अपने बेटे को अमेरिका से बुलाया तो उसने कुछ पैसे भेज दिये ये कहकर कि वह काम में इस तरह फंसा हुआ है कि आ नहीं सकता।

पिता के अंतिम दर्शन करने को भी उसका मन नहीं हुआ। सुजाता का यह सोच सोचकर बुरा हाल हुआ जा रहा था। क्या मात्र रुपये भेजना ही अब उसका कर्तव्य रह गया था।

इधर सुरेश की हालत भी दिनोंदिन और खराब होती जा रही थी। किससे कहे अपने मन की पीड़ा? कौन समझेगा उसके दर्द को? अगर आज उसकी बेटी

बालमन

इलाहाबाद की झांकियों के बारे में तो बहुत कुछ सुन रखा है। पिताजी क्या हम सब भी चले आपके साथ। 'दादू मैं भी चलूँगा।' अंकित मचल उठा।

मेले में मस्ती करते हुए सारी झाँकियो के बारे में दादू से पूछता रहा 'ये कौन, ये कौन, दादू बताओ न।'

माँ ने एक बार डाँटते हुए कहा, 'दादा जी को परेशान नहीं करते बेटा।'

तुरंत दादा जी ने कहा, "कोई बात नहीं बहू। मैं परेशान नहीं हो रहा, बल्कि खुश हूँ कि इसे रुचि है रामायण में।'

तभी छोटे से हनुमान और बड़े से राम का स्वरूप देख बड़े आश्चर्य से अंकित बोला, 'दादू, आपने तो कहा था कि हनुमान ने राम और लक्ष्मण दोनों ही को कंधे पर बैठाया था। पर इतने छोटे से हनुमान कैसे उठा पाएंगे। मम्मी तो मुझे डांटती है जब मैं अपनी बहन को उठाता हूँ। कहती है अभी गिरा देगा उसे। लिटा के पालने में ही खेल उससे। फिर इन्हें नहीं डांट पड़ी।'

यह सुनते ही सभी ठहाका मारकर हंस पड़े।

हनुमान बने स्वरूप ने भी सुनकर मुंह बना लिया। जैसे कह रहा हो 'ये बड़े लोग नहीं समझते हम बच्चे ज्यादा समझदार हैं। इन्हें तो श्रध्दा की आँखों ने अंधा कर दिया है और मुझे आइसक्रीम के लालच ने। आइसक्रीम वाव यम्मी...!' जीभ फिरा दी ओठों पर, जैसे आइसक्रीम का स्वाद ओठों पर आ गया हो।

आइसक्रीम का स्वाद क्या, शायद वह घंटों खड़े रहने से पैरों के दर्द से निकली आह जीभ से अन्दर खींच रहा था।

-- सविता मिश्रा

साहस

टाउन हाल खचाखच भरा था। तालियों की गड़गड़ाहट से पता चला कि मिसेज रस्तोगी हाल में आ गयी हैं। आज उनकी कहानियों की दसवीं बुक का विमोचन शहर के जाने-माने साहित्यकार के हाथों होना है।

'आप तो एक हाउस वाईफ हैं। फिर इतनी बड़ी उपलब्धि कैसे हासिल की?' पत्रकारों ने मिसेज रस्तोगी से सवाल किया।

'देखिये, मेरी इस उपलब्धि का श्रेय मेरे पति को जाता है, जिन्होंने मुझे घर में रहकर ही कुछ करने की पुरजोर सलाह दी। वृद्ध सास- ससुर जी की सेवा टहल के कारण रस्तोगी जी को बाहर जाना बिलकुल नही जँचा। कहीं न कहीं मि. रस्तोगी भी जिम्मेवार हैं।'

-- शान्ति पुरोहित

कहानी

एक मुफलिस, एक मसीहा!

पंकज त्रिवेदी

एक मुफलिस सा आदमी हमारी ओर आकर कुछ गज की दूरी पर खड़ा रह गया। मेरे दोस्त अजय ने मेरे हाथ को जोर से दबाया। मैं चुप हो गया मगर मन में असमंजस की स्थिति पैदा हो गई। मेरे दोस्त ने उन्हें कहा- 'आप यहाँ आईये, यह तो मेरा दोस्त है।'

वो आदमी बिलकुल नजदीक आ गया। मेरे सामने देखा और फिर मेरे दोस्त के चेहरे को मेरे दोस्त ने हंसकर सिर हिलाकर सहमति दे दी। मुफलिस आदमी ने अपने फटे से कुर्ते की एक जेब से प्लास्टिक के बेग में लपेटी हुई दो रोटियाँ निकाली। मेरे दोस्त ने अपने हाथ फैलाए, तो उन्होंने रोटियाँ रख दी। फिर दूसरी जेब से वैसे ही प्लास्टिक बेग में से सब्जी निकालकर रोटी में थोड़ी सी रख दी। मेरे दोस्त ने उसे रोटी और सब्जी को सेंडविच की तरह वहीं खड़े खड़े ही खा ली। फिर उन्होंने ने दूसरी बार दूसरी रोटी में सब्जी डालकर प्लास्टिक बेग सड़क के किनारे फेंक दिया। मेरे दोस्त ने दूसरी रोटी-सब्जी भी उसी तरह खा ली। फिर सामने के आलीशान होटल के बाहर रखे वाश बेसिन के नल से थोडा सा पानी भी पी लिया। फिर मेरे दोस्त ने उस मुफलिस से हाथ मिलाकर कहा कि कल दोपहर को हम मिलते हैं। वो आदमीं चेहरे पे संतुष्टि और खुशी के भावों के साथ चला गया।

मैंने अपने दोस्त के सामने आश्चर्य से देखा तो वो हंसने लगा। अजय मेरा बचपन का दोस्त है। बचपन में ही पिताजी चल बसे थे। मगर पुरखों की जायदाद का हिस्सा तीनों भाईयों को मिला, उसके बाद वो अपनी जिंदगी को संवार सके थे। अजय ने शहर के बीच में अपना छोटा सा रेस्तरां शुरू किया था। कुछ ही समय में वो शहर का सबसे अच्छा रेस्तरां हो गया। अजय ने नाम और दाम भी कमाए।

समय जाते उसने शहर से बाहर एक बड़ा सा होटल बनाया और कुछ सालों में वो शहर का अमीर आदमी बन गया। उनकी अच्छाई भी लोगों की जुबां पर थी। अमीरी के साथ उनके संस्कार और धर्म के प्रति आस्था भी बढ़ने लगी थी। एक दिन अजय ने अपने गुरु से कहा, 'मैं आपसे रामायण कथा करवाना चाहता हूँ। एक सप्ताह में जो भी खर्च होगा, वो मेरी जिम्मेदारी।'

उनके गुरु जी देश-विदेशों में रामायण कथा करने जाते थे। कथा के लिए कोई खर्च नहीं होता था मगर गुरु जी के प्रभाव के कारण लाखों लोग कथा सुनने को आते थे। गुरु जी का हमेशा आग्रह रहता कि जो यजमान कथा करवाएं वो आने वाले सभी भक्तों को प्रसाद के रूप में सुबह-शाम खाना भी खिलाएं। वो भी पूरे एक सप्ताह तक। उपरांत दूसरे खर्च अलग, जिसमें एक लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था आदि हो।

अजय को गुरु जी ने कहा, 'तुम एक काम करो। शहर के बीचोंबीच जो तुम्हारा पुराना रेस्तरां था वो जगह आज बिलकुल खाली है। तुम उसी जगह पर अन्न क्षेत्र शुरू करो। गरीबों को मुफ्त में खाना खिलाओ। संभव हो तो उन्हीं लोगों के साथ तुम भी खाना खाने के लिए बैठो। उन्हें जो परोसा जाएँ वो ही तुम्हें खाना होगा। कुछ साल बाद मैं ही तुम्हें कहूँगा कि अब हम रामायण कथा का आयोजन करें। मैं एक पैसा भी नहीं लूँगा।'

अजय ने गुरु जी की बात को आशीर्वाद मानकर स्वीकार कर लिया। उन्हों ने अपने पुराने बंद रेस्तरां को खोल दिया और सुबह-शाम गरीबों के लिए अन्न-क्षेत्र शुरू कर दिया। वो हमेशा दोपहर को अपने सारे कामकाज छोडकर वहाँ पहुँच जाता और बिलकुल सादे कपड़ों में उन गरीबों को भोजन परोसता और फिर उन्हीं के साथ खाने के लिए बैठ जाता। गरीब-भिखारी लोग जब उन्हें पूछते कि तुम परोसने के बाद हमारे साथ भोजन के लिए बैठते हो। तुम कौन हो? वो हंसकर कहताय 'जो सेठ हम सबके पेट की आग को शांत करता है उसको तो हमने देखा नहीं। मगर मेरा शरीर काम कर सकता है। कम से कम मैं सभी को खाना परोसने की जिम्मेदारी लेकर छोटा सा सेवाकार्य तो करूँ।'

एक दिन अजय ने उन सभी गरीब-भिखारियों के कहा कि मैं दो-तीन के लिए रात का खाना खाने के लिए नहीं आ पाऊंगा। आप लोगों में से कोई मेरी गैरमौजूदगी में खाना परोसने की जिम्मेदारी निभाना। मैं अपना कार्य खत्म होते ही लौट आऊँगा। असल में अजय अपने बड़े होटल की जिम्मेदारी और कुछ व्यस्तता के कारण पुराने रेस्तरां में गरीबों के साथ भोजन लेने नहीं जा सकता था एक दिन रात को मैं बाहर से घर लौट रहा था, तब अजय के होटल के पास से ही मुझे गुजरना था। मैंने उसे बाहर खड़ा देखा।

सर्दी का मौसम था तो ज्यादा भीड़ नहीं थी। होटल के कर्मचारी अब घर जाने की तैयारी कर रहे थे। अजय बाहर खड़ा सभी का इंतजार करता था। मैंने उसे देखा तो सोचा, काफी दिनों से बात नहीं हुई। चलो, मिलकर कुछ बातें हो जाएँ। ऐसे में वो मुफलिस हमारे पास आ गया। अजय ने सड़क पर खड़े-खड़े ही उनके हाथों से दो रोटियाँ और सब्जी खा ली थी अब, अजय ने मुझे कहा, 'मैं अपने पुराने रेस्तरां में इन दिनों शाम का खाना खाने नहीं जा पाता हूँ, तो ये मुफलिस आदमी को लगा कि मैं शायद भूखा ही सो जाता होगा। आज शायद उनसे रहा नहीं गया। उसने रेस्तरां वाले अन्नक्षेत्र के कर्मचारी से मेरे बारे में पूछा होगा। उन्हों ने बता दिया कि अगर तुम्हें उनकी चिंता है और मिलना है तो शहर की बड़ी सी होटल के पास पहुँच जाओ। वहीं मिल जाएंगे। उस मुफलिस आदमी ने अन्नक्षेत्र से मेरे लिए दो रोटियाँ और सब्जी माँग ली और चला आया मुझे ढूँढता हुआ यहाँ तक। वो वहाँ से यहाँ पैदल आता तब तक अन्न क्षेत्र के कर्मचारी ने मुझे फोन से बता दिया था कि वो मुफलिस आदमी आपके लिए खाना लेकर होटल पहुँच रहा है। इसलिए मैं होटल के बाहर सड़क पर उसी के इंतजार में खड़ा था। ऐसे में तुम भी आ गए।'

मैं तो हैरत में पड़ गया कि मेरा बचपन का दोस्त अजय आज इंसान से मसीहा बन गया है। मैंने उन्हें पूछा, 'अजय, क्या उस मुफलिस को यह भी पता नहीं कि वो अन्नक्षेत्र तुम ही चलाते हो और यह आलीशान होटल तुम्हारा ही है?

उन्होंने कहा, 'दोस्त! वो ये सब नहीं जानता। उसे तो ऐसा लगा कि प्रतिदिन सुबह-शाम मेरे साथ बैठकर अन्नक्षेत्र में खाने वाला यह आदमी किसी वजह से आ नहीं पाया तो मुझे उसके लिए खाना ले जाकर उसे खिलाना चाहिए। यही सत्य है। यही प्यार का रिश्ता है।'

मैंने आज इंसान के दो रूप देखे- एक मुफलिस आदमी की इंसानियत और दोस्त के रूप में एक मसीहा।

(पृष्ठ ११ का शेष)

लघुकथा : पाप

होती तो शायद वो उसका दर्द समझा पाती। संभाल लेती अपनी मां को इन विपरित परिस्थितियों में। हौसला बढ़ाती अपनी मां का।

किन्तु... किन्तु उस बेटी को तो उसने खुद ही अपनी कोख में मार डाला था। उस बेजुबान की हत्या करवा दी थी, जब पता चला कि उसके पेट में बेटी है। कैसी निर्दयी मां थी मैं, अपनी कोख में ही भेद कर गयी।

आज बेटी जन्म नही लेगी तो कल दिन बहुऐं भी कैसे मिलेगी? फिर तो बेटे गलत रास्ते पर जाने ही है ना। आज उसे सब समझ आ रहा था पर अब बहुत देर हो चुकी थी। यह उसका किया हुआ पाप ही था, जिसका फल आज उसके सामने आ रहा है

-- एकता सारदा

कविता

बिछड़ गये हैं सारे अपने, संग-साथ है नहीं यहाँ
ढूँढ रहा मन पीपल छैंयाँ, ठंडी होती छाँव जहाँ
छोड़ गाँव को, शहर आ गया, अपनी ही मनमानी से
चकाचौंध में डूब गया था, छला गया नादानी से
मृगतृष्णा की अंधी गलियाँ, कपट द्वेष का भाव यहाँ
दर्प दिखाती, तेज धूप में, झुलस गये है पाँव यहाँ
सुबह-साँझ, एकाकी जीवन, पास नहीं है हमजोली
छूट गए चौपालों के दिन,
अपनों की मीठी बोली
भीड़ भरे, इस कठिन शहर में,
खुली हवा की बाँह कहाँ
ढूढ़ रहा मन फिर भी शीतल,
पीपल वाली छाँव यहाँ.

-- शशि पुरवार

कहानी

लखटकिया सूट

अंशू प्रधान

इस वर्ष की होली का आनंद राजपुर गाँव में अनोखा ही था सभी लोग गाँव के प्रधान गुलाबसिंह की सूझ बूझ का लोहा मान गये थे। लेकिन हर जगह जैसे रात के साथ दिन, सफेद के साथ काला होता है, वैसा ही यहाँ भी रहा। कुछ लोग कैसे भी खुश ही नहीं होते। गुलाब सिंह को इस बात की परवाह भी नहीं थी कि वो हर एक आदमी को खुश रखे। अभी गुलाब सिंह बच्चों को गुझिया बाँट ही रहे थे कि मंगल आ गया और आते ही गले लग गया। और कहने लगा- 'बधाई हो भैया! खूब पैसा मिला सबके दिन बहुर गए।'

गुलाबसिंह- 'हाँ मंगल, ये सब उस सूट का ही कमाल है।'

तब तक चमेली भी आ गयी और पूछने लगी, 'क्या कमाल हो गया? हम भी तो सुनें!' गुलाबसिंह बताने लगे कि कैसे उनका सूट दो करोड़ में बिका और कैसे उन्होंने पैसे की कमी को सर्वजन सुखाय हेतु दूर किया। लेकिन पुराना वक्त याद करके उनकी आँखें भर आई। किस्मत भी क्या क्या खेल दिखाती है? कहाँ कहाँ पहुंचाती है?

मंगल भी याद करने लगा कि दो साल पहले दोनों कोतवाली के चौराहे पर छोटी छोटी दुकानें चलाते थे। गुलाब सिंह की चाय की दुकान खूब चलती क्योंकि लोगों को दो पैसे में अच्छी चाय मिल जाती थी। गुलाबसिंह को लालच कभी नहीं रहा। जो मिले उसमें बस अपना गुजारा हो जाय और क्या करना है। ऐसी ईमानदारी की सोच रखने वाले की मदद तो स्वयं ईश्वर ही करता रहता है।

पता नहीं लोगो की दुआओं का नतीजा था या ऊपर वाले की इच्छा कि उन्हें ग्राम प्रधान होने का अवसर प्राप्त हुआ। पुराना प्रधान ठाकुर चन्दन सिंह पिछले दस साल से मनमानी कर रहा था। लोगों ने बड़ी उम्मीदों से चुना था कि वे बहुत पढ़े लिखे समझदार व्यक्ति हैं। गाँव का विकास हो जाएगा। मगर चंदन सिंह की कार्य शैली लोगों को परेशान कर रही थी। पैसा कहाँ जा रहा है? गाँव में कुछ भी सुबिधाएँ दिखाई क्यूँ नहीं दे रहीं हैं? आखिर प्रधान की व्यवस्था है ही इसलिए कि गाँव का विकास हो सके। मगर ऐसा शायद इसलिए नहीं हो रहा था क्योंकि चन्दन सिंह का लड़का बिगड़ता ही जा रहा था। आए दिन विदेश यात्रा पर। और भी कई बातें थी, जैसे चन्दन सिंह का किसी को जवाब नहीं देना। धीरे धीरे लोगों के मन में चन्दन सिंह के प्रति गुस्सा भर गया और जब ग्राम प्रधान का चुनाव आया तो लोगों ने गुलाब सिंह को चुनाव में उतारा। गुलाब सिंह की ईमानदारी की साख थी। लोगों ने आँख से देखा परखा था कि गुलाब सिंह ने कभी भी चार पैसे दबाने या छुपाने की कोशिश नहीं की। मेहनत में ही भरोसा रखा। जिन लोगों ने गुलाब सिंह को नजदीक से देखा था वो उसकी सूझ बूझ का भी लोहा मानते थे और जिसने देखा नहीं था वो भी देखना चाहते थे कि आखिर ऐसा क्या खास है गुलाब सिंह में?

गुलाब सिंह चुनाव जीत गए और सब की उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए, काम करने के लिए जी जान से जुट गए। गाँव की रंगत धीरे-धीरे बदलने लगी। गाँव में कई नयी योजनाएँ शुरू करीं, बिजली पानी की व्यवस्था दुरुस्त की, ग्राम विकास अधिकारी से मिलकर जो भी उन्नति के लिए किया जा सकता था किया।

लेकिन सबकी खुशी अलग होती है। गुलाब सिंह के जो विरोधी थे उन्हें ये बात बिलकुल हजम नहीं होती। वे किसी न किसी बहाने उनके कामों में कमियां निकालते रहते और उन्हें बदनाम करने की सोचते रहते, लेकिन गुलाब सिंह बे-परवाह अपने भलाई काम में जुटे रहते।

ग्राम विकास के लिया जो पैसा मिल रहा था वह पर्याप्त नहीं था। गुलाब सिंह चाहते थे कि गाँव के बच्चों के लिए, गाँव के भीतर ही या नजदीक ही अच्छा स्कूल हो। साथ ही गाँव वालों के लिए एक बढ़िया चिकित्सालय भी। मगर पैसा कहाँ से आए! तभी, बगल के गाँव सुमेरपुर में गाँव के मुखिया के बेटे की शादी का बुलावा आया और गुलाब सिंह ने मंगल को बुलाकर समझाया कि एक योजना है। अगर वो साथ देगा तो योजना सफल हो जाएगी और गाँव के लिए पैसा भी आ जाएगा।

सज्जन के लड़के के विवाह में जब गुलाबसिंह पहुंचे तो उनकी आन-बान देखकर सबकी आँखें फटी की फटी रह गई। विरोधियों को तो देख कर चक्कर आ गया। सबसे खास बात थी गुलाब सिंह का सूट! लोग दूल्हे को कम और गुलाबसिंह को ज्यादा देख रहे थे। कोई कहता सूट पर सोने के तार से कसीदाकारी की गयी है, कोई कुछ, कोई कुछ। तब तक खबर आ पहुंची की गुलाबसिंह ने विवाह के लिए एक लाख का सूट बनवाया अपनी शान दिखाने के लिए। इतनी फिजूलखर्ची, इस चाय वाले की हैसियत तो देखो। है तो चाय वाला ही, आज दिन बदल गए तो देखो। विरोधियों को बैठे बिठाये संजीवनी मिल गई। बात फैलाई गई कि विकास के लिए जो पैसा आया उसे खुद ही डकार लिया। चारों तरफ ग्राम प्रधान की बुराई होने लगी। यहाँ तक कि तमाम टीवी चैनल वाले भी चीखना शुरू कर दिये कि ये व्यक्ति गाँव के विकास के पैसों का गलत उपयोग कर रहा है। बार बार दिखाते वही गुलाब सिंह और उनका सूट!

लोग गुलाबसिंह के पीछे पड़ गए। ऐसी बात सुनके गुलाबसिंह को बहुत दुख होता। अंततः उन्होंने निर्णय लिया कि वो सूट अपने पास रखेंगे ही नहीं। उन्होंने तय किया कि सूट की नीलामी करा दी जाये और नीलामी की रकम को स्कूल व अस्पताल बनाने में खर्च किया जायगा। सूट को नीलामी के लिए लगा दिया गया और एक एनआरआई प्रशंसक ने दो करोड़ में उनका सूट खरीद लिया।

सूट बिक गया मगर मंगल, किशोरी, चमेली सब बहुत दुखी थे कि अपने को कष्ट देकर गुलाबसिंह ने ऐसा क्यूँ किया? तो गुलाबसिंह बताने लगे कि अब वह इस पैसे का सदुपयोग करेंगे, तो उन्हे आत्मिक सुख मिलेगा। तभी मंगल से सज्जनसिंह पूछ बैठे कि सारा माजरा क्या था? मंगल ने बताया कि कैसे योजना बनाई। गुलाबसिंह भलीभाँति जानते थे की विरोधियों को उनका कोई काम पसंद नहीं है, मौके की तलाश में रहते हैं, कब मौका मिले और गुलाबसिंह की गर्दन दबोच लें।

गुलाबसिंह ने अपने कपड़ा व्यापारी मित्र गनपत राय से एक सूट के लिए कहा और बोले कि वह धीरे धीरे पैसा दे देंगे। चूंकि गनपत राय गुलाबसिंह को बहुत मान देते थे और गुलाबसिंह ने पहली बार कुछ कहा था तो बोले की सूट तो मैं बनवा दूंगा लेकिन पैसा एक न लूँगा। बस तुम्हारी मित्रता ही मेरे लिए सब कुछ है। बस, फिर जब गुलाबसिंह सूट पहन कर निकले, तभी मंगल ने जाकर विरोधी खेमे तक ये खबर पहुंचा दी की गुलाबसिंह लाखों का सूट पहने घूम रहे हैं, अपनी शान दिखाने के लिए! उन्हें गाँव वालों की चिन्ता नहीं है। बस तिल का ताड़ बनने में क्या देर लगती है बात आग की तरह फैली। लेकिन इतना भान गुलाब सिंह को भी न था की उन्हें सूट के इतने अच्छे पैसे मिलेंगे।

तब तक मंगल ने एक गुझिया गुलाबसिंह को खिलाते हुए कहा बोलो भाइयो- 'लखटकिया सूट की जय! लखटकिया सूट की जय!' ■

(पृष्ठ १४ का शेष

साक्षर बनेगा भोला

मुझसे धोखेबाजी कर रहा है। मैंने इसके यहाँ सौ रुपए उधार किया था, पर अब यह मुझसे दो सौ रुपए मांग रहा है। इसने मुझसे कागज पर अंगूठे का निशान भी लगवा लिया है।'

मुखिया जी ने श्याम की ओर देखकर कहा- 'क्यों रे श्याम, क्या भोला का आरोप सही है? सच बता वरना तेरी दुकान बन्द करवा दूँगा।'

डर के मारे श्याम ने अपनी गलती स्वीकार कर ली। मुखिया ने समझाते बुझाते हुए श्याम को चेतावनी देकर छोड़ दिया। फिर भोला को समझाते हुए कहा- 'भोला, कहीं न कहीं तुम भी इस मामले में दोषी हो।' आखिर तुमने बिना जाने समझे कागज पर अँगूठा क्यों लगाया। अगर तुम पढ़े लिखे होते तो यह नौबत नहीं आती। तुम्हारे अनपढ़ होने का फायदा श्याम जैसे लोग उठाते हैं। मेरा सुझाव है इस घटना से सबक लेते हुए तुम पढ़ाई करना शुरू करो और साक्षर बनो। गाँव में पढ़ाई की सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। भोला की समझ में अब पढ़ाई का महत्व आ चुका था। उसने निश्चय किया कि वह भी पढ़कर साक्षर बनेगा। ■

लम्बी कहानी (दूसरी और अंतिम किस्त)

रिश्ता प्यार का

मनजीत कौर, लंदन

जाने क्यों किरण को ये सब पसंद नहीं था, बच्चों का दीपिका को छोटी माँ पुकारना, हर वक्त उसके आस पास मंडराते रहना उसे खलता था। पता नहीं उसके दिमाग में किसने जहर घोल दिया था, कि एक दिन बच्चे दीपिका के लिए अपने माँ बाप को छोड़ जाएंगे और बस दीपिका को ही माँ मानेंगे। वो बच्चों को उसके पास जाने से रोकने लगी। बच्चों और दीपिका के लिए ये दूरी असहनीय थी पर किरण की नफरत उनके प्यार के बंधन को तोड़ नहीं पाई। बच्चे माँ से नजर बचाकर अपनी छोटी माँ से मिल लिया करते।

किरण बात-बात पर दीपिका से झगड़ती और अपना परिवार अलग बसाने की धमकी देती। किरण तो वैसे भी सिर्फ खुद को ही घर की बहू मानती थी, घर को दो-दो चिराग जो दिए थे उसने, इस लिए उसका पलड़ा भारी था। वैसे भी घर में हर दिन त्योहार पर किरण की ज्यादा पूछ होती, दीपिका को हर कार्य में नजरअंदाज किया जाता। किरण अपनी मनमानी करने लगी थी हर वक्त वरुण को, अरुण और दीपिका के खिलाफ भड़काती रहती। घर में क्लेश इतना बढ़ा कि एक दिन वरुण ने दीपिका और अरुण को बहुत बुरा भला कहा। दोनों भाइयों में जम कर लड़ाई हुई।

श्रद्धा देवी ने भी दीपिका को सुना दिया, कि तू तो हमें घर का चिराग न दे सकी जिसने दिए है, क्या उसे भी घर से निकाल दें, इससे अच्छा है कि तुम दोनों ही अलग हो जाओ। हर दिन के क्लेश को दूर करने के लिए अरुण ने एक मकान किराये पर लिया और दोनों वहां रहने चले गए। वहां सेटल होने में कुछ वक्त लगा, पर इस बीच वो माता-पिता से मिलने जरूर जाते। दोनों को घर में देख बच्चे भी बहुत खुश होते। अब किरण ने सास ससुर से भी क्लेश शुरू कर दिया, अब वह अलग गृहस्थी बसाना चाहती थी।

बहू-तो-बहू, उनके बेटे वरुण ने भी उन के साथ बुरा व्यवहार शुरू कर दिया था। श्रद्धा देवी ने पहले ही अपने जेवर अपने पोते-पोती के नाम कर दिए थे, दीनानाथ ने जमापूंजी भी बच्चों की परवरिश और पढ़ाई के लिए लगा दी। अब उनके पास यह घर ही बचा था। वरुण और किरण दोनों उसे हथियाने की फिराक में थे। अपने ही बेटे के हाथों ऐसा धोखा और बेरुखी का असर श्रद्धा देवी की मानसिक स्थिति पर इतना पड़ा कि इस सदमे से वे बीमार रहने लगीं। दोनों पति-पत्नी की हालत दयनीय हो गई थी। किरण सास-ससुर दोनों की कोई देखभाल न करती, श्रद्धा देवी दीपिका पर किये बुरे व्यव्हार को याद करके पछताती।

एक दिन बच्चों ने रोते हुए दीपिका को दादा-दादी पर हो रहे अत्याचार के बारे में बताया। अरुण और दीपिका अपने माता-पिता की ये दशा देख न पाए। उनकी किरण और वरुण से इस बारे में काफी बहस हुई पर कोई नतीजा न निकलने पर वो अपने माता-पिता को अपने साथ ले गए। दीपिका उन दोनों की जी-जान से सेवा करने लगी। एक दिन दीपिका को इस तरह सेवा करते देख श्रद्धा देवी की आँखों से आंसू बहने लगे दीपिका को गले से लगा कर बोली "मुझे माफ करदे बेटी, लोगों की बातों में आकर मैंने तुझे बहुत दुःख दिए, तुझे न जाने क्या-क्या कहती रही! तेरी तकलीफ को कभी नहीं समझी, पर तू फिर भी मुझे सम्मान दे रही है, मेरी सेवा कर रही है। दीपिका ने श्रद्धा देवी की आँखों से आंसू पोछे और बोली, "माँ आप की सेवा करना तो मेरा फर्ज है आपने मुझे गले लगा लिया, आपका प्यार पाकर मुझे सब कुछ मिल गया।"

अरुण और दीपिका की सेवा और प्यार ने श्रद्धा देवी को एक दम स्वस्थ कर दिया। श्रद्धा देवी अब समझ गयी थी कि अपनों की खुशी से बढ़कर और कुछ नहीं होता। अरुण और दीपिका दोनों को पास बिठा कर बोली- "अपनी इच्छा को पूरा करने की जिद्द में मैंने तुम दोनों को बहुत दुःख दिया। मैं समझती थी कि खून के रिश्ते से बड़ा कोई रिश्ता नहीं होता पर जो वर्ताव मेरे अपने बेटे वरुण ने मेरे साथ किया उसके बाद मेरी ये सोच बदल गई है, कि खून के रिश्ते से बड़ा रिश्ता प्यार का रिश्ता होता है। दीपिका ने मुझे बेटी से बढ़कर प्यार दिया अब मेरा भी फर्ज बनता है की मैं अपनी बेटी को खुशियां दूं। अब और देर न करो, जाओ अपनी खुशियां घर ले आओ।

माँ और पिता जी से आज्ञा मिलने पर दोनों अनाथ आश्रम गए और वहां से एक नन्हा फरिश्ता गोद ले आये उसका नाम कृष्णा रखा गया। ये दीपिका का कृष्णा ही तो था, जिसने यशोदा माँ की दुनिया को खुशियों से भर दिया। उसके आने की खुशी में बहुत बड़ी पार्टी दी गयी। सभी रिश्तेदार-दोस्त उनकी खुशी में शामिल हुए। सभी की ओर से उन्हें बधाइया मिलीं। अरुण और दीपिका की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था। दीपिका नन्हे-से फरिश्ते को सीने से लगा कर अपनी सारी ममता उस पर न्योछावर कर रही थी। इस नन्हे फरिश्ते के आने से उसकी अँधेरी दुनिया में उजाला आ गया था, वर्षों से सूने घर में किलकारियाँ गूंजने लगीं।

श्रद्धा देवी और दीनानाथ अपने बच्चों की खुशी और अपने फैसले पर बहुत खुश थे। सब से बड़ी खुशी इस बात की थी कि उनके इस फैसले से ये प्यार की पक्की डोर और भी मजबूत हो गई थी। प्यार की यह पक्की डोर भी बाकी सबके अलावा वरुण और किरण को तो नहीं ही बांध सकी थी, लेकिन चाचा-चाची के निमंत्रण की डोर से बंधे हुए दीपिका के चहेते बलराम और राधिका यानी चीनू और स्वीटी, नन्हे कृष्णा के दर्शन के आकर्षण से, खिंचे हुए चले आए थे। (समाप्त)

साक्षर बनेगा भोला

निवेदिता चतुर्वेदी

एक गांव मे श्याम की किराने की दुकान थी। वह धूर्त था। गाँव के ज्यादातर निवासी अनपढ थे। श्याम इसका फायदा उठाता था। कभी दुकान पर आये ग्राहकों के सामान का वजन कम कर देता तो कभी हिसाब में गड़बड़ी कर देता। बेचारे गाँव के निवासी उसकी मक्कारी को समझ नहीं पाते थे।

एक दिन भोला दुकान पर कुछ खरीदने आया। श्याम ने सारा सामान पैक कर दिया। 'कुल कितने रुपये हुए?' -भोला ने सामान समेटते हुए पूछा।

'पाँच सौ रुपए।'- श्याम ने जोड़कर बताया।

'श्याम भाई, चार सौ रुपये ले लो, सौ रुपए मैं कल दे दूँगा।' -भोला कहा।

'मैं किसी को उधार सामान नहीं देता।' -श्याम ने कहा।

'मेरा विश्वास कीजिए।'-भोला ने निवेदन किया।

'ठीक है, अगर तुम कह रहे हो तो मैं मान लेता हूँ, पर मेरी एक शर्त है।' -श्याम ने कहा।

'कैसी शर्त?' -भोला ने कहा।

'क्या है कि रुपये-पैसे का मामला है इसलिए तुम एक कागज पर लिख कर दो कि कल तुम मुझे बाकी के रुपये चुका दोगे।' -श्याम ने कहा।

'पर मुझे तो लिखना-पढ़ना नहीं आता।' -भोला ने विनम्रता से कहा।

'ठीक है, मैं लिख देता हूँ, तुम सिर्फ अपने अँगूठे का निशान लगा दो।' -श्याम ने कहा।

श्याम ने कागज पर कुछ लिख कर भोला की ओर बढाया। भोला ने नीचे अँगूठे का निशान लगा दिया। दूसरे दिन भोला बकाया पैसा लौटाने दुकान पहुँचा।

'ये रहे बाकी के सौ रुपए।' -भोला ने पैसा देते हुए कहा।

'पर ये तो सौ रुपए हैं।' -श्याम ने कहा।

'हाँ तो, सौ रुपए ही बाकी थे।' -भोला ने कहा।

'नहीं तुम्हारे तो दो सौ रुपए बाकी थे, तुमने तो मुझे लिखकर रुपये देने का वादा किया था, देखो सबूत।' - श्याम ने कहा कागज दिखाते हुए।

भोला ने श्याम को ज्यादा रुपये देने से इनकार कर दिया बात बढते-बढते गाँव के मुखिया तक पहुंच गई। भोला ने हाथ जोड़कर कहा- 'मुखिया जी श्याम ने

(शेष पृष्ठ १३ पर)

लम्बी कहानी (पहली किस्त)

ममत्व से भरी सुरिचा

सौरभ कुमार दुबे

धर्मप्रकाश के दो बेटे थे, आलोक और आदेश। दोनों की शादी हो चुकी थी। धर्मप्रकाश और उनकी पत्नी सलिला देवी दोनों के व्यवहारों में बड़ा अंतर था। आलोक की पत्नी थी सीता जिसके दो बच्चे थे गुल्लू और बिन्नी, जबकि आदेश की शादी को लगभग ४ साल हो गए थे और उसकी पत्नी सुरिचा को एक भी औलाद नहीं हुई थी। बहुत सी जगह इलाज कराया और वैद्य हकीमों से जड़ी बूटियाँ भी लीं‍ए लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। धर्मप्रकाश मानते थे कि जब ऊपरवाले की कृपा होगी, तभी उनके छोटे बेटे का घर रोशन होगा, लेकिन सलिलादेवी के विचार बिलकुल अलग थे। उनका कहना था कि मायके वालों ने उन्हें किसी ना किसी तरह अँधेरे में रखा। उसके लड़के में कोई कमी नहीं है, लेकिन सुरिचा में है। विधाता को क्या मंजूर है क्या नहीं, ये नहीं पता, लेकिन सुरिचा बाँझ है!

ये बातें वो खुलेआम गुस्सा आने पर सुरिचा को सुनातीं, तो वो सुन लेती और कभी-कभी कोने में जाकर सिसकियाँ भरते हुए चुपके चुपके रो लेती। लेकिन जब भी गुल्लू और बिन्नी उसके पास आते, तो उन्हें दुलार देती। सीता को इससे कोई आपत्ति नहीं थी। वो एक कामकाजी औरत थी। आलोक एक बैंक में क्लर्क थे, और आदेश किसी दूरसंचार विभाग के कर्मी थे। सुरिचा माता जी की कही हुई बातें कभी आदेश से नहीं कहती थी। मोहल्ले की औरतें सुरिचा से कभी सहानुभूति रखतीं, तो कभी अलग ही व्यवहार करतीं। उनका व्यवहार कभी एक जैसा नहीं था। कोई उसे साहस बंधाती, तो कोई सासू माँ से उलटी सीधी बातें करती।

बड़ा अजीब सा परिवेश था, लेकिन सुरिचा खुश थी क्यूंकि आदेश को सुरिचा से इस बात की कोई शिकायत नहीं थी। जब कभी सुरिचा उदास हो जाती तो आदेश ही उसे प्यार से शांत करते थे। सुरिचा के पास उन्होंने एक कपडे की नन्ही सी गुडिया ला छोड़ी थी, जब कभी सुरिचा के मन को लगता कि उसके जीवन में एक नन्ही सी परी को आना चाहिए तो वह उस गुडिया को लेकर अपने कमरे की खिड़की के पास बैठ जाती, अम्बर में उड़ते बादलों को देखती और बार बार सोचती कि मेरी परी कैसी होगी! फिर माँ जी की आवाज आती और फिर उन सपनों को वहीं छोड़कर दौड़ी दौड़ी नीचे जाती, जहाँ उस पर सारे काम का बोझ लाद दिया जाता।

सीता घर के बाकी काम देखती थी। सुरिचा से उसकी बातचीत बहुत सीमित थी, लेकिन अक्सर जब भी वो बात करती, तो अपने मायके वालों की बुराईया बताती रहती, जो सुरिचा को बिलकुल पसंद नहीं था। वो एक छोटे से शहर में पढ़ी लिखी लड़की थी, जीवन में कुछ कर गुजरने का सपना उसने भी कभी देखा था। उसे किताबें बहुत प्रिय थीं, यहाँ वो हमेशा किताबों पर लगी रहती। उसने कभी बैंकिंग की परीक्षा दी कभी प्रतियोगी परीक्षा निकालने के तमाम प्रयास किये, लेकिन घर के कामों का बोझ और उस पर जल्दी शादी का बोझ सारे सपनों को ले डूबा।

और अब उसके जीवन में नयी उलझन थीं बच्चे, जिसके लिए रोज सासू माँ कोई ना कोई नया ताना जरुर देती थीं। अब उसे इन सबकी आदत हो चुकी थी, लेकिन कभी कभी उसके आंसू फूट ही पड़ते थे। गुल्लू और बिन्नी उसे जान से भी ज्यादा प्यारे लगते थे, जिसमें बिन्नी का तुतलाकर उसे ताती (चाची) बोलना बहुत अच्छा था। कभी कभी वही सुनकर उसके आंसू निकल आते और फिर वो बिन्नी को गले लगा लेती। सीता को कभी-कभी डर रहता कि कहीं सुरिचा उसके बच्चों के साथ कुछ कर ना दे। वो बड़ी शंकालु सी हो चली थी, उसे सुरिचा में अपना प्रतिद्वंदी अधिक नजर आता था।

जब बच्चे धीरे-धीरे बड़े होते हैं तो अपनी माँ से दूर होते जाते हैं और बाकी की दुनिया में घुलने मिलने लगते हैं और ऐसे समय में उन्हें एक अच्छे दोस्त की जरूरत होती है, जो उनके साथ खेले। गुल्लू और बिन्नी के लिए उनकी चाची सबसे अच्छी दोस्त थी। कभी कभी माता जी सुरिचा को बाजार भेज देतीं ये कहते हुए कि घर का सारा काम तो मेरी बहु सीता करती है और तू घर में पड़ी रहती है, जा जाकर कुछ सब्जी भाजी ले आ!! सुरिचा तैयार हो जाती, लेकिन इन दिनों बच्चे भी उसके साथ चलने की जिद करते, सीता बच्चों को समझाती कि वो अभी छोटे हैं जब बड़े हो जायेंगे तब वो भी चाची के साथ जा सकेंगे!

ये देखकर भी कभी कभी सुरिचा भावुक हो जाती और फिर चुपचाप निकल जाती। बच्चे अब सुरिचा के साथ अधिक घुलने मिलने लगे थे, उन्हें बहुत अच्छा लगता जब वे अपनी चाची के साथ खेलते। खासकर बिन्नी उस नन्ही सी गुडिया के साथ खेलती, तो सुरिचा को और भी अधिक आनंद की अनुभूति होती। वो सोचती जीवन में उसने ऐसे ही आनंद की कल्पना की थी एक नन्ही सी परी उसके जीवन में आये, जिसके कोमल कोमल हाथ हों, जिसकी चमकती सी आँखें हों, एकदम मुलायम और सुंदर सी परी। लेकिन फिर खयाल आता ये परी तो पराई है, और तभी वो और लाड़ से भर आती और बिन्नी को गले लगा लेती!

उस दिन सीता और आलोक को कहीं शादी में जाना था, सफर लम्बा था इसीलिए रात से पैकिंग चालू थी। साथ ही धर्मप्रकाश जी और सलिला भी उनके साथ जा रहे थे, इधर आदेश बाबु सरकारी काम से शहर से बाहर गए हुए थे, गुल्लू और बिन्नी आज भी खेल में मगन थे, सीता आई और दोनों को साथ चलने के लिए कहा, गुल्लू और बिन्नी खेल में लगे रहे मानो जैसे उनपर कोई असर ही नही था, सुरिचा ने दोनों को तैयार होने को कहा और उन्हें नहला धुलाकर तैयार भी कर दिया।

(अगले अंक में जारी...)

(पृष्ठ ८ का शेष)

रधिया एक देवदासी

बात नहीं की, सीमा से भी नहीं और न खाना खाया, न कमरे से बाहर निकली। रात में तय समय पर संपत कमरे में आया। उसने सीमा को इशारा किया, सीमा ने रधिया से कहा कि वह तैयार हो जाये। कुछ कपडे रख ले उसे शहर इलाज के लिए जाना है। रधिया चुपचाप जैसा सीमा कह रही थी वैसा करती जा रही थी।

थोड़ी में वे तीनों कार में बैठे मंदिर से दूर जा रहे थे, कार संपत चला रहा था, सीमा और रधिया पीछे बैठे थे। रधिया कार की खिड़की से बाहर झांक रही थी, कई दिनों बाद आज उसे खुले आसमान के दर्शन हो रहे थे। सड़क रेलवे स्टेशन के पास से गुजरती थी, रेल की पटरियां सड़क के साथ साथ चल रही थी। एक रेलगाड़ी स्टेशन पर खड़ी थी जो शहर की तरफ ही जा रही थी।

रधिया अब भी बाहर झांके जा रही थी, कार स्टेशन को पीछे छोड़ती हुई आगे निकल गई। अभी आधा सफर ही तय किया था कि रधिया ने सीमा से कहा की उसके पेट में दर्द हो रहा है और उसे टायलेट जाना है। संपत ने कार रोक ली, सीमा और रधिया दोनों उतर गए। संपत कार में ही बैठे-बैठे बोला- 'जा जल्दी से वापस आ।'

रधिया कार से थोड़ी दूर रेल की पटरी के पास आके बैठ गई, सीमा उसे कुछ दूर खड़ी थी। दूर रेलगाड़ी की आवाज सुनाई देने लगी थी, आवाज पास आने लगी थी। रधिया अब भी उसी मुद्रा में बैठी थी सीमा दूर खड़ी थी, कुछ ही मिनटों में रेलगाड़ी सामने से आती हुई दिखाई दी। अचानक रधिया की आँखों में चमक आ गई, उसने एक बार सीमा की तरफ देखा सीमा की नजरे उसकी नजरों से मिलीं।

कुछ इशारा हुआ कि अचानक रधिया उठकर आती हुई रेलगाड़ी की तरफ भागने लगी। सीमा ने उसे थोड़ी दूर जाने दिया फिर जोर-जोर से आवाज लगानी शुरू कर दी। संपत भी कार से उतर के आवाज की तरफ दौड़ने लगा उसने देखा कि रधिया पटरी पर रेलगाड़ी की तरफ दौड़ी चली जा रही थी। वह उसके पीछे भागा पर तब तक देर हो चुकी थी, रधिया रेलगाड़ी से टकरा चुकी थी, हवा में उसके टुकड़े बिखर गए थे। रधिया मुक्त हो चुकी थी। सीमा और संपत वहीं जड़ खड़े हुए थे। थोड़ी देर बाद उन्हें होश आया तो वे कार लेकर तुरंत मंदिर की तरफ दौड़ लिए।

कुछ दिनों बाद संपत फिर रधिया के गाँव में था, गितवा को लेने के लिए। (समाप्त)

दिल से उठते हैं ये बुलबुले/एहसासों का सैलाब लिये
उड़ना चाहते हैं ये/खुले आसमान पर
मगर दिल के बंद दरवाजों से टकरा/चटक जाते हैं
और हम लग जाते हैं/उन्हें समेटने
कहीं मैले न हों/या कोई झांक न ले इनमें
जानते हो ना/दीवारों के भी कान होते हैं
मगर कुछ बच पाते हैं/और कुछ बिखर जाते हैं
और हम खो जाते हैं/झोली में बचे एहसासों में
और बह जाते हैं/भावनाओं के दरिया में
दो किनारों की धारा जैसे/एक किनारा कुछ मिठास लिये
दूसरा दर्द का एहसास लिये
अनजाने लग जाते हैं किसी एक किनारे
फिर शुरू होता है
एक बवंडर तेज गर्म हवाओं का
या पुरवाई सी ठंडी घटायों का
और हम जी लेते हैं वोह लम्हा
क्यों कि जी चुके हैं हम हरदिन
ये अनगिनित बार तेरे एहसास

-- मोहन सेठी 'इंतजार', आस्ट्रेलिया

कुंडलियां

१ कठिनाई के सामने, झुके न जिनके माथ
जोड़े हैं उनको सदा, किस्मत ने भी हाथ
किस्मत ने भी हाथ, बढ़ाकर दिया सहारा
मंजिल ने खुद राह, दिखाकर उन्हें पुकारा
खिले खुशी के फूल, सरस बगिया मुस्काई
सदा हुई निर्मूल, टिकी है कब कठिनाई

२ मिलता कब किसको यहाँ, केवल सुख उपहार
ग्रीष्म, शीत, पतझर सहें, मिलती तभी बहार
मिलती तभी बहार, मुदित मन मानस हर्षे
तपें नदी-नद, ताल,
तभी घन घिर-घिर वर्षे
सुंदर मधुर फुहार,
सकल वन उपवन खिलता
तप बिन वर उपहार,
भला कब किसको मिलता

-- डा. ज्योत्स्ना शर्मा

कविता

ये जिंदगी भी मेरी अचानक मचल गई,
ये उम्र चारू चेहरें की खातिर फिसल गई,
मुझको तो उसकी आँखों ने मदहोश कर दिया,
नशा प्यार का देकर मेरी जाना किधर गई
फिर जिंदगी भी मेरी अचानक सँवर गई,
सूरज की किरणें
खुशियाँ बनकर बिखर गई,
मेरी जान वो नादान को
ढूँढा कहाँ कहाँ,
वो आकाश की परी थी
मेरे घर उतर गई

-- नीरज पान्डेय

लिखती हूँ कलम से/स्याही आंसूओं की होती है
आज तेरे हर जुल्म पर/मेरी आंख रोती है
कभी सोचा न था/हमसफर दगा करेगा
मुझे छोड़ विरानो में/खुद किसी और को पसंद करेगा
तुम्हारी इसी शिक्षा को अपना लिया/दामाद ने
बेटी को घर छोड़ गया/खुद दूसरी ले आया
पूछने पर बोला/यही रीत हैं इस घर की
उसे ही निभा रहा हूँ/तुम अपनी बेटी अपने पास रखो
मैं ससुर के साथ डिस्को जा रहा हूँ
अब हम माँ बेटी दोनो रोती हैं
बंद कमरों में बस सिसकियों की आवाज होती है
बेटा भी चल पड़ा तुम्हारे रास्ते पर/अब बहू भी रोती है
बस सिसकियों की आवाज कुछ ज्यादा होती है
मेरा नहीं तो इन बच्चियों का सोचो/बंद कर दो ये तमाशा
वरना मैं अगर बोल पड़ी/कहीं मुंह न दिखा पाओगे
बेटे और दामाद के साथ
कहीं जेल में पड़े नजर आओगे
नहीं सहा जाता मुझसे
औरतों पर ये जुल्म
अब रोक लो खुद को वरना
हम औरतो को नहीं रोक पाओगे

-- रमा शर्मा, कोबे, जापान

गीत

मन को अपने सुमन करो तुम
कवि वर एसा सृजन करो तुम
यह दुनिया एक रैन बसेरा, दो पल है खुशियों का डेरा
देख चन्द्र छिप गया अँधेरा, सूर्य किरण ने किया सवेरा
मानव मन ही देवालय है, ध्यान लगाकर भजन करो तुम
बस एसे ही लिखते रहिये, अपने मन की कहते रहिये
प्रतिक्रिया को प्यार समझिये, तीखी तो परसाद समझिये
श्रोता पर ही कवि का जीवन, लिखने में ही मगन रहो तुम
बूँद पसीने की कर चंदन
अन्तरमन से कर लो वंदन
प्रभु से तुम करलो गठबंधन
तज दो सारे दैहिक बंधन
इस शरीर की समिधा करलो
मन में अपने हवन करो तुम
कविवर एसा सृजन करो तुम

-- लता यादव

अगर न बोले तो गूँगा/कम बोले तो मुंहचोर
अधिक बोले तो- बतोड़/आखिर करे भी तो क्या करे
सिवाय करते मसखरे मुंहजोर
दसों दिशाओं में चल रहे मसखरे
बेबस व्यवस्था और
इनके नाज-नखरे
आम-आदमी कौड़ियों से भी
बदत्तर बिक रहे।

-- श्याम स्नेही

फागुन की झोली से उड़ने लगे रंग
मौसम के भाल पर इन्द्रधनुष चमके
गलियों और चौबारों के/मुख भी दमके
चूड़ी कहे साजन से मै भी चलूँ संग
पानी में घुलने लगे/टेसू के फूल
नटखट उड़ाते चलें पांवो से धूल
लोटे में घोल रहे/बाबा आज भंग
सज गई रसोई आज पकवान चहके
हर घर मुस्काते चूल्हे हौले से दहके
गोपी कहे कान्हा से न करो मोहे तंग

-- रचना श्रीवास्तव, अमेरिका

क्षणिकायें

१. ठोकर लगी तो पत्थर औरत बन गया
यहीं से सिलसिला शुरू हुआ
औरत को ठोकर में रखने का
फिर सभी ने मान लिया/शापित है स्त्री

२. यूँ ही नहीं पूजा जाता कोई
ना जाने कितने जख्म/मिलते हैं पत्थर को
पत्थर से मूर्ति बनने तक
तब जाकर वो
मंदिर में बिठाई जाती है

३. मेरी आँखें नम हुई हैं
तेरी आँखें नम देखकर
लगता है मुझ में कहीं
इन्सान जिन्दा है अभी

-- मीनाक्षी भालेराव

गीत

बीते दिन फिर लौट रहे हैं लेकर मीठी-मीठी यादें
इन यादों में क्या-क्या है वो, आओ तुमको आज बता दें
मेरे पास तुम्हारा आना,
फिर घंटों-घंटों बतियाना
और हमारी बातचीत को,
मुस्काकर 'सत्संग' बताना
वो प्यारा सत्संग हमारा बोलो क्या हम उसे भुला दें
बीते दिन फिर लौट रहे हैं लेकर मीठी-मीठी यादें
कोई पल अपना होता है,
कोई पल सपना होता है
कोई पल ऐसा भी होता,
जिसमें बस तपना होता है
आओ सारे पल समेटकर नये ढंग से उन्हें सजा दें
बीते दिन फिर लौट रहे हैं लेकर मीठी-मीठी यादें
वे दिन जैसे चाँदी-सोना
वे दिन जैसे जादू-टोना
सोते-जगते हरपल केवल
इक-दूजे में खुद को खोना
फिर वैसा ही साथ निभाकर
वे सारे पल फिर दुहरा दें
बीते दिन फिर लौट रहे हैं लेकर मीठी-मीठी यादें

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

सबै भूमि गोपाल की

जवाहर लाल सिंह

आज से लगभग पचास साल पहले हमारे गांवों में खेतों के बड़े बड़े प्लॉट होते थे. कोई भी प्लॉट एक बीघे से कम का नहीं होता था. बरसात में ये सभी खेत पानी से भरे होते थे. पानी निकलने के बाद सिर्फ एक फसल रब्बी की होती थी. रब्बी यानी मूलतः दलहन-तिलहन की पैदावार मूंग, मसूर, मटर,चना, खेसारी, तीसी, सरसो, अरहर, आदि. अगर बाढ़ में नहीं डूबा तो कुछ धान मकई, ज्वार आदि भी हो जाते थे। तब सभी लोग तीन-चार पुत्र-पुत्रियाँ पैदा करते ही थे. ताकि कृषि कार्यों में मदद मिल सके, पशुधन की भी सेवा ठीक से हो और अगर किसी से भिड़ने की नौबत आ गयी तो तीन चार लाठियां भी घर से ही निकल जायें. कालांतर में लाठियां आपस में भी भंजने लंगी और खेतों के टुकड़े होते गए प्लॉट छोटे होते चले गए. पहले खेतों की जुताई हल बैलों से होती थी, फिर ट्रैक्टर से। जब खेत टुकड़ों में बंटने लगे ट्रैक्टर से जुताई में दिक्कत भी होने लगीए तो 'पावर टिलर' या कुदाल का ही सहारा रहा.

खेतों के टुकड़े होते गए परिवार की जनसंख्या बढ़ती गयी, उपज बढ़ाने के लिए फर्टिलाइजर का इस्तेमाल होने लगा. फलतः खेतों की उर्वरा शक्ति भी अंततः कम होती गयी. अब भरण पोषण के लिए घर से बाहर निकालना अपरिहार्य हो गया. अब एक बेटा या तो नौकरी करे या खेती करे, संग रहना जरूरी नहीं लगा. अपने अपने स्वार्थ अपना अपना घर. आँगन में भी दीवारें बनने लगी.

फिर सरकारी योजनाएँ गांवों तक पहुंचने लगी. रेडिओ में कृषि सम्बन्धी जानकारी दी जाने लगी, बीच बीच में लोकगीतों द्वारा मनोरंजन किया जाने लगा. अब भूमि से मोह कहाँ, लोग गांव घर छोड़ शहरों में रहने लगे, भले ही फुटपाथ पर ही क्यों न सोना पड़े! विकास के लिए सरकार को किसानों की ही जमीन चाहिए. किसान को चाहिए सड़क, बिजली पानी की सुविधा. कारखाने अगर बनेंगे तो नौकरियां मिलेंगी. बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा. अब 'उत्तम खेती, मध्यम बान, अधम चाकरी, भीख निदान' का जमाना गया अब तो भीख मांगना ही उत्तम हो गया. अब तो लोग मूल्यवान कपडे पहनकर मूल्यवान पात्र लेकर बैंकों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से भी भीख (कर्ज) लेने लगे। व्यापार का पर्ग भी प्रसस्त हो गया. आम आदमी अपनी जरूरत के सामन बाजारों से खरीदने लगा.

अब वह दिन दूर नहीं कि हम अपने ही खेतों में मजदूरी करें और उसके उत्पाद को कच्चा माल की तरह उद्योगपतियों को बेचें और उनसे तैयार माल अपने उपयोग के लिए खरीदें. कुटीर उद्योग में फायदा नहीं है, क्योंकि मंझले और बड़े उद्योगों का उन पर कब्जा होने लगा है. झाड़ू, रस्सी से लेकर खाद्य सामग्री भी ब्रांडेड कंपनियां बनायेगी और हम पैक्ड फूड पर निर्भर होंगे. इसे ही तो कहते हैं- विकास! और विकास के लिए चाहिए भूमि, पैसा, कच्चा माल और समर्पित मजदूर. तो भूमि अधिग्रहण भी तो करना पड़ेगा. भूमि अधिग्रहण के लिए नित्य नए कानून बनाने पड़ेंगे जिससे आपका और देश का विकास हो सके.

भूमि अधिग्रहण कानून पर बोलते हुए श्री मोदी ने संसद में कहा- 'मैं नहीं मानता कि यह कानून गलत है, लेकिन कुछ गलतियां रह गई हैं। क्या इसे ठीक करना हमारी जिम्मेदारी नहीं है? आप इस कानून के लिए श्रेय लीजिए, मुझे इससे समस्या नहीं है। मैं खुद सार्वजनिक रूप से आपको श्रेय दूंगा। आप बताइए भूमि अधिग्रहण विधेयक में किसानों के खिलाफ अगर एक भी चीज है तो मैं उसे बदलना चाहता हूं।' उन्होंने कहा कि सेना के प्रतिष्ठान कह रहे हैं कि हम यह कैसे लिखकर दे सकते हैं कि उस जमीन पर क्या करने जा रहे हैं, फिर तो बेहतर होगा कि पाकिस्तान को ही बता दें कि कहां क्या ठिकाना बना रहे हैं।

मोदी पर सांप्रदायिक मामलों में चुप रहने के आरोप लगते रहे हैं। पहली बार संसद पर इस बारे में वह खुलकर बोले। उन्होंने कहा, 'कोई कानून अपने हाथ में नहीं ले सकता और धर्म के नाम पर किसी का शोषण नहीं हो सकता।' मोदी ने कहा कि मैं पहले भी कह चुका हूं कि मेरी सरकार का एक ही धर्म है, इंडिया फर्स्ट और एक ही ग्रंथ है संविधान। 'मुझे सिर्फ एक ही रंग दिखता है, तिरंगा।'

अब आम बजट और रेल बजट से महंगाई बढ़ने ही वाली है कि अचानक पेट्रोल डीजल के दामों में भारी वृद्धि। विकास के लिए पैसा कहाँ से आयेगा? अच्छे दिन का सब्जबाग खूब दिखाया गया, अब पांच साल तक अच्छे दिन का इंतजार करना ही होगा. खेतों को सरकार के हवाले कर दिया जाय। सरकार भूमिहीनों को भी २०२२ तक घर बना कर देनेवाली है. तब तक सपने देखते-देखते दिन कट ही जायेंगे! आखिर देश के प्रति हमारा कुछ तो फर्ज बनता ही है.

यह देश कुर्बानियों का देश है, हमारे पुरखों ने कुर्बानिया दी है, हम सबको भी कुछ न कुछ देना चाहिए था. मनोज कुमार का वह डायलॉग याद कीजिये जो उन्होंने उपकार में बोला था.- यह मत सोचो की देश तुम्हें क्या दे रहा है, सोचो यह कि तुम देश को क्या दे रहे हो! देश, धर्म, जाति और भाषा मनुष्य को भावुक बना देती है. इसी का फायदा सभी प्रबुद्ध वर्ग उठा रहे हैं। आम आदमी तो आम आदमी है उसे समस्या से निपटने की आदत होनी ही चाहिए. जिन्दगी एक जंग है इस जंग को जीतने के लिए आपको लड़ना होगा. आन्दोलन करिए, सरकारें बदलिए, वे कानून बदलेंगे और साथ ही आपको भी. जय हिन्द! जय भारत! जय हो मोदी जी की! नमो! नमो !

गीत

चाहूँ तो लिखना, मगर अब क्या लिखूँ?
शब्द गूँगे हो गए हैं, गीत सारे सो गए हैं
तुम गए तो यूँ लगा ज्यूँ, नभ से तारे खो गए हैं
फिर से कोई तान छेड़ूँ, एक नव कविता लिखूँ
चाहूँ तो लिखना, मगर अब क्या लिखूँ?
आहत सी हर संवेदना है, अकथ्य मेरी वेदना है
अभिमन्यु की भाँति अकेले, चक्रव्यूह को भेदना है
अपने हर एक रक्त कण से, तेरी जय गाथा लिखूँ
चाहूँ तो लिखना, मगर अब क्या लिखूँ?
उत्तप्त आँधी चल रही है, लौ हृदय में जल रही है
कुछ अँधेरा कुछ उजाला, चंद्रिका भी छल रही है
स्वप्न का अनुगामी बनकर, तुमको स्नेह सरिता लिखूँ
चाहूँ तो लिखना, मगर अब क्या लिखूँ?
ना हो बाधा शैल वन की, ना दीवारें मध्य तन की
मौन के पथ से करो तुम,
यात्रा यह मन से मन की
निमंत्रण दे प्राण का मैं,
तुमको अभिलाषा लिखूँ
चाहूँ तो लिखना,
मगर अब क्या लिखूँ?

-- भरत मल्होत्रा

कविता

अपनी उम्र की संध्या पर पहुँच कर ,
जब हम याद करते हैं, संग संग बीते हुए कल की,
और रांम नाम की माला का करते हुए जाप,
गायत्री मन्त्र का करते हुए उच्चारण,
याद करते हैं उन आनंद मयी सुखी घड़ियों की,
यह जीवन कितना मधुमय नजर आता है,
और अब, जब कभी जब भी ,
मैं क्षितिज की ओर निहारता हूँ,
लगता है कितना मधुर, धरती आकाश का मिलन,
पलकें निहारती हैं जब ऐसा दिलकश नजारा,
आभास होता है, जैसे प्रियतम से प्रेम आलिंगन,
संग पाकर प्रियतम का, मन पाता है कितना सुख,
तन पाता है कितना संतोष, ओस सी शीतलता मिलती है
भरता है तन में नया रंग, नया जोश,
उपहार मिलता है प्रियतम के प्यार का
यह मन हो जाता है कितना मदहोश
श्रावण की शीतल फुहार सा,
खिल उठता है मन कोमल,
मिलते हैं जीवन में जब,
ऐसे प्यार के अनमोल पल

-- जय प्रकाश भाटिया

मानव है तो बन्दर का ही वंशज

डा. रजनीश त्यागी

बिहार में मैट्रिक परीक्षा में स्कूल भवन की दीवारों पर चढ़कर परीक्षार्थियों के अभिभावक, रिश्तेदार और सहयोगियों को अपने-अपने उम्मीदवारों को नकल कराते फोटो समाचार पत्रों में प्रकाशित और समाचार चैनलों में दिखाये गये हैं। मौसम परीक्षा का है। परीक्षा बच्चों की चल रही है, लेकिन रिजल्ट मम्मी पापा का आना है। परीक्षा का माहौल तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में है। बच्चों की कलम की घिसावट माँ के चेहरे पर लकीरें खींच देती है। बच्चों का बच्चों से कम्पटीशन कम, लेकिन माँ का पड़ोसन से ज्यादा है। बच्चों के बहाने मम्मियां मैदान में कूद पड़ती हैं। कम अंक आने पर माँ का मुंह लटक जाता है। इस लटके हुए मुंह को देखकर ही कई बच्चे छत के पंखे से रस्सी बांधकर लटक जाते हैं। पिछले कुछ सालों में बच्चों ने इतनी आत्महत्याएं कर डालीं कि सरकार भी सबको पास करने के लिए मजबूर हो गयी। नियम बना डाला कि कक्षा आठ तक कोई बच्चा फेल नहीं किया जायेगा।

परीक्षा पैटर्न बदलने का कारण आत्महत्याएं बताई जा रही हैं, लेकिन शक की सुई अमेरिका की तरफ जा रही है। अंकल सैम जब भारत आया था तो यह कहकर आया था कि मैं भारत से १४ लाख नौकरी लेकर आऊंगा। जैसे यहाँ भारत में बेरोजगारों की कमी हो? उसने अमेरिकी बच्चों को संबोधित करते हुए कहा था कि 'हे अमेरिकियो तुम यदि नहीं पढ़ोगे तो भारतीय बच्चे आ जायेंगे।' अंकल सैम और उनके भारतीय कारिंदों ने तो परीक्षा पैटर्न ही चेंज कराया था लेकिन हमारे तो कई मुख्यमंत्री बड़े महान हुए हैं। बिहार के एक स्कूल में नकल का दृश्य बड़ा भयंकर दिखाया गया है जिसमे कुछ रिश्तेदार अपने वारिसों को नकल करने के लिए चार-चार मंजिल ऊपर भवन की दीवार पर चढ़े हुए दिखाई दे रहे हैं।

निश्चित ही अपनी जान को जोखिम में डालकर नकल की पर्चियां पहुचाई जा रही थीं। यह देखकर एक भूतपूर्व मुख्यमंत्री का कोमल मन बोल उठा कि मेरी सरकार में नकल की पूरी छूट थी। हम तो परीक्षा में किताब ही दिलवा दिया करते थे। जब किसी राजनाथ ने नकल नहीं होने दी थी और छात्रों पर सख्ती कर दी गयी थी तो मुलायम सिंह नकल अवतार के रूप में सामने आये थे। भला कोई सख्ती रखकर आज तक राज कर पाया है? जनता खुली छूट चाहती है।

नकल अध्यादेश ने उत्तर प्रदेश की राजनीति ही बदल दी थी। नकल रोकने वाली पार्टी हार गयी थी। इससे सिद्ध हो गया था कि हम जन्मजात ही नकलची है। नकल विरोधी अध्यादेश ने जब कल्याण का अकल्याण कर दिया था, तब मेरा खोजी मन खोजी कुत्ते की तरह श्वान निद्रा से जाग उठा। बोर्ड की परीक्षा के लिए मुलायम रुख क्यों अख्तियार किया गया? यह जानने के लिए मेरे मन का मयूर शास्त्रों की अटारी पर जा बैठा। तब जाकर पता चला कि दोयम दर्जे की किताब में जो कविता है वह नकल की जननी है। उस नकली कविता को याद दिला दूँ, जिसका मुखौटा है 'पर्वत कहता शीश उठाकर तुम भी ऊंचे बन जाओ, सागर कहता है लहराकर मन में गहराई लाओ।' आप ही बताओ की ढाई फुट के बच्चों को ८८४४ मीटर ऊँचे एवरेस्ट पर चढ़ा दिया जाता है। असलियत में तो माँ बाप के अरमान एवरेस्ट से भी ऊँचे है। जब कंचन जंघा जैसे अरमान पूरे नहीं होते तो बच्चे मन में गहराई ले आते हैं। वे बच्चे प्रशांत महासागर की पांच मील गहराई में समाकर शांत हो जाते हैं।

नकल बच्चों को आत्महत्या से बचाती है। माँ को पड़ोसन द्वारा होने वाले चीर हरण से बचाती है। हमारे समाजशास्त्र की नींव नकल आधारित है। साइंस एंड टेक्नोलोजी का प्रसार भी नकल से ही होता है। नकल कर कर हमने सुई से विमान तक बना डाले है। दवा से लेकर दारू तक नकली बना डाली। देश की आधी दुकानें नकली सामान से अटी पड़ी हैं। बेचारे असली उत्पादकों को तो अपने माल पर लिखना पड़ता है कि नक्कालों से सावधान। वक्त की विडंबना तो यह है की जिस वस्तु पर लिखा होता है कि नक्कालों से सावधान, लोग उसी को लेते है। नकल में मानव को महारथ हासिल है। आखिर मानव है तो बन्दर का ही वंशज। बन्दर और बेचारा कर ही क्या सकता है? उसे तो नकल के सिवाय कुछ नहीं आता है। हमने जितनी चीजें सीखी हैं नकल करके ही सीखी हैं। ■

अच्छे दिनन के फेर...

मनोज पांडे

जब से सुना है कि 'अच्छे दिन' आ रहे हैं, दिमाग परेशान है। सुना है कि वो चल चुके हैं और जब चल चुके हैं तो देर-सबेर पहुँच ही जाएँगे। इस संबंध में हमारा भी कुछ दायित्व बनता है। मसलन जब वो आएँगे तो कहाँ ठहरेंगे, कौन उनकी अगवानी करेगा, वे क्या खाएँगे, क्या पिएँगे, कहाँ कहाँ घूमना चाहेंगे, आदि आदि।

कोई कह रहा था कि 'श्रीमान अच्छे दिन' बुलेट ट्रेन से आ रहे हैं। अब अगर वो इतना पैसा खर्च के आ रहे हैं तो फिर उन्हें किसी गरीब के घर तो ठहराया नहीं जा सकता, न ही वो किसी निम्न स्तरीय स्थान पर रहना पसंद करेंगे। क्या किया जाय कुछ समझ मे नहीं आ रहा है। अभी तो वो आए भी नहीं और हम मुश्किल मे पड़ गये। तभी याद आया कि वो विश्व स्तरीय स्मार्ट सिटी आखिर किस के लिए बन रहे हैं? वो एक-दो करोड़ के फ्लैट कोई गरीब तो खरीद नहीं सकता, तो क्यों न उनमें से एक में माननीय 'अच्छे दिन' को ठहरा दिया जाय। समाधान के मिलते ही सिर से एक बोझ उतर गया। उनकी अगवानी को तो पहले ही हमारे पास अम्बानी, अडानी आदि के आवेदन आ चुके हैं, सो यह समस्या बनने से पहले ही हल हो गयी। हाँ, और जिन लोगों को उनका दर्शन करना हो वो हाशिए से देख सकते हैं। अब फटे-हाल लोगों को दिखाकर माननीय 'अच्छे दिन' का मूड तो खराब करना नहीं है।

सुना ये भी है कि वे मौजूदा रेल आहार नहीं लेंगे, बल्कि सीधे किसी ५ सितारा होटल से खाना मंगवाएँगे। और क्यों न मंगवाएँ, रेल आहार कोई बुलेट ट्रेन वालों के लिये थोड़े ही है। नहीं, कुछ तो अंतर होना ही चाहिए। बुलेट ट्रेन है, कोई संपर्क क्रांति या सद्भावना एक्सप्रेस थोड़े ही है। तो ठीक है, अगर स्मार्ट सिटी है तो उसमें ५ सितारा रेस्ट्रां भी होगा ही और, लो जी, 'क्या खाएँगे' की समस्या का भी हल मिल गया।

अब रहा, कहाँ घूमना चाहेंगे। हाँ, ये एक टेढ़ा सवाल जरूर है पर हमारे जुगाड़ू देश मे इसका भी जुगाड़ हो जाना चाहिये। समस्या ये है कि, वैसे तो कहीं भी घुमाया जा सकता है पर साफ सफाई का भी तो खयाल रखना होगा। और साफ सुथरी जगह ही बड़ी समस्या है। गुटका पसंदों की कृपादृष्टि से घर-बाहर तो छोड़िये, यातायात के अड्डे, दफ्तर, बाजार, यहाँ तक कि हमारे ऐतिहासिक स्थान भी नहीं बच पाये हैं। दिमाग इस गुत्थी में उलझा हुआ था कि तभी याद आया कि हमारे नेता लोगों ने स्वच्छता अभियान के तहत कई स्थानों पर बड़ी संजीदगी से झाड़ू फेर रखी है। भई, मजा आ गया। समस्याओं का हल कितना सुखद अनुभव होता है, है ना! अब हम आराम से श्रीमान 'अच्छे दिन' का इंतजार कर सकते हैं, वे चाहे जब आवें। ■

कविता : वो चार दिन

बचपन से जमीन पर
अट्टा गोटी खेलती लड़कियां
अनजान होती हैं
उन चार दिनों की
मानसिक यंत्रणाओं से
जब उसे अछूत मान लिया जाएगा
सच है सवर्ण होते है पुरुष
और नारी सदियों से दलित हैं

-- सीमा संगसार

शहीदों की आड़ में दूरगामी राजनीति

मृत्युंजय दीक्षित

इस बार २३ मार्च २०१५ का दिन देश की राजनीति में कुछ नये प्रकार के रंग दिखलाई पड़े। महान क्रांतिकारी व देशभक्त तथा अंग्रेजी शासन के खिलाफ आवाज बुलंद करके फांसी के फंदे को चूमने वाले शहीद भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु की याद में निश्चय ही एक मेला सा लग गया। बहुत दिनों के बाद देश को एक ऐसा प्रधानमंत्री मिला है जिसने पंजाब के हुसैनीवाला में राष्ट्रीय शहीदी स्मारक में पहुंचकर भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को श्रद्धांजलि दी और पंजाबी वेशभूषा धारण करके पंजाब की जनता के साथ ही साथ देशभर के किसानों को राजनैतिक संदेश भी दे डाला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण से एक तीर से कई निशाने साधे। उन्होनें युवाओं को भी संदेश दिया, किसानों को भी दिया और पंजाब की जनता को भी, जहां अगले कुछ समय बाद विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। इस अवसर पर पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करके भाजपा-अकाली दल गठबंधन के बीच किसी प्रकार के आपसी तनाव को सिरे से खारिज करने का सफल प्रयास करके दिखाया।

वहीं ऐसा पहली बार हुआ है जब शहीदों की याद में टी. वी. चैनलों में भरपूर सामग्री परोसी गयी और जनता ने चाव के साथ उसे देखा भी। सोशल मीडिया व ट्विटर में भी शहीदों की याद में होड़ में लगी रही। पूरे देश व प्रदेश भर से जिस प्रकार से समाचार प्राप्त हो रहे हैं उससे साफ पता चलता है कि आज का युवा गांधी की तुलना में भगत सिंह सरीखे क्रांतिकारियों के विचारों से अधिक प्रभावित हो रहा है। कई स्थानों पर संगोष्ठियों का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं की अच्छी खासी संख्या उपस्थिति रही। जिससे युवाओं में शहीदों के प्रति जिज्ञासा व प्रेम का पता चलता है। आज का युवा शहीदों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। यह आज की महती आवश्यकता है कि अब आज के युवाओं व भावी पीढ़ियों को देश के स्वतंत्रता संग्राम व इतिहास की बारीक से बारीक जानकारी दी जाये।

लेकिन शहीदों की याद में अबकी बार राजनीति भी खूब की गयी है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में भूमि अधिग्रहण बिल पर अपनी सरकार का पक्ष रखा। पंजाब की धरती से किसानों के लिए पूरे देश को संदेश दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में शहीदों को नमन किया। उन्होंने पंजाब की वीर माताओं को भी नमन किया। तीस वर्षो के बाद कोई प्रधानमंत्री हुसैनीवाला में गया जहां पर पीएम ने पंजाब के लोगों पर अपना कर्ज उतारने के लिए कहा कि अब समय आ गया है कि मैं पंजाब के लोगों का कर्ज उतारूं, इसलिए उन्होंने भगत सिंह के नाम पर हार्टिकल्चर यूनिवर्सिटी बनाने की भी घोषणा की।

साथ ही पंजाब के किसानों के दर्द को समझते हुए उन्होंने ६० वर्ष के ऊपर की आयु के किसानों को ५ हजार रुपये मासिक पेंशन देने का भी ऐलान कर दिया। इस अवसर पर उन्होनें कांग्रेस व पूर्ववर्ती सरकारों पर जमकर निशाना साधा और कहा कि आजादी के जिन दीवानों ने अपनी जान की आहुति दी, उनको हमारी बीती सरकारों ने दरकिनार करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर एक बार फिर शहीदों के सपनों का भारत बनाने का संकल्प लिया। उन्होनें २०१९ तक देश की स्वच्छता का सपना पूरा करने का वायदा किया।

दूसरी ओर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल व उनके सहयोगियों ने भी शहीदों को याद किया। दिल्ली विधानसभा में शहीदों की प्रतिमा लगवाने की बात कही। वहीं समाजसेवी अन्ना हजारे ने भी शहीदों की याद में अपने तथाकथित राजनैतिक आंसूं टपका दिये। एक ओर जहां प्रधानमंत्री मोदी हुसैनीवाला में शहीदों का नमन कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर अन्ना पंजाब के ही खटकड़कलां में शहीदों की याद में मोदी व सरकार के खिलाफ अपनी भड़ास निकाल रहे थे। २३ मार्च को ही अन्ना हजारे ने भूमि अधिग्रहण के खिलाफ मार्च की शुरुआत की है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि जहां पीएम मोदी की जनसभा में भीड़ आई हुई थीं वहीं किसानों के मुददे पर मोदी सरकार को घेरने का प्रयास कर रहे अन्ना हजारे के मार्च में केवल दो दर्जन लोग ही शामिल थे। फिर भी कांग्रेस ने प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा को महज राजनैतिक स्वार्थ की यात्रा करार दिया है और उनका मजाक बनाया है।

आज देश की राजनीति में यह बहुत अच्छी बात हो गयी है लगभग सभी ने किसी न किसी बहाने शहीदों को याद तो किया। नहीं तो अभी तक तो सभी सरकारें केवल फूलमाला चढ़ाकर इतिश्री कर लेती थीं। आज देश के हालात निश्चय ही बेहद चिंतनीय हैं। बेमौसम बरसात के कारण किसानों की फसलें बर्बाद हो चुकी हैं। किसानों में आत्महत्या करने की होड़ मची है, लेकिन देश के राजनैतिक दल अपने स्वार्थों की पूर्ति में लग गये हैं। इस अवसर पर उ.प्र. की समाजवादी सरकार ने भगत सिंह व अन्य शहीदों को प्राथमिकता न देकर समाजवादी लोहिया को प्राथमिकता दी और अपने आप को किसानों का परम हितैषी बताया। लेकिन हालात ऐसे हैं कि आज सबसे कठिन दौर में उ.प्र. का किसान है। उसकी सुध कौन लेगा। ■

अविश्वास की शिकार आप

डा. द्विजेन्द्र वल्लभ शर्मा

बीते कई दिनों से आम आदमी पार्टी का जो संसार उलटपुलट से भरा दिखाई दे रहा है वह दरअसल कई रसोईयों के एक ही रसोई में इकट्ठे होकर भोजन पकाने का नतीजा है। आम घरों में यदि घर का कोई सदस्य घर की बगीची में कोई फल या सब्जी आदि जब कभी भी लगाता है तब वह फल या सब्जी बेहतर रूप में ही फलती फूलती है जबकि परिवार के अन्य सदस्य यदि उसी कार्य को अपने हाथ से करें तो जरूरी नहीं कि वह परिणाम प्राप्त हों। तब लोग कहा करते हैं कि उस आदमी के हाथ में यश है। आम आदमी पार्टी में यह यश अरविंद केजरीवाल के हाथ में ही है और निश्चित तौर पर इन सबके पीछे हाथ अरविंद केजरीवाल का ही है तो जस भी उन्हें ही मिलना चाहिये। अन्य दलों व आप में फर्क यह है कि आप के तमाम बड़े नेता हाईप्रोफाईल व बुद्धिजीवी प्रकृति के है। इसमें इसके मुखिया केजरीवाल ही सिर्फ बुद्धिमान् नहीं हैं बल्कि अन्ना के मोह से खिंचे योगेन्द्र यादव सरीखे सरल व्यक्तित्व, जिन्हें भले ही अब केजरीवाल की चालाकियों ने कुछ चालाकियां विद्रोह स्वरूप सिखा दी हों, व उनकी बुद्धिमत्ता के आकर्षण में शान्तिभूषण व प्रशान्तभूषण जैसे लोगों की आभा ने भी लोगों को पार्टी में आने के लिए प्रेरित किया। जाहिर है ऐसे तमाम लोग पार्टी मीटिंग में अपना दिमाग घर पर रखकर शामिल होने नहीं आते। वे फौजी की तरह यस सर की मुद्रा नहीं ओढ़ सकते और न वे यह चाहेंगे कि कोई उनसे फौजियों के कमांडर की तरह बर्ताव करे।

अन्ना आन्दोलन से उपजी आप में केजरीवाल द्वारा दूसरों को दरकिनार करना इस पार्टी को सबसे महंगा पड़ने वाला है और यदि ऐसा हुआ तो लोग तैयार बैठे हैं कि हम अपने उन बयानों को सही ठहरायें जिनमें हमने कहा था कि ये तो चार दिन की चांदनी है। आप का यह कर्तव्य है कि उन विपक्षियों को अपनी दुर्गति पर ताली बजाने का मौका न दें। यह सही है कि सत्ता प्रमुख और पार्टी प्रमुख यदि एक हो तो पार्टी मजबूत रहती है जैसे कांग्रेस में कभी इंदिरा गांधी के जमाने में हुआ करता था। इसलिए केजरीवाल पार्टी को एक रखने के तौर पर संयोजक भी बने रह सकते हैं लेकिन नैतिकता के उच्च मानदंड स्थापित करने का दावा करने वाली पार्टी के लिए यह आसान काम नहीं है। केजरीवाल कई नौकरियों को धता बताकर सीएम बने हैं तो उसका प्रतिफल भी वे अपनी मेहनत के बूते पा चुके हैं सी एम बनकर। लेकिन यहां कई अन्य भी ऐसे कार्यकर्ता हैं जो अपनी अपनी नौकरियां या व्यवसाय छोड़कर अपनी प्रतिफल की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यहां दिल्ली की जनता के धैर्य की दाद देनी होगी जो आराम से केजरीवाल

(शेष पृष्ठ २० पर)

परिचय

नाम - शान्ति पुरोहित
शिक्षा - एम. ए. हिंदी
निवास - नोखा बीकानेर (राजस्थान)
विभिन पत्र-पत्रिकाओ में रचनायें प्रकाशित
पता - विजय प्रकाश पुरोहित, कर्मचारी कालोनी तहसील भवन के पीछे नोखा, पिन कोड - ३३४८०३
ई-मेल - shanti-purohit61@gmail-com
फोन नंबर -९४६०५०३८७२

आत्म कथ्य

मेरे नाना पंडित मुरलीधर जी व्यास राजस्थानी भाषा के साहित्यकार थे। बचपन में ननिहाल जाने पर उनकी लिखी किताबों को पढ़ने की चेष्टा करती रहती थी। क्योंकि राजस्थानी भाषा पढने में कठिनाई आती थी। उसी वक्त मन में ठान लिया था कि नाना की विरासत को मैं आगे उनके बाद भी जीवित रखूँगी। राजस्थानी भाषा तो नहीं, हाँ हिंदी भाषा में कुछ लिखने का प्रयास हमेशा करूंगी। भागते समय के साथ मेरी रुचि कहीं अदृश्य सी हो गयी।

शान्ति पुरोहित

एक बार फिर समय ने करवट बदली, जब मैं गृहस्थी की तमाम जिम्मेदारियों से मुक्त हो गयी, तो अंतर में छुपी रुचि ने एक बार फिर सर उठाया। इसी दौरान माँ का देहांत भी हो गया। अपनी माँ को श्रद्धांजलि के रूप में दो शब्द लिखना चाहती थी। उसके लिए मेरी प्रिय सखी उपासना सियाग ने मेरा मार्गदर्शन किया, इसके लिए हमेशा उसकी आभारी रहूँगी।

लिखने की इसी राह में मिलना हुआ आदरणीय दिदु विभा श्रीवास्तव जी से, जिन्होंने मुझे जापानी विद्या हाइकु, तांका आदि से परिचय कराया। उनकी भी आभारी हूँ। बड़े परिवार से हूँ, तो जितना वक्त मिलता है, उसका सदुपयोग करते हुए थोड़ी बहुत हिंदी की सेवा करती हूँ।

चित्र में बायें से देवर, पति, मैं स्वयं, बेटी और दामाद

लघुकथा

देवी पूजा

आंख खुलते ही हर रोज की तरह आज भी रसोईघर से मम्मी की आवाज के साथ-साथ बरतनों की उठापटक की आवाज सुनाई दी, पर हैरानी की बात आज कामवाली बाई की आवाज नहीं आ रही थी। जाकर देखा तो माँ नौकरानी की बेटी को डांट रही थी जो रोते-सुबकते रात के झूठे पडे बरतनों को रगड -रगड कर मांजते हुए अपनी मैली-कुचैली आस्तीन से आंसुओं को भी पौंछ रही थी ताकि कोई देख न ले।

उसकी मासूमियत देखते हुए मैनें मम्मी से कहा, 'मम्मी क्यों डांट रही हो उसे?

माँ तेज स्वर में बोली, 'जानती हो, आज से नवरात्र पूजा शुरू हो रही है, मैने कल ही इसकी माँ को जल्दी आने को कह दिया था और उस महारानी ने इसे भेज दिया, ये कहती है कि माँ को बुखार है। सारा काम पडा है, मुझे मन्दिर की सफाई भी करनी है, मां का सिंगार करने देवी मन्दिर भी जाना है?'

'माँ! देखो ना, वो कितनी छोटी-सी है, फिर भी कितना काम कर रही है?'

'तुम नहीं जानती बेबी, ये लोग छोटे तो होते ही हैं साथ ही कामचोर भी होते हैं। जिस दिन भी घर में काम ज्यादा हो तो इनके बहाने शुरू हो जाते हैं। .... ऐ लडकी, जल्दी-जल्दी हाथ चला क्या मेंहदी लगी है? तुम इस पर निगरानी रखना, मैं मन्दिर जा रही हूं देवी पूजा करने।'

'मम्मी...! घर में आई देवी का तो आप अपमान कर रही हैं और मन्दिर में पत्थर मूर्ति की पूजा करने जा रही हैं?'

इतना सुनते ही मम्मी ने मेरे गाल पर जोर से तमाचा जड दिया, जिसकी गूंज सारे घर में गूंजती रही। यह थी मम्मी की 'देवी पूजा' !

-- सुरेखा शर्मा

कविता

अक्सर ख्वाब में घर का कुवाँ नजर आता है
आजकल मुझे मेरा गांव याद बहुत आता है
याद आतें हैं खेत खलिहान औ चौबारा
बरसों बीत गये जहाँ पहुँच न पाये दुबारा
याद आता है बरगद का वो पेड़
जहाँ हम छहँते थे/कैसे भूल पाऊँ
हाय वो पोखरिया जिसमें हम नहाते थे
नहर की तेज धार का वो बहता पानी
आज बहुत याद आया डूबते खेलते बहते
नहर की वो लहर जिसने तैरना सिखाया
वो छडी वो डन्डे आज सब याद आते हैं
खत्म हो रहा जिन्दगी का सफर
मुझे मेरे वो मास्टर जी दिल से आज भी भाते हैं
आजकल मुझे मेरा गांव याद बहुत आता है

-- सूर्य प्रकाश मिश्र

(पृष्ठ १९ का शेष)

अविश्वास की शिकार आप

सरकार के कर्तृत्व की प्रतीक्षा कर रही है। हालांकि कम से कम एक साल बाद ही किसी सरकार की समीक्षा शुरू होनी चाहिये इसलिए यह धैर्य भी जरूरी है। दिल्ली की जनता के पास चुप बैठने के अलावा कोई उपाय भी नहीं है और पानी तो फ्री मिल ही रहा है और बिजली भी सस्ती हुई है जैसे भी हुई हो। लेकिन स्टिंग स्टिंग के खेल में फंसी इस पार्टी में धीरे धीरे कहीं अविश्वसनीयता इस कदर न बढ़ जाये कि लोग आपस में ही एक दूसरे को शक की निगाह से न देखने लगें और शक तो वैसे भी लाईलाज है। केजरीवाल के स्टिंग उद्घोष से जनता ने कितनी शिक्षा ली यह तो नहीं पता लेकिन कार्यकर्ताओं को यह अहसास हो चला है कि यदि उन्होंने पार्टी लाईन से हटकर कुछ भी बयान दिया या स्वतंत्र कुछ विचार प्रकट किया तो उनको बाहर का रास्ता दिखा दिया जाएगा। निश्चित ही अब और भी बहुत से लोग स्टिंग करते दिखेंगे कि पता नहीं कब कहां काम आ जाये और इसीलिए लोग बोलने से पहले चार बार सोचेंगे कि कहीं स्टिंग का शिकार न हो जायें। लेकिन इस प्रकार से कोई पार्टी अपनों पर ही अविश्वास करके और खुद अविश्वास का शिकार होकर कैसे काम कर पायेगी, देखना होगा। और हां, अब जिस तरह से दोनों गुटों में जो तीर चले हैं और जो गांठें पड़ गई हैं वे खत्म न होंगी क्योंकि ये कड़वाहट निकाले नहीं निकलेगी। लेकिन उम्मीद करनी चाहिये कि केजरीवाल इसे संभाल लेंगे। एबीपी न्यूज के तथाकथित सर्वे में अभी भी साठ प्रतिशत लोगों की पसंद केजरीवाल हैं। बधाई! ■

बाल कहानी

पुलकित की शरारत

उपासना सियाग

'टन-टन !!' घंटी बजी।

यह स्कूल की आधी-छुट्टी की घंटी बजी है। सभी बच्चे अपने-अपने टिफिन लिए कक्षा से बाहर हो लिए। केशव, राघव, विपुल, प्रतीक और पुलकित ये पांच बच्चे जो की छठी कक्षा के छात्र हैं और आपस में मित्र भी हैं। पुलकित इनमें से सबसे ज्यादा शरारती था। उसे कोई ना कोई शरारत सूझती ही रहती है। नित नए तरीके उसकी खुराफाती खोपड़ी में आते ही रहते थे।

'आज अप्रैल-फूल पर किसको मूर्ख बनाया जाये?' पुलकित अपनी आँखे चमकाते हुए बोला।

'इस बार सोच समझकर ही कुछ करना! पिछली बार की तरह स्कूल से निकलने की नौबत ना आ जाये।' केशव बोला।

'हाँ सच! पिछली बार घर में भी तो कितनी डाँट पड़ी थी!' प्रतीक जो स्वभाव में सबसे सीधा था, बोला।

राघव कुछ बोलता इससे पहले पुलकित बोल पड़ा कि उसने तो सोच लिया कि इस बार भी मूर्ख तो कोई न कोई बन के ही रहेगा।

'क्यूँ ना हम अपने इतिहास के अब्दुल गफ्फार सर को ही मूर्ख बना दें!' पुलकित ने एक आइडिया दिया।

'अरे नहीं भई!! गफ्फार सर तो उल्टा लटका देंगे!' इस बात पर बाकी बच्चों ने असहमति प्रकट की।

'लेकिन मैंने तो सोच लिया!' पुलकित बोला।

'तुम सब कक्षा में जाओ और मेरा इंतजार करो। आधी-छुट्टी के बाद का पीरियड गफ्फार सर का ही तो होता है।' पुलकित यह कह कर स्कूल के ग्राउण्ड में आ गया। बाकी बच्चे कक्षा में चले गये। सर भी कक्षा में आ गये कि पुलकित भागा हुआ, हाँफता हुआ दरवाजे पर खड़ा था। (वह ग्राउंड में तीन-चार चक्कर दौड़ लगा कर आया था इसलिए हांफ रहा था।)

'सर ! सर !!'

सर भी घबरा गये कि पुलकित को क्या हुआ।

'सर! अभी मैं आपके घर के पास से निकला तो देखा कि आपकी पत्नी की तबियत खराब है उनको हॉस्पिटल ले कर जा रहे हैं !'

सर तो सचमुच घबरा गये। बिन कहे ही घर की और चल पड़े। सभी बच्चे खिलखिला कर हंस पड़े कि आज तो सर से छुटकारा मिला।

अगले दिन पुलकित सर से डर के कारण स्कूल नहीं गया। पेट दर्द का बहाना कर के सोता रहा। उस दिन शनिवार था। इसलिए पुलकित ने सोचा कि सोमवार तक तो सर भूल जायेंगे और माफ कर देंगे।

रविवार की सुबह अब्दुल गफ्फार सर की आवाज सुन कर पुलकित डर गया। सर उसके पापा से बातें कर रहे थे। उसने ध्यान से सुनने की कोशिश तो की लेकिन कुछ भी समझ नहीं आया।

'पुलकित ! तुम्हारे सर आये हैं ! तुम्हें बुला रहे हैं। 'माँ ने आकर कहा तो वह चौंक उठा।

'मुझे क्यूँ बुला रहे हैं ? 'वह सहमते हुए बोला।

वह डरते सहमते से ड्राइंग रूम में गया। सर ने उसे अपने पास बुलाया और पास बिठाया।

बोले, 'माना कि तुमने मुझे मूर्ख बनाया था। लेकिन मेरी पत्नी बीमार ही रहती है। उसे हृदय रोग है। उस दिन उसकी सचमुच ही तबियत खराब थी अगर मैं समय से घर नहीं जाता और हॉस्पिटल नहीं ले जाता तो जाने क्या होता। तुमने मजाक में ही सही लेकिन मेरी बहुत मदद की है। इसलिए मैं तुम्हें दुआ देने आया हूँ।'

सर चले गए। उसके पापा को राहत मिली कि इस बार उसकी शरारत से किसी को नुकसान नहीं पहुंचा। फिर भी उसने झूठ तो बोला ही था। पहले स्कूल और फिर घर में पेट दर्द का बहाना। इसलिए उसको एक सप्ताह तक उसके मन पसंद टीवी के प्रोग्राम देखने की पाबंदी लगा दी गई। पुलकित ने भी मन ही मन शरारत कम कर देने की कसम खा ली। ■

शिशु गीत

१. चिड़ियाघर

जब भी छुट्टी आती है, हम चिड़ियाघर जाते हैं
भालू, चीता, टाइगर देख, हँसते हैं, मुस्काते हैं

२. कबूतर

उजला भी चितकबरा भी, कई रंगों में आता है
करे गुटरगूँ दाने चुग, मुझे कबूतर भाता है

३. बिल्ली

दबे पाँव ये धीरे-धीरे, चली किचेन में आती है
रखी सारी दूध-मलाई, पल में चट कर जाती है
बिल्ली मौसी म्याऊँ-म्याऊँ, बोले चूहों को दौड़ाऊँ

४. कुत्ता

भौं-भौं करता, पूँछ हिलाता, बदमाशों को दूर भगाता
मेरा पप्पी प्यारा-प्यारा,
बिस्किट, रोटी मन से खाता

५. कूलर

ठंढी-ठंढी हवा चलाए
गरमी में सर्दी ले आए
डाल बर्फ दो थोड़ी इसमे
रातों में कंबल ओढ़ाए

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविताएँ

१- चूहे भाई

ढूँढ़ कहीं से लाए रजाई, छिपकर बैठे चूहे भाई।
बाहर गिरे बर्फ के गोले, मुश्किल से थी जान बचाई।

२- बज गया बाजा

चूहे की बारात जो आई, बिल्ली ने फिर डाँट लगाई ।
सरपट दौडे चूहे राजा, बिना बैंड ही बज गया बाजा ।

३- आसमान को छूलें

आओ बच्चों खेलें हम, आसमान को छूलें हम ।
थाली में जो तारे हैं, वे चमकीले-प्यारे हैं ।
क्यों न इनको ले लें हम, कर दें ये अँधियारा कम।

४- गुब्बारे

रंग बिरंगे-नीले पीले, हैं गुब्बारे खूब सजीले।
इन्द्रधनुष के रंगों-जैसे, झटपट दे दो अब तुम पैसे।
जो भी चाहो ले लो तुम, जी भर के फिर खेलो तुम।

५- नाव

नाव चली भई नाव चली
सब बच्चों की नाव चली।
लहराती पानी पर आई
ताली सबने खूब बजाई।
अरे! नाव में भर गया पानी
याद आ गई सबको नानी।

-- डा. भावना कुँअर

बाल कविता

काले मेघा-काले मेघा, इतना ऊपर क्यों छाया है।
राज हमें ये पता चल गया, बारिश का मौसम तू लाया है।
छोटे छोटे बच्चे जब, बारिश में उछल कूद करते हैं।
देख उनकी ये अठखेलियाँ, सभी प्रसन्न होते हैं।
बारिश की बूदों ने,
बच्चों के कोमल मन को
भिगो दिया पूरा-पूरा।
मन में आए नए विचार,
सच होगा हर सपना अधूरा।
काले मेघा काले मेघा।
इतना ऊपर क्यों छाया है

-- विकाश सक्सेना

गजल

दिल में फूल बनकर खिलती रही कुछ कुछ बातें
दिल में ही शूल बनकर चुभती रही कुछ कुछ बातें
जज्बातों पे यकीं करना भी अब हुआ है गुनाह
दिल में उतर कर छल करती रही कुछ कुछ बातें
अचानक राख पर पैर पड़ा जब तो पता ये चला
बरसों तक आग बन सुलगती रही कुछ कुछ बातें
रख देती हैं दिल को मोड़ कर, जिंदगी संवार कर
यूं ही दिल को जो भली लगती रही कुछ कुछ बातें
रोज ही कई कई अनुभवो से है नाता रहता "राज"
पर गीतों और गजलो में ढलती रही कुछ कुछ बातें

-- राज रंजन

बाल लेख

पिता

गुस्से से मैं घर से चला आया, इतना गुस्सा था कि गलती से पापा के जूते पहन लिये। मैं आज बस घर छोड़ दूंगा, और तभी लौटूंगा जब बहुत बड़ा आदमी बन जाऊंगा। जब मोटर साइकिल नहीं दिलवा सकते थे, तो क्यूँ इंजीनियर बनाने के सपने देखते हैं। आज मैं उठा लाया था, पापा का पर्स भी, जिसे किसी को हाथ तक न लगाने देते थे। जरूर, इस पर्स में पैसो के हिसाब की डायरी होगी। पता तो चले कितना माल छुपाया है माँ से भी। इसीलिए हाथ नहीं लगाने देते किसी को।

जैसे ही कच्चे रास्ते से सड़क पर आया, मुझे लगा जूतों में कुछ चुभ रहा है। मैंने जूता निकाल कर देखा। मेरी एडी से थोडा सा खून रिस आया था। जूते की कोई कील निकली हुयी थी। दर्द तो हुआ पर गुस्सा बहुत था। और मुझे जाना ही था, घर छोड़कर।

जैसे ही कुछ दूर चला, मुझे पांवों में गीला गीला लगा। सड़क पर पानी बिखरा पड़ा था। पाँव उठा के देखा तो जूते का तला टूटा था। जैसे-तैसे लंगड़ाकर बस स्टाप पर पहुंचा। पता चला एक घंटे तक कोई बस नहीं थी। मैंने सोचा- क्यों न पर्स की तलाशी ली जाये।

मैंने पर्स खोला, एक पर्ची दिखाई दी। लिखा था लैपटॉप के लिए ४० हजार उधार लिये। पर लैपटॉप तो घर में मेरे पास है?

दूसरा एक मुड़ा हुआ पन्ना देखा। उसमें उनके आफिस की किसी हॉबी डे का लिखा था। उन्होंने हॉबी लिखी अच्छे जूते पहनना। ओह! अच्छे जूते पहनना? पर उनके जूते तो...! माँ पिछले चार महीने से हर पहली को कहती है नए जूते ले लो। और वे हर बार कहते- अभी तो ६ महीने जूते और चलेंगे। मैं अब समझा कितने चलेंगे।

तीसरी पर्ची, पुराना स्कूटर दीजिये, एक्सचेंज में नयी मोटर साइकिल ले जाइये, पढ़ते ही दिमाग घूम गया। पापा का स्कूटर, ओह! मैं घर की ओर भागा। अब पांवों में, न वो कील चुभ रही थी, न पानी का गीलापन।

मैं घर पहुंचा, न पापा थे न स्कूटर! ओह! नहीं! मैं समझ गया कहाँ गए। मैं दौड़ा और एजेंसी पर पहुंचा। पापा वहीं थे, मैंने उनको गले से लगा लिया। और आंसुओं से उनका कन्धा भिगो दिया।

'नहीं... पापा, नहीं..., मुझे नहीं चाहिए मोटर साइकिल। बस आप नए जूते ले लो। और मुझे अब बड़ा आदमी बनना है, आपके तरीके से !'

(प्रस्तुति - धर्म सिंह राठौर)

हास्य कविता

पप्पू गायब हो गया...

(नोट- इस कविता के सभी पात्रों, स्थानों और घटनाओं के नाम काल्पनिक हैं। उनका किसी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई सम्बंध नहीं है। किसी से उनकी समानता होना संयोगमात्र है।)

मौहल्ले में एक दिन मच गया हल्ला
गायब है अपने पड़ोसी का लल्ला
पप्पू था उसका नाम
आवारागर्दी करना था उसका मुख्य काम
मौहल्ले के लोगों को था उससे बहुत प्यार
क्योंकि वह था उनके दैनिक मनोरंजन का आधार!
मौहल्ले में कानाफूंसी होने लगी
उनकी कल्पनाशीलता उड़ान लेने लगी
शर्मा जी ने कहा- 'किसी लड़की के पीछे गया होगा'
वर्मा जी बोले- 'नहीं, अब वह लड़कियों से बिदकता है,
जरूर किसी लड़के के चक्कर में पड़ा होगा'
गुप्ता जी का कहना था- 'इसका पता लगाना चाहिए,
वरना हमारे मनोरंजन का क्या होगा
पप्पू के बिना चुटकुलों में भी क्या मजा होगा?'
मौहल्ले वाले परेशान हो गये
मिलकर पप्पू के घर पूछने गये
वे बोले- 'पप्पू कहीं चिंतन करने गया है,
जल्दी ही आ जाएगा,
चिंतन पूरा होने के बाद बहुत कुछ करके दिखाएगा।
आप बिल्कुल चिंता मत कीजिए,
अपने-अपने काम में रुचि लीजिए।'
लौट आये मौहल्ले वाले, पर उनको चौन नहीं आया।
यादव जी ने कहा-
'लगता है घर वालों ने ही उसे गायब किया है,
हमारे दिन-रात का मनोरंजन छीन लिया है।'
मौर्या जी बोले- 'इसकी पूरी जांच करानी चाहिए,
थाने में जाकर रपट लिखवानी चाहिए।'
मिलकर सभी गये थाने,
वहां मुंशी लगा उनको टरकाने,
पर लोग रपट लिखवाये बिना नहीं माने।
उन्होंने पप्पू के अपहरण की रपट लिखाई।
दो दिन बाद थाने से आये चार सिपाही!
कहने लगे- 'पप्पू का कुछ हुलिया बताओ,
देखने चालने में कैसा था, यह समझाओ।'
उत्तर मिला-
'उसकी उमर है पैंतालीस साल,
पर अकल से है पैदल, जैसे केवल आठ-दस साल!
कहने को वह एम.ए. पास है पर कोई नहीं जानता
कि उसने कालेज में सीखा क्या खास है
देखने में आगरा या रांची से भागा हुआ मरीज लगता है
जो मुंह में आता है वह बिना सोचे-समझे बकता है
सड़क पर वह कुछ इस तरह चलता है
कि पैरों से ज्यादा उसका पूरा शरीर हिलता है
गरीबों के घर जाकर मुफ्त की रोटी खाता है
कैमरे की फ्लैश को देखकर लार टपकाता है
हर समय लड़ने को तैयार सा रहता है
चुनौती देते हुए कुर्ते की बांहें चढ़ाता है
रंग उसका गोरा है,
लगता है किसी इटालियन बार डांसर का छोरा है!'
सिपाही बोले- 'बस, बस, इतना है काफी,
हम आपसे चाहते हैं माफी।
हम जल्दी ही उसको खोज निकालेंगे,
फिर पहचान के लिए आपको बुला लेंगे।'
यह कहकर सिपाही चले गये,
मौहल्ले वालों को लगा- वे बुरी तरह छले गये।
अब उनके मनोरंजन का क्या होगा?
पप्पू के वापस आने तक कोई
नया जरिया ढूंढ़ना होगा।
तय किया गया कि
एक 'अखिल मौहल्ला
मनोरंजन कमेटी' बनायेंगे,
पप्पू वापस आ गया तो उसे
उसके अध्यक्ष पद पर बिठायेंगे।

-- विजय कुमार सिंघल 'अंजान'

कवितायें

जीने की लत जो हमने है पाली
आज वही मारे जाती है जीने की लत...
जीता हूँ दिल पर बोझ लिए अब
रात अंधेरी है काटे हरदम
जब बोझिल कुछ कदम बढाऊँ
राह मुझे छोड़े जाती है जीने की लत...
इक पल मुझको चैन मिले जो
सिलवटें नजर कुछ आती हैं।
कुछ चुप रहतीं हैं कुछ कहतीं
फिर हाथ पकड़कर जाने कहाँ
ले जाती हैं जीने की लत...

-- राजीव उपाध्याय

मैं हूँ एक अजन्मी बाला
मानेंगे सब मुझे जन्म के बाद अबला
माँ, बहन, पत्नी मैं हूँ/वो दादी, नानी, चाची मैं हूँ।
वो कौशल्या के राम की सीता मैं हूँ
देवकी पुत्र, यशोदा नंदन की माँ मैं हूँ
वो प्रताप की जयवंता, शिवाजी की जीजाबाई मैं हूँ
अटल अहल्या, द्रोपदी, मंदोदरी मैं हूँ।
अवकाश में राज करती सुनीता, कल्पना हूँ मैं
सीमा संभालने वाली विरल विमल हूँ मैं।
उषा, आशा, लता के सुरों में
बसी हुई लय हूँ मैं
दीपिका, सानिया, सायना हूँ मैं
हूँ पंख मैं उस बिन पाँव
उड़ने वाली अरुणिमा की !
दामन बचाने के बलिदान में
भारत माँ की दामिनी हूँ मैं!

-- मयूर जसवानी

कहानी

एक रिश्ते का 'लास्ट सीन'

प्रीति सुराना

'अरे पल्लू, तुम रो क्यूं रही हो, कोई हमेशा के लिए तुम मुझसे दूर थोड़े ही जा रही हो, तुम ही तो चाहती हो न कि शादी करके नई जिन्दगी शुरु करने से पहले तुम अपने कैरियर पर ध्यान दो। और फिर कुछ ही महीनों की तो बात है, जहां सात साल हमने इंतजार किया कुछ महीने और सही, तुम्हारी ट्रेनिंग पूरी होते ही तुम लौट आओगी, और मैं तुम्हारे मम्मी-पापा से तुम्हारा हाथ मांगने आऊंगा। लो तुमने अभी तक मेरा गिफ्ट भी नही खोला।'

'आई एम सॉरी, मैं अभी देखती हूं, तुमसे दूर जाने की तकलीफ में मैं भूल ही गई।' इतना कहकर पल्लवी ने गिफ्ट खोला, नया मोबाइल फोन देखते ही पल्लवी के चेहरे पर मुस्कान और आखों में आने वाले कल के सपने तैरने लगे, और कुछ देर यूं ही बातों, वादों और इरादों के साथ पल्लवी और समीर ने विदा ली।

हमारे पड़ोस वाले गुप्ता जी का बेटा समीर एक सभ्य और शालीन लड़का जो एमबीए करने बाद यहीं कोई छोटी मोटी नौकरी की तलाश में है। पल्लवी सड़क के उस पार बनी कालोनी के पहले ही मकान में रहने वाले प्रो शर्मा की बेटी है। ये पार्क दोनों कालोनियों के बीच बना है इसलिये दोनों के लोग अकसर शाम को टहलते हुए इस पार्क मे आ जाते थे। ये सब कुछ सिर्फ बीस दिन पहले हुआ मेरी ही कालोनी के सामने वाले पार्क में मेरे सामने।

आज भी मैं हमेशा की तरह पार्क में टहलने के बाद एक बेंच पर सुस्ताने बैठ गई। पास वाली बेंच पर कुछ लड़के आपस में बात कर रहे थे। एक ने कहा 'दोनों में सात साल से चक्कर चल रहा था, अभी अभी तो वो गई थी मुम्बई ट्रेंनिग के लिए, और जाते समय समीर ने उसे मोबाइल भी गिफ्ट किया था।' दूसरे ने कहा, 'उसी मोबाइल ने तो दोनों का रिश्ता खत्म कर दिया, और पल्लवी ने आत्महत्या की कोशिश की। सुना है मुम्बई के ही किसी अस्पताल में आई सी यू में है।'

पल्लवी और समीर का नाम सुनते ही मेरे होश उड़ गए, कुछ पलों के लिए मेरी आंखों के आगे अँधेरा सा छा गया, खुद को थोड़ा संयत करते हुए मैं उठकर उन लड़कों के पास गई और पूछा, 'बच्चो, मैंने अभी तुम्हारी बात सुनी, तुम लोग गुप्ता जी के बेटे और शर्मा जी की बेटी की बात कर रहे हो ना?' पहले तो वो तीनों थोडा हिचकिचाए पर मेरे फिर पूछने पर उनमे से एक ने बताया, 'आंटी हम समीर के दोस्त हैं , समीर बहुत सदमे में हैं। हम उसी से मिलकर आ रहे हैं।'

मैंने कहा, 'प्लीज मुझे बताओगे हुआ क्या है?'

उनमें से एक ने बताना शुरू किया कि किस तरह दोनों सात साल से एक रिश्ते में बंधे हुए आने वाले भविष्य के सपने देख रहे थे। उसके बाद पल्लवी के जाने और मोबाइल वाली बात, जिसकी गवाह मैं खुद थी, वो भी उसने बताई, तब मैंने उतावलेपन से पूछा 'तो फिर क्या हुआ?' उसने जो कहा उसे सुनकर मैं सिर पकड़ कर वहीं बेंच पर बैठ गई,

हुआ यूं कि समीर ने फोन में फेसबुक की आईडी और व्हाट्सऐप भी डाउनलोड कर दिया था। मुम्बई जाने पर दो-चार दिनों में ही पल्लवी आफिस के लोगों से घुलमिल गई थी। नंबरों का आदान प्रदान बातचीत स्वाभाविक था। शुरू के दो चार दिन समीर ने भी स्थिति को समझा कि नई जगह में एडजस्ट होने में वक्त लग रहा है, इसलिए पल्लवी उससे ज्यादा देर बात नहीं कर पाती होगी, पर हफ्ता बीतते बीतते समीर को बेचैनी सी होने लगी। रविवार सुबह ही उसने उसे काल किया। पल्लवी ने कहा 'आज छुट्टी है, प्लीज मझे सोने दो।' उसने फिर शाम को फोन किया तो उसने ये कहकर फोन काट दिया कि रूममेट्स के साथ डिनर पे जा रही हूं, रात को काल किया, तो थकान की वजह से उसने बात नही की, दूसरे दिन भी काम पे जाने की जल्दी फिर थकान और काम की व्यस्तता।

इस बीच व्हाट्सअप पर कुछ बातों के जवाब देना, कुछ के न देना, पल्लवी अपनी नई लाइफ में व्यस्त रहने लगी। नया शहर, नए लोग, नया माहौल। ऐसे में वो चाहकर भी समीर को समय नहीं दे पा रही थी और इधर समीर के पास काम ही नहीं था, जाब की तलाश में भी पल्लवी के जाने के बाद उसका मन नहीं लग रहा था। जाने अनजाने उसे लगा कि पल्लवी उसे इग्नोर करने लगी है। इन्हीं सब के चलते उन दोनों के बीच कहा सुनी होने लगी। कभी फोन पे तो कभी व्हाट्सअप पे दोनों लड़ ही पड़ते। दूसरा रविवार भी निकल गया।

तीसरे शनिवार और रविवार दो दिन आफिस बंद रहने वाला था। पल्लवी ने शुक्रवार शाम मेट्रो से रूम पर आते आते ही तय कर लिया था कि अगले दो दिन वो समीर को पूरा वक्त देगी, खुशी खुशी उसने समीर को व्हाट्सअप पर मैसेज भी कर दिया कि मैं पूरे दो दिन तुम्हारे साथ हूं, समीर बहुत खुश था। पर रूम में पहुंचते ही सभी दोस्तों ने बताया कि अगले दो दिन सब गोआ जा रहे हैं। पल्लवी की समझ में ही नहीं आया कि वो करे तो क्या करे? न तो रूम पर अकेले रह सकती थी और न दोस्तों को एकदम से मना करने की हिम्मत थी, न ही समीर को इस प्रोग्राम के बारे में बताने की, जब कुछ समझ नहीं आया तो अपने घर पर मैसेज छोड़ कर फोन बंद कर दिया।

उधर गोआ में दोस्तों के साथ समय का पता ही न चला और उसपे एक खुशी ये भी की गोआ में उसे अपने बचपन का दोस्त रजत मिला जो पिछले कुछ सालों से अपने मातापिता के साथ अहमदाबाद रहने लगा था और दोस्तों के साथ गोआ घूमने आया था, लौटते समय रजत ने अपना नंबर दिया और पल्लवी का नंबर लिया।

मुम्बई पहुंचते ही पल्लवी ने फोन चालू किया, समीर के सैंकडों मैसेज थे, पल्लवी घबरा गई ये सोचकर कि क्या जवाब देगी वो समीर को? जैसे तैसे हिम्मत करके उसने नम्बर डायल किया ही था कि रजत का मैसेज आ गया, कुछ देर दोनों में बातें होती रही, इस बीच समीर ने व्हाट्सअप पर पल्लवी को आनलाइन देख लिया, कई बार चेक किया हर बार पल्लवी आनलाइन थी। समीर का दिमाग सन्न रह गया, १५ दिन पहले जिसने कभी मोबाइल प्रयोग भी नही किया वो रात ग्यारह बजे किससे बात कर रही होगी, दो दिन से फोन बंद था और आज चालू करके भी बात तक नहीं की। रजत से बात खत्म होते ही पल्लवी ने समीर को काल किया, जमकर झगड़ा हुआ दोनों के बीच, समीर के गुस्से को समझते हुए पल्लवी ने माफी मांगी।

दूसरे दिन कुछ मामला शांत हुआ तब पल्लवी ने गोआ ट्रिप और रजत के बारे विस्तार से उसे बताया, बेमन से समीर सब सुनता रहा। पर उसके बाद ये बात उसके मन में घर कर गई कि पल्लवी बदल गई है, यहां तक कि समीर ने उसकी फेसबुक आईडी तक खोलकर देखी जिसका पासवर्ड उसके पास था ही क्योंकि आईडी उसी ने बनाई थी, फेसबुक में उसके गोआ ट्रिप की एलबम में उसे शार्ट्स पहने देख समीर आपे से बाहर हो गया, क्योंकि पल्लवी ने उसे इस बारे में कुछ भी नहीं बताया था, पूछने पर पल्लवी ने बस इतना ही कहा कई दोस्तों की जिद की वजह से उसने शार्ट्स पहने और समीर को पसंद नहीं है ये सोचकर बताने की हिम्मत नहीं की और प्राइवेसी सेटिंग ओनली मी भी कर दी।

समीर का इस तरह उसकी आईडी चेक करना उसे बुरा तो बहुत लगा पर वो कुछ कह नहीं पाई। अगले दो तीन दिन के झगड़े व्हाट्सअप पर देर रात तक आनलाइन रहने की बात को लेकर हुए क्योंकि पल्लवी बचपन के दोस्त रजत को भी इग्नोर नहीं कर पा रही थी। आखिर में तंग आकर उसने अपना 'लास्ट सीन' आपशन बंद कर दिया। पल्लवी के लास्ट सीन बंद करने के बाद ही समीर ने फोन लगाकर जो कुछ कहा वो शायद पल्लवी सह नहीं पाई, पल्लवी ने समीर के सारे इल्जामों के बाद सिर्फ इतना कहा कि मैंने आज ही अपने बचपन के दोस्त को हमारे रिश्ते के बारे में बताया और आज ही तुमने सब खत्म कर दिया। और यह 'लास्ट सीन' का झगड़ा ही उन दोनों के रिश्ते का अंतिम दर्शन बन गया।

अभी पल्लवी मुम्बई के अस्पताल में मौत से लड़ रही थी और समीर अपराधबोध के साथ अपनी जिंदगी से। और मैं, विचारों की गहरी खाईयों मे गुम। ■

रेल हादसे के घायलों की सेवा में जुटे संघ के स्वयंसेवक

लखनऊ। रायबरेली के बछरांवा रेलवे स्टेशन पर २० मार्च को हुई रेल दुर्घटना के शिकार हुए घायलों की मदद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक आज भी दिनरात जुटे हैं। केजीएमयू के ट्रामा सेन्टर में आज भी रेल हादसे के शिकार २० लोग भर्ती हैं। इन मरीजों को समय पर भोजन व पानी उपलब्ध कराने के साथ ही स्वयंसेवक उनकी जांच कराने से लेकर हर प्रकार की चिंता कर रहे हैं।

गौरतलब है कि २० मार्च को देहरादून से वाराणसी जा रही जनता एक्सप्रेस लखनऊ और रायबरेली के बीच स्थित बछरांवा स्टेशन पर दुर्घटना ग्रस्त हो गयी थी। इस हादसे में ३२ लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी थी और काफी संख्या में लोग घायल हुए थे। घटना की भनक लगते ही रायबरेली के स्वयंसेवकों ने तत्काल मौके पर पहुँचकर राहत व बचाव कार्य में हाथ बंटाया। घायलों को लखनऊ के विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया था और गंभीर रूप से घायलों को ट्रामा सेन्टर में भर्ती किया गया था।

२० मार्च को जिस दिन रेल हादसा हुआ था उस दिन ट्रामा सेन्टर में चीत्कार मची थी। उस समय स्वयंसेवक बिना किसी बुलावे के तत्काल ट्रामा सेन्टर पहुँचकर राहत कार्य में हाथ बंटाया। रेल हादसे में गंभीर घायल लोगों की पहचान कर पाना मुश्किल था ऐसे में स्वयंसेवकों ने जिनके घर से कोई नहीं पहुँचा उनका तीमारदार बनकर पूरी सेवा की। यही नहीं कई गंभीर रूप से घायलों को चढ़ाने के लिए तत्काल रक्त की आवश्यकता थी ऐसे में स्वयंसेवकों ने बीस यूनिट रक्तदान कर गंभीर रूप से घायलों को नई जिंदगी दी। ये स्वयंसेवक ट्रॉमा सेंटर के डिजास्टर, सर्जरी, न्यूरो, ऑर्थोपेडिक और लिंब सेंटर के वार्ड में भर्ती मरीजों की सेवा और देखरेख कर रहे हैं।

लखनऊ के विभाग कार्यवाह प्रशांत भाटिया ने बताया कि अलग-अलग वार्ड में भर्ती मरीजों और उनके तीमारदारों को पैकेटबंद खाना और पानी की बोतलें तीनों टाइम वितरित की जा रही हैं। हादसे के दिन जिन घायलों के परिवारीजन ट्रॉमा नहीं पहुंचे थे, उनकी देखरेख के लिए हर बेड पर एक स्वयंसेवक को तैनात किया गया था। वे पूरे समय मरीज की सेवा में खड़े रहे। टीम में पचास से अधिक स्वयंसेवक शामिल हैं जो पांच से छह घंटे की शिफ्ट में मरीजों की सेवा में लगे रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अलावा वंदे मातरम आरोग्य मंच, पतंजलि, गायत्री परिवार और मालवीय मिशन जैसी संस्थाओं ने भी सहयोग किया। वंदेमातरम आरोग्य मंच के संयोजक राहुल वर्मा ने कहा कि सेवा हमारा धर्म है। ■

कार्टून -- काजल कुमार

युवाओं में इतिहास बोध की जरूरत : हृदय नारायण दीक्षित

लखनऊ। अधीश स्मृति व्याख्यान माला समिति के तत्वावधान में विश्व संवाद केन्द्र जियामऊ में २३ मार्च को शहीद भगत सिंह के बलिदान दिवस पर भगत सिंह और युवा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात स्तम्भकार व लेखक एवं भाजपा विधान परिषद के सदस्य हृदय नारायण दीक्षित थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता लखनऊ जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान के निदेशक अशोक सिन्हा थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वैदिक गणित के राष्ट्रीय संयोजक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (नई दिल्ली) के डा. कैलाश विश्वकर्मा ने की।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि (शेष पृष्ठ २ पर)

जय विजय मासिक

कार्यालय- ४/३, अक्षय निवास, २, सरोजिनी नायडू मार्ग, लखनऊ - २२६००१ (उ प्र)
मो 09919997596, 08004664748, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co.in, www.yuvasughosh.com
प्रबंध सम्पादक- विजय कुमार सिंघल, सम्पादक- बृजनन्दन यादव
सहसम्पादक- अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान), कमल कुमार सिंह

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।